ISBN- 978-93-5912-124-6

# अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान का शैक्षिक योगदान




- डॉ० राजीव अग्रवाल
- राजू सिंह
- उमेश साहू

# अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान का शैक्षिक योगदान

**डॉ० राजीव अग्रवाल**
प्रोफेसर- शिक्षा संकाय
अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

**राजू सिंह**
एम०ए० (भूगोल), एम०एड०

**उमेश साहू**
एम०एस-सी०(रसायन विज्ञान), बी०एड०

# अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान का शैक्षिक योगदान

डॉ० राजीव अग्रवाल
राजू सिंह
उमेश साहू



Ebook संस्करण 2026
मूल्य: ₹49
ISBN: 978-93-5912-124-6

प्रकाशक-
उमेश साहू
आजाद नगर, बम्हरौली, मोठ
जिला -झाँसी 284303
Mob-9125487015
E-mail: umeshsahu844@gmail.com

## प्राक्कथन

प्राचीन भारतीय सभ्यता विश्व की सर्वाधिक रोचक तथा महत्वपूर्ण सभ्यताओं में एक है। इस सभ्यता के ज्ञान के लिए इस की शिक्षा पद्धति का अध्ययन करना आवश्यक है। संसार में ज्ञान की सर्वप्रथम ज्योति भारत में प्रज्ज्वलित हुई थी। प्राचीन काल में यहाँ ऋषियों, आध्यात्मिक गुरुओं, योगियों, धर्माचार्यों, महापुरुषों का अवतरण होता था। प्राचीन भारतीयों ने शिक्षा को अत्यधिक महत्व प्रदान किया। भौतिक तथा आध्यात्मिक उत्थान तथा विभिन्न उत्तरदायित्व के विधिवत निर्वाह के लिए शिक्षा की महती आवश्यकता को सदा स्वीकार किया गया। प्राचीन भारतीयों को यह दृढ़ विश्वास था कि शिक्षा द्वारा प्राप्त एवं विकसित की गई बुद्धि ही मनुष्य की वास्तविक शक्ति होती है। शिक्षा प्राप्ति के लिए शिष्य गुरु के पास जाता था। गुरुकुल में रहकर ही शिक्षा ग्रहण करता था। गुरु-शिष्य सम्बन्ध पुत्रवत होते थे। शिक्षा का स्वरूप आध्यात्मिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, मानवीय एवं जीवन मूल्यों पर आधारित था। भारतीय संस्कृति का संरक्षण एवं संवर्धन करना अति आवश्यक है। शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य जन जागरूकता एवं विश्व बन्धुत्व की भावना को विकसित करना, सशक्त लोक शक्ति का गठन करना, परम्परागत ज्ञान के प्रति आस्था जगाना, व्यवसायिक दक्षता का विकास करना, जीवन के सभी मूल्यों को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाना तथा आगे आने वाली चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करना है।

भारत प्राचीन काल से ही वसुधैव कुटुम्बकम का समर्थक था। हमारी संस्कृति मानवीय एवं जीवन मूल्यों पर आधारित है। 'जीवो पर दया करो', विश्व शान्ति स्थापित करना। यह सब संस्कृति के मूल आधार थे। भारतीय संस्कृति के मूल संस्कारों से विद्यार्थियों ने महामानव होने की प्रतिष्ठा प्राप्त की और अपनी ज्ञान ज्योति से विश्व को आलोकित किया। 'ज्ञान मनुष्य का तीसरा नेत्र है जो उसे समस्त तत्वों के मूल को जानने में सहायता करता है तथा सही कार्यों को करने की विधि बताता है।' शिक्षा प्रणाली ही समाज व राष्ट्र के विकास का एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण साधन माना जाता है। कर्तव्यनिष्ठ तथा अधिकार सजग नागरिक ही अपने समाज तथा राष्ट्र को प्रगति के पथ पर ले जा सकते हैं। निःसंदेह शिक्षा राष्ट्र निर्माण के महायज्ञ में सर्वाधिक सार्थक योगदान कर सकती है।

प्रस्तुत पुस्तक का 'शीर्षक अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान का शैक्षिक योगदान है।' प्रस्तुत पुस्तक को छः अध्यायों में विभाजित किया गया है-

**प्रथम अध्याय** इस अध्याय में अध्ययन की पृष्ठभूमि, शिक्षा विकास की प्रक्रिया, भारत में शिक्षा का विकास (वैदिक कालीन, बौद्ध कालीन, मध्यकालीन, ब्रिटिश कालीन, आधुनिक कालीन) वर्तमान भारतीय शिक्षा की समस्याए (गुणात्मक शिक्षा का अभाव, व्यवसायिक शिक्षा का अभाव, शिक्षा में सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों का ह्रास) नैतिक शिक्षा के सम्बन्ध में विभिन्न शिक्षा आयोगों के सुझाव (माध्यमिक शिक्षा आयोग, राष्ट्रीय शिक्षा आयोग, नई शिक्षा नीति) समाज और शिक्षा, विभिन्न समाज सुधारकों का अभ्युदय, विभिन्न समाज सेवा संस्थानों का प्रादुर्भाव, समस्या कथन (अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान का शैक्षिक योगदान) अध्ययन समस्या का औचित्य, समस्या में नहीं शब्दों की व्याख्या, योगदान, अध्ययन के उद्देश्य, अध्ययन का सीमांकन, शोध विधि, अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता पर प्रकाश डाला गया है।

**द्वितीय अध्याय** के अन्तर्गत सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया गया है। शोध समस्या से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन का निष्कर्ष उल्लेखित है एवं समीक्षात्मक निष्कर्ष सम्मिलित है।

**तृतीय अध्याय** के अन्तर्गत संस्थापक जीवन परिचय, शैक्षिक जीवन, व्यवहारिक जीवन, सामाजिक जीवन, उपाधियों का उल्लेख है।

**चतुर्थ अध्याय** में संस्थान का परिचयात्मक विवरण दिया गया है। स्थापना, उद्देश्य, शैक्षिक उद्देश्य, अन्य उद्देश्य, कार्यक्षेत्र, उपलब्धियाँ दर्शन, लक्ष्य आदि।

**पंचम अध्याय** में अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के शैक्षिक योगदानों का विस्तृत अध्ययन किया गया है। बाल अभ्युदय केन्द्र, आवासीय शिक्षा, अन्य शैक्षिक कार्यक्रम लोक संस्कृति, जीवन विद्या शिविर, वनवासी शिक्षा आदि को सम्मिलित किया गया है।

**षष्ट अध्याय** इसमें सम्पूर्ण शोध के निष्कर्ष, सुझाव, शैक्षिक उपादेयता, अध्ययन के सुझाव, भाभी शोध हेतु सुझाव को उल्लेखित किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक लघु शोध-प्रबन्ध पर आधारित है। प्रत्येक शोध कार्य उद्देश्यपरक होता है और यह उद्देश्य तभी सार्थक हो सकता है जब शोध कार्य के परिणामों का उचित क्रियान्वयन किया जाए। इस कार्य के लिए शोध कार्य को जनमानस के लिए सुलभ बनाने की नितांत आवश्यकता होती है। एक पुस्तक के रूप में शोध कार्य को प्रकाशित करने से यह कार्य सुगमता से पूर्ण किया जा सकता है। प्रस्तुत पुस्तक इसी दिशा में किया गया एक प्रयास है। यह पुस्तक निश्चित ही अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान शैक्षिक योगदान के प्रति सही दृष्टिकोण विकसित करने में सहायक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के सृजन में संदर्भ ग्रंथ सूची में उल्लिखित विभिन्न पुस्तकों का सहयोग लिया गया है, हम सभी के प्रति कृतज्ञता प्रकट करते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में अनेक त्रुटियाँ होना स्वाभाविक है। अतः अनुभवी विद्वतगण त्रुटियों से अवगत कराने का कष्ट करें, जिससे अगले संस्करण में सुधार को दूर किया जा सके, हम अत्यंत आभारी रहेंगे।

डॉ० राजीव अग्रवाल
राजू सिंह
उमेश साहू

# अनुक्रमणिका

# चित्र सूची

# प्रथम अध्याय

# अध्ययन परिचय

1.1 प्रस्तावना

1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

1.3 समस्या कथन

1.4 समस्या में प्रयुक्त शब्दों की व्याख्या

1.5 अध्ययन का औचित्य

1.6 अध्ययन के उद्देश्य

1.7 अध्ययन का परिसीमांकन

1.8 अध्ययन विधि

1.9 शोध उपकरण

1.10 अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

# प्रथम अध्यय : अध्ययन परिचय

## 1.1 प्रस्तावना

जीवन एक पाठशाला है। जिसमें अनुभवों के आधार पर हम शिक्षा पाते हैं। शिक्षा का हमारे जीवन में महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा हमारी समृद्धि में आभूषण, विपत्ति में शरण स्थान और समस्त कालों में अनन्त स्थान होती है। जीवन लक्ष्य की पूर्ती के लिए शिक्षा आवश्यक है। महान दार्शनिक एवं शिक्षाविद् डॉ.राधाकृष्णन भी मनुष्य को सही अर्थों में मनुष्य बनाने के लिए शिक्षा को सर्वाधिक आवश्यक मानते थे। उनके अनुसार- "शिक्षा वह है, जो मनुष्य को ज्ञान प्रदान करने के साथ-साथ उसके हृदय एवं आत्मा का विकास करती है। शिक्षा व्यक्ति को स्वयं के विकास के साथ-साथ समाज और राष्ट्र के विकास के लिए भी प्रेरित करती है। "महामहीम सर्वपल्ली राधाकृष्णन के विचार से शिक्षा का माध्यम मातृभाषा में होना चाहिए क्योंकि विदेशी भाषा में भारतीय मौलिक चिंतन नही कर सकते।

शिक्षा के महत्व को परिलाक्षित करते हुए स्वामी विवेकानन्द जी कहते हैं कि, "जिस शिक्षा से हम अपना जीवन निर्माण कर सकें, मनुष्य बन सकें, चरित्र गठन कर सकें और विचारों का सामंजस्य कर सकें यथार्थ में यही वास्तविक शिक्षा होगी। "स्वामी जी भारत में ऐसी शिक्षा चाहते थे, जिसमें उसके अपने आदर्शवाद के साथ पाश्चात्य कुशलता का सामंजस्य हो। उनका कहना था कि लोगों को आत्मनिर्भर बनना अति आवश्यक है वरना सारे संसार की दौलत से भी भारत के एक गाँव की सहायता नही की जा सकती। अतः नैतिक तथा बौद्धिक, दोनों ही प्रकार की शिक्षा प्रदान करना देश व समाज का पहला कार्य होना चाहिए।

भारत एक ऐसा देश है जो धर्म एवं अध्यात्म के क्षेत्र में विश्व का मार्गदर्शन करता रहा है। हमारी प्राचीन सभ्यता एवं संस्कृत तथा आदर्शों एवं परम्पराओं का ही प्रभाव था कि सम्बन्ध विश्व में हमारी सभ्यता एवं संस्कृत का प्रसार हुआ। यहाँ यह स्वभाविक है कि ऐसी उत्कृष्ट संस्कृति व्यवस्था स्थापित करना और आदर्शों एवं परम्पराओं को निर्धारित करना कैसे सम्भव हो सका तो इस प्रश्न का उत्तर है- अद्वितीय शिक्षा व्यवस्था पाए उत्कृष्ट शिक्षा व्यवस्था के द्वारा भावी पीढ़ी का उच्च आदर्शों, आकांक्षाओ, विश्वासों तथा परम्पराओं और सांस्कृतिक सम्पति को इस प्रकार हस्तान्तरित करता है कि व्यक्ति के हृदय में सद्भव तथा त्याग की भावना प्रज्ज्वलित हो जाती है। शिक्षा सदैव गतिशील रहकर बालक को देश, काल और परिस्थिति के अनुसार प्रगति की ओर अग्रसर करती है। समाज में निरन्तर परिवर्तन के कारण शिक्षा के प्रारूप में भी परिवर्तन आता है तथा शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम एवं शिक्षण विधियों में भी निरन्तर परिवर्तन होता रहता है।

जॉन एडम्स ने इस सम्बन्ध में कहा है- "शिक्षा एक द्विमुखी प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति को प्रभावित करता है जिससे कि उसके व्यवहार में परिवर्तन हो सके।"

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है। शिक्षा वह प्रकाश है इसके द्वारा मनुष्य की समस्त जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान एवं कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में पलजाता है और उसे सभ्य एवं सुसंस्कृत बनाया जाता है।

ये कहना अतिकश्योक्ति न होगी कि, आज जिस तरह का वातावरण चारो तरफ व्याप्त है ऐसे में ऐसी शिक्षा ही आवश्यक है जिससे बच्चों का चरित्र-निर्माण हो सके, उनकी मानसिक शक्ति बढ़े, बुद्धि विकसित हो और देश के युवक अपने पैरों पर खड़ा होना सीखें। भौतिकवादी स्वार्थपरक सोच के फैलते प्रभाव को कम करने के लिए आवश्यक है कि स्कूली शिक्षा के साथ-साथ नैतिक शिक्षा की भी नींव मजबूत की जाए।

आज समाज में मानवीय व नैतिक गुणों का लोप होते देख अनेक समाज सुधारक, विद्वान शिक्षाविदों ने इस ओर अपने विचार रखें। जिसका परिणाम है कि आज विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से धर्म एवं नैतिकता की शिक्षा प्रदान की जा रही है।

### 1.1.1 शिक्षा: विकास की प्रकिया

नवजात शिशु असहाय तथा असामाजिक होता है। वह न बोलना जनता है न चलना-फिरना। उसका न कोई मित्र होता है और न शत्रु। यही नहीं, उसे समाज के रीती-रिवाजों तथा परम्पराओं का ज्ञान भी नहीं होता है और न ही उसमें किसी आदर्श तथा मूल्य को प्राप्त करने की जिज्ञासा पाई जाती है, परन्तु जैसे-जैसे वह बड़ा होता जाता है वैसे-वैसे उस पर शिक्षा के औपचारिक तथा अनौपचारिक साधनों का प्रभाव पड़ता जाता है। इस प्रभाव के कारण उसका जहाँ एक ओर शारीरिक, मानसिक तथा संवेगात्मक विकास होता जाता है वहाँ दूसरी ओर उसमें सामाजिक भावना भी विकसित होती जाती है। इस प्रकार हम देखते हैं कि बालक के व्यवहार में वांछनीय परिवर्तन करने के लिए व्यवस्थित शिक्षा की परम आवश्यकता है। सच तो यह है कि शिक्षा से इतने लाभ हैं कि उनका वर्णन करना कठिन है। इस सन्दर्भ में यहाँ केवल इतना कह देना ही पर्याप्त होगा की शिक्षा माता के सामान पालन-पोषण करती है, पिता के समान उचित मार्ग-दर्शन द्वारा अपने कार्यों में लगाती है तथा पत्नी की भांति सांसारिक चिन्ताओं को दूर करके प्रसन्नता प्रदान करती है। शिक्षा के ही द्वारा हमारी कीर्ति का प्रकाश चारों ओर फैलता है तथा शिक्षा ही हमारी समस्याओं को सुलझाती है एवं हमारे जीवन को सुसंस्कृत करती है। सच तो यह है कि शिक्षा से इतने लाभ हैं कि उनका वर्णन करना कठिन है। दूसरे शब्दों में, शिक्षा वह प्रकाश है जिसके द्वारा बालक की समस्त शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा अध्यात्मिक शक्तियों का विकास होता है। इससे वह समाज का एक उतरदायी घटक एवं राष्ट्र का प्रखर चरित्र-संपन्न नागरिक बनकर समाज की सर्वांगीण उन्नति में अपनी शक्ति का उतरोतर प्रयोग करने की भावना से ओत-प्रोत होकर संस्कृति तथा सभ्यता को पुनर्जीवित एवं पुर्नस्थापित करने के लिए प्रेरित हो जाता है।

जिस प्रकार एक ओर शिक्षा बालक का सर्वांगीण विकास करके उसे तेजस्वी, बुद्धिमान, चरित्रवान, विद्वान, तथा वीर बनती है, उसी प्रकार दूसरी ओर शिक्षा समाज की उन्नति के लिए भी एक आवश्यक तथा शक्तिशाली साधन है। दुसरे शब्दों में, व्यक्ति की भांति समाज भी शिक्षा के चमत्कार से लाभान्वित होता है। शिक्षा के द्वारा समाज भावी पीढ़ी के बालकों को उच्च आदर्शों, आशाओं, आकांक्षाओं, विश्वासों तथा परमपराओं आदि सांस्कृतिक सम्पत्ति को इस प्रकार से हस्तांतरित करता है कि उनके हृदय में देश-प्रेम तथा

त्याग की भावना प्रज्वलित हो जाती है। जब ऐसी भावनाओं तथा आदर्शों से भरे हुए बालक तैयार होकर समाज अथवा देश की सेवा का व्रत धारण करके मैदान में निकलेंगे तथा गे पखर पर चढ़ता ही रहेगा। इस प्रकार व्यक्ति तथा समाज दोनों ही के विकास में आवश्यक है ।

## 1.1.2 भारत में शिक्षा का विकास

भारत में शिक्षा के प्रति रुझान प्राचीन काल से ही देखने को मिलता है। प्राचीन काल में गुरुकुलों, आश्रमों तथा बौद्ध मठों में शिक्षा ग्रहण करने की व्यवस्था होती थी। तत्कालीन शिक्षा केन्द्रों में नालन्दा, तक्षशिला एवं वललभी की गणना की जाती है। मध्यकालीन भारत में शिक्षा मदरसों में प्रदान की जाती थी। मुगल शासकों ने दिल्ली, अजमेर, लखनऊ एवं आगरा में मदरसों का निर्माण करवाया। भारत में आधुनिक व पाश्चात्य शिक्षा की शुरुआत ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी के शासन काल से हुई।

### 1.1.2.1 प्राचीनकाल में शिक्षा

- **ऋग्वैदिककालीन शिक्षा-** ऋग्वैदिक काल में नैतिक आदर्शों पर अत्यन्त बल दिया गया है। चरित्र की शुद्धता के लिए ऋग्वेद काल में विशेष ध्यान दिया जाता था। असत्य एवं पापाचार को घूणित समझा जाता था। शिक्षा का उद्देश्य सभ्यता और संस्कृति का हस्तान्तरण भी था। ब्राह्मण, अर्थात गुरू विद्यार्थियों को मौखिक शिक्षा देते थे। वैदिक मन्त्रों का पाठ ही ज्ञानार्जन का माध्यम था। इससे विद्यार्थी आत्मशिक्षण भी प्राप्त करते थे। इस युग की शिक्षा का मूल उद्देश्य ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति करके मोक्ष प्राप्त करना था। अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष चतुवर्ग की प्राप्ति मुख्य ध्येय था। स्वाध्याय एवं मनन की इस शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी बहुधा उपनयन संस्कार के बाद गुरु के आश्रम में ही रहने जाते थे। उनका आपसी सम्बन्ध पिता-पुत्र-सा होता था। गुरु ज्ञान-विज्ञान के पारम्परागत मर्मज्ञ विद्वान् थे। वे समाज के पथप्रदर्शक थे।
- **उत्तर वैदिककालीन शिक्षा-** इस काल में विद्यार्थियों के नियमित पठन-पाठन के लिए पाठशालाओं की व्यवस्था थी। उपनयन संस्कार के पश्चात् आचार्य विद्यार्थी को ब्रह्मचर्य आश्रम में प्रवेश देते थे। इस प्रकार वह द्विज बन जाता था। आश्रम में प्रवेश के बाद विद्यार्थी को मेखला बांधनी होती थी। बड़े-बड़े बाल रखने पड़ते थे। वह यज्ञ के लिए समिधा बटोरता, भिक्षाटन भी किया करता था। ब्रह्मचारी विद्यार्थी को श्रम व तप करके विद्योपार्जन करना होता था। गुरु विद्यार्थी को हर प्रकार से सत्पथ पर लाने का प्रयास करता था, क्योंकि शिष्यों के पापों के लिए गुरु ही उत्तरदायी होता था। शिष्य गुरु को भगवान मानकर उनकी सेवा-सुश्रुषा करता हुआ आज्ञा पालन करता था। इस युग की शिक्षा का उद्देश्य श्रद्धा, मेधा, ज्ञान, धन, आयु तथा अमरत्व की प्राप्ति था। सपनो में देवविद्या, ब्रह्मविद्या, भूतविद्या, नक्षत्रविद्या, तर्कविद्या तथा सच बोलने को विशेष महत्त्व दिया गया था।

➢ **बौद्धकालीन शिक्षा-** मठों, विहारों में दी जाने वाली बौद्धकालीन शिक्षा का उद्देश्य चारित्रिक गुणों का विकास, ज्योतिष, तर्क, दर्शन था। बौद्धकाल में तक्षशिला, नालन्दा, विक्रमशिला, ओदन्तपुरी के विश्वविद्यालय विश्वप्रसिद्ध थे। यहाँ 8 विषय पढ़ाये जाते थे। धर्म, दर्शन, न्याय, तर्क, ज्योतिष आदि की शिक्षा कुशल अध्यापक देता था। विद्यार्थी भौतिक उलझनों से दूर शान्त एवं प्राकृतिक वातावरण में शिक्षा प्राप्त करते थे। इन ख्याति प्राप्त विश्वविद्यालयों में दूर देशों-चीन, जापान आदि के भी विद्यार्थी अध्ययन हेतु आते थे।

## 1.1.2.2 मध्यकाल में शिक्षा

भारत में तुर्की सत्ता की स्थापना के उपरान्त मुसलमानों ने शिक्षा के प्रसार हेतु अनेक प्रकार की संस्थाओं जैसे कि मकतब, मदरसे, खानकाहों की स्थापना की। मुसलमान परिवारों में शिशु की शिक्षा विस्मिल्लाहखानी या मकतव संस्कार से प्रारम्भ होती थी। शिशु की आयु जब 4 वर्ष 4 माह 4 दिन की हो जाती थी तो उसके माता-पिता बड़े धूमधाम से विस्मिल्लाहखानी या अक्षर बोध का संस्कार मौलवी या काजी द्वारा सम्पन्न करवाते थे। इस अवसर पर शिशु से वर्णमाला का प्रथम अक्षर 'अलिफ', तख्ती पर लिखवाया जाता था। उसके बाद सम्पन्न परिवारों में शिशु को प्रारम्भिक शिक्षा देने के लिए शिक्षक नियुक्त किये जाते थे। इन शिशुओं का ज्ञान वर्णमाला, कुरान के पाठ, सुलेख व्याकरण आदि विषयों तक ही सीमित रहता था। इसके पश्चात् कुछ बड़े होने पर उन्हें साहित्य इतिहास तथा नीतिशास्त्र इत्यादि विषयों का अध्ययन करना पड़ता था। वे पदनामा, आमदनामा, मुलिस्ताँ, बोस्ताँ, हार-ए-दानिश तथा सिकन्दरनामा का अध्ययन करते थे। जो विद्यार्थी इसके उपरान्त शिक्षा नहीं ग्रहण करते थे उन्हें मुंशी तथा जो उच्च शिक्षा ग्रहण करते थे उन्हें मौलाना, मौलवी या फाजिल की पदवियाँ दी जाती थी। जो विद्यार्थी केवल अरबी की शिक्षा प्राप्त करते थे उन्हें कुरान के अतिरिक्त मुहम्मद साहब की जीवनी से सम्बन्धित ग्रन्थ, कुरान की टीकाएँ तसउफ्फ, दर्शन तथा अन्य विषयों का अध्ययन करना पड़ता था।

इस काल में शिक्षा प्रणाली में शिक्षा संस्थाओं का महत्वपूर्ण स्थान था। सम्पन्न परिवारों के घरों में बैठक में परिवार व आसपास के शिशु प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के लिए आते थे। इस बैठक को मकतब कहते थे। इस मकतब के शिक्षक के भरण-पोषण का उत्तरदायित्व उस परिवार पर ही रहता था। जिन परिवारों के बच्चे वहाँ शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे, वे भी उसकी आर्थिक सहायता करते थे।

शिक्षा काला केन्द्र मदरसा था। राज्य द्वारा स्थापित मदरसों को राज्य की ओर से वित्तीय सहायता मिलती थी। ताजुल मआसिर के रचयिता हसन निजामी के यु र मुहम्मद गौरी ने अजमेर में अनेक मदरसों की स्थापना की। भारत में यह मदरसे अपने ही ढंग के थे। लखनौती में मुहम्मद बिन बख्ियार खिलजी ने अनेक मदरसों की स्थापना की। इल्तुतमिश ने मुहम्मद गौरी के नाम पर दिल्ली में मुइज्जी मदरसे की स्थापना की। इसी नाम का एक मदरसा बदायूँ में स्थापित हुआ। रजिया ने नासिरिया मदरसे की स्थापना दिल्ली में की व

मिनहाज को उसका आचार्य नियुक्त। कड़ा के कवि मुतहर ने अपनी दीवान में लिखा है कि फिरोज शाह ने अनेक मदरसों की स्थापना की। उसने स्वयं दिल्ली के हौज-ए-खास के पास फिरोजशाही मदरसा देखकर उसका वर्णन किया। जलाउद्दीन रूमी इस मदरसे के प्राचार्य थे। वे कुरान को 7 नियमों से पढ़ सकते थे तथा 4 विधाएँ जानते थे। हदीस के पाँच प्रसिद्ध संग्रहों का उन्हें ज्ञान था। यहाँ के विद्यार्थियों को तफ्सीर, फिकह व हदीस पढ़ाया करते थे। सिकन्दर लोदी ने मथुरा व नरवर में मदरसों की स्थापना की। इसी काल में उसने सम्भल में मदरसा स्थापित किया तथा वहाँ शेख अब्दुल्लाह को प्राचार्य नियुक्त किया। इसी प्रकार देश के विभिन्न भागों में मुसलमान अमीरों व शासकों ने अनेक मदरसों की स्थापना की। शिक्षा का तृतीय महत्वपूर्ण केन्द्र सूफी सन्तों की खनकाह थी। अजमेर में शेख मुइउद्दीन चिश्ती की, खनकाह दिल्ली में शेख निजामुद्दीन औलिया की खनकाह सीदी मौला की खनकाह, शिक्षा के सुप्रसिद्ध केन्द्र थे।

### 1.1.2.3 आधुनिक काल में शिक्षा

भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली ब्रिटिश प्रतिरूप पर आधारित है जिसे सन् 1835 ई० में लागू किया गया। जिस तीव्र गति से भारत के सामाजिक, राजनैतिक व आर्थिक परिदृश्य में बदलाव आ रहा है उसे देखते हुए यह आवश्यक है कि हम देश की शिक्षा प्रणाली की पृष्ठभूमि, उद्देश्य, चुनौतियों तथा संकट पर गहन अवलोकन करे। सन् 1835 ई० में जब वर्तमान शिक्षा प्रणाली की नींव रखी गई थी तब लार्ड मैकाले ने स्पष्ट शब्दों में कहा था कि अंग्रेजी शिक्षा का उद्देश्य भारत में प्रशासन के लिए बिचौलियों की भूमिका निभाने तथा सरकारी कार्य के लिए भारत के विशिष्ट लोगों को तैयार करना है। इसके फलस्वरूप एक सदी तक अंग्रेजी शिक्षा के प्रयोग में लाने के बाद भी 1935 ई० में भारत की साक्षरता दस प्रतिशत के आँकड़े को भी पार नहीं कर पाई। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय भारत की साक्षरता मात्र 13 प्रतिशत ही थी। इस शिक्षा प्रणाली ने उच्च वर्गों को भारत के शेष समाज में पृथक रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

ब्रिटिश समाज में बीसवीं सदी तक यह मानना था कि श्रमिक वर्ग के बच्चों को शिक्षित करने का तात्पर्य है उन्हें जीवन में अपने कार्य के लिए अयोग्य बना देना। ब्रिटिश शिक्षा प्रणाली ने निर्धन परिवारों के बच्चों के लिए भी इसी नीति का अनुपालन किया। लगभग पिछले दो सौ वर्षों की भारतीय शिक्षा प्रणाली के विश्लेषण से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि यह शिक्षा नगर तथा उच्च वर्ग केन्द्रित, श्रम तथा बौद्धिक कार्यों से रहित थी। इसकी गाइयों। को सर्वप्रथम गाँधी जी ने 1917 ई० में गुजरात एजुकेशन सोसायटी के सम्मेलन में उजागर तथा शिक्षा में मातृभाषा के स्थान और हिन्दी के पक्ष को राष्ट्रीय स्तर पर तार्किक ढंग से रखा। स्वतंत्रता संग्राम के दिनों में शान्ति निकेतन, काशी विद्यपीठ आदि विद्यालयों में शिक्षा के प्रयोग को प्राथमिकता दी गई।

### 1.1.2.3.1 ब्रिटिश शासन काल की शिक्षा

लगभग 200 वर्ष तक भारत पर अंग्रेजों का शासन रहा। अंग्रेज अपने साथ एक नया धर्म, भाषा तथा संस्कृति लाए। अपने धर्म का प्रचार करने तथा अपने शासन व्यवस्था को चलाने व उसे सुदृढ़ करने के लिए, उन्होंने शिक्षा का सहारा लिया। भारत में पाश्चात्य प्रकार की शिक्षा का आरम्भ मिशनरियों ने किया था। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने शिक्षा प्रसार के कार्य में उन्हें सहयोग दिया। सन 1813 की आज्ञा पत्र के साथ भारतीय शिक्षा के क्षेत्र में ब्रिटिश युग का आरम्भ माना जाता है जो सन 1947 में स्वतंत्रता प्राप्ति पर ब्रिटिश शासन की समाप्ति तक चला। निःसंदेह ब्रिटिश काल में भारत में आधुनिक शिक्षा प्रणाली का श्रीगणेश हुआ। यूरोपीयन साहित्य तथा विज्ञान के सम्पर्क में भारतवासी इसी काल में आये। आधुनिक प्रकार के विश्वविद्यालयों की स्थापना तथा बेसिक शिक्षा की संकल्पना इसी काल की महत्वपूर्ण दिन है।

### 1.1.2.3.2 स्वतन्त्र भारत की शिक्षा

स्वतंत्रता के बाद हमारी साक्षरता दर तथा शिक्षा संस्थाओं की संख्या में निःसंदेह वृद्धि हुई है परन्तु अब भी 40 प्रतिशत से अधिक जनसंख्या निरक्षर है। दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि स्वतंत्रता के बाद विश्वविद्यालयों में उच्च शिक्षा व प्राविधिक शिक्षा का स्तर तो बढ़ा है परन्तु प्राथमिक शिक्षा का आधार दुर्बल होता चला गया। शिक्षा का लक्ष्य राष्ट्रीयता, चरित्र निर्माण व मानव संसाधन विकास के स्थान पर मशीनीकरण रहा जिससे चिकित्सकीय तथा उच्च संस्थानों से उत्तीर्ण छात्रों में लगभग 40 प्रतिशत से भी अधिक छात्रों का देश से बाहर पलायन जारी रहा। देश में प्रौढ़ शिक्षा और साक्षरता के नाम पर लूट-खसोट, प्राथमिक शिक्षा का दुर्बल आधार, उच्च शिक्षण संस्थानों का अपनी सशक्त भूमिका से अलग हटना तथा अध्यापकों का पेशेवर दृष्टिकोण वर्तमान शिक्षा प्रणाली के लिए एक नया संकट उत्पन्न कर रहा है। पूँजीवादी अर्थव्यवस्था के नए चेहरे, निजीकरण तथा उदारीकरण की विचारधारा से शिक्षा को भी 'उत्पाद' की दृष्टि से देखा जाने लगा है जिसे बाजार में खरीदा-बेचा जाता है। इसके अतिरिक्त उदारीकरण के नाम पर राज्य भी अपने दायित्वों से विमुख हो रहे हैं।

इस प्रकार सामाजिक संरचना से वर्तमान शिक्षा प्रणाली के सम्बन्ध, पाठ्यक्रमों का गहन विश्लेषण तथा इसकी मूलभूत दुर्बलताओं का गम्भीर रूप से विश्लेषण की चेष्टा न होने के कारण भारत की वर्तमान शिक्षा प्रणाली आज भी संकटों के चक्रव्यूह में घिरी हुई है। प्रत्येक दस वर्षों में पाठ्य-पुस्तकें बदल दी जाती हैं लेकिन शिक्षा का मूलभूत स्वरूप परिवर्तित कर इसे रोजगारन्मुखी बनाने की आवश्यकता है। हमारी वर्तमान शिक्षा प्रणाली गैर-तकनीकी छात्र-छात्राओं की एक ऐसी फौज तैयार कर रही है जो अंततोगत्वा अपने परिवार व समाज पर बोझ बन कर रह जाती है। अतः शिक्षा को राष्ट्र निर्माण व चरित्र निर्माण से जोड़ने की नितांत आवश्यकता है।

### 1.1.3 वर्तमान भारतीय शिक्षा की समस्याए

स्वतंत्रता प्राप्त करते समय भारत के सामने अनेक समस्याए थी। इन समस्याओं में से एक शिक्षा प्रणाली के पुनर्गठन करने तथा शिक्षा के अवसरों का विस्तार करने की समस्या भी थी। सभी बालकों को निःशुल्क तथा अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने, अनपढ़ प्रौढ़ों को साक्षर बनाने, माध्यमिक शिक्षा में गुणात्मक सुधार करने, विज्ञान तकनीकी शिक्षा का तेजी से विस्तार करने, लड़कियों परिजनों व अल्पसंख्यकों के शैक्षिक विकास को सुनिश्चित करने तथा मातृभाषा, प्रादेशिक भाषा व राष्ट्रभाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने जैसी अनेक चुनौतियाँ स्वतंत्र भारत के कर्णधारों के सम्मुख थी।

#### 1.1.3.1 गुणात्मक शिक्षा का अभाव

शिक्षा एक अन्त तक चलने वाली प्रक्रिया है। मनुष्य जन्म से मृत्यु पर्यंत इस प्रक्रिया से गुजरता हुआ कुछ न कुछ सीखता ही रहता है। अगर हम शिक्षा की आज तक की गई तमाम परिभाषाओं को एक साथ रख दे और फिर कोई शिक्षा का अर्थ ढूंढे तो भी हमें कोई ऐसा अर्थ नहीं मिलेगा जो अपने आप में पूर्ण हो। वर्तमान में शिक्षा का अर्थ केवल स्कूली शिक्षा से लिया गय है अपितु शिक्षा हर प्रकार की हो सकती है जैसे तकनीकी शिक्षा, व्यवसाइक शिक्षा इत्यादि।

शिक्षा के गिरते स्तर के कारण उसकी गुणवत्ता पर प्रश्न खड़ा होना जरुरी है लेकिन इस बात के जिम्मेदार कौन लोग है। इस ओर न तो राजनीतिक मंथन हो रहा ना ही सामाजिक चिन्तन किया जा रहा है। बातें शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने की अक्सर सुनने में आती है किन्तु सुधार कहीं नजर नहीं आता। वह तो हमारी शिक्षा नीति में बहुत सुधर की आवश्यकता है।

#### 1.1.3.2 व्यवसायिक शिक्षा का अभाव

भारतीय शिक्षा प्रणाली युवाओं की संक्रमण मांग और आकांक्षाओं को जारी रखने में सक्षम नहीं है। विश्वविद्यालय की डिग्री कमाने की कोई गारन्टी नहीं है कि एक छात्र को नौकरी मिल जाएगी, ओर वह अपनी पसन्द का काम कर सकते हैं। हमारे युवा, वित्तीय और अन्य परिस्थितियों के कारण स्कूल छोड़ते हैं। वे मासिक नौकरियाँ कर रहे हैं, जहा उन्हें थोड़ा भुगतान किया जाता है और अक्सर बेईमान नियोक्ताओं द्वारा इसका शोषण किया जाता है।

#### 1.1.3.3 शिक्षा में सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों का ह्रास

नैतिक शिक्षा ही मानव को 'मानव'बनाती है क्योंकि नैतिक गुणों के बल पर ही मनुष्य वन्दनीय बनता है। सारी दुनिया में नैतिकता अर्थात सच्चरित्रता के बल पर ही धन-दौलत, सुख और वैभव की नींव खड़ी है। प्रसंग बताता है कि "इन्द्र ने ब्राह्मण का रूप धारण करके प्रह्लाद के पास जाकर पूछा- "आपको तीन

### 1.1.3 वर्तमान भारतीय शिक्षा की समस्याए

स्वतंत्रता प्राप्त करते समय भारत के सामने अनेक समस्याए थी। इन समस्याओं में से एक शिक्षा प्रणाली के पुनर्गठन करने तथा शिक्षा के अवसरों का विस्तार करने की समस्या भी थी। सभी बालकों को निःशुल्क तथा अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा उपलब्ध कराने, अनपढ़ प्रौढ़ों को साक्षर बनाने, माध्यमिक शिक्षा में गुणात्मक सुधार करने, विज्ञान तकनीकी शिक्षा का तेजी से विस्तार करने, लड़कियों परिजनों व अल्पसंख्यकों के शैक्षिक विकास को सुनिश्चित करने तथा मातृभाषा, प्रादेशिक भाषा व राष्ट्रभाषा के माध्यम से शिक्षा प्रदान करने जैसी अनेक चुनौतियाँ स्वतंत्र भारत के कर्णधारों के सम्मुख थी।

#### 1.1.3.1 गुणात्मक शिक्षा का अभाव

शिक्षा एक अन्त तक चलने वाली प्रक्रिया है। मनुष्य जन्म से मृत्यु पर्यत इस प्रक्रिया से गुजरता हुआ कुछ न कुछ सीखता ही रहता है। अगर हम शिक्षा की आज तक की गई तमाम परिभाषाओं को एक साथ रख दे और फिर कोई शिक्षा का अर्थ ढूंढे तो भी हमें कोई ऐसा अर्थ नहीं मिलेगा जो अपने आप में पूर्ण हो। वर्तमान में शिक्षा का अर्थ केवल स्कूली शिक्षा से लिया गय है अपितु शिक्षा हर प्रकार की हो सकती है जैसे तकनीकी शिक्षा, व्यवसाइक शिक्षा इत्यादि।

शिक्षा के गिरते स्तर के कारण उसकी गुणवत्ता पर प्रश्न खड़ा होना जरुरी है, लेकिन इस बात के जिम्मेदार कौन लोग है। इस ओर न तो राजनीतिक मंथन हो रहा ना ही सामाजिक चिन्तन किया जा रहा है। बातें शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने की अक्सर सुनने में आती है किन्तु सुधार कहीं नजर नहीं आता। वह तो हमारी शिक्षा नीति में बहुत सुधर की आवश्यकता है।

#### 1.1.3.2 व्यवसायिक शिक्षा का अभाव

भारतीय शिक्षा प्रणाली युवाओं की संक्रमण मांग और आकांक्षाओं को जारी रखने में सक्षम नहीं है। विश्वविद्यालय की डिग्री कमाने की कोई गारन्टी नहीं है कि एक छात्र को नौकरी मिल जाएगी, ओर वह अपनी पसन्द का काम कर सकते हैं। हमारे युवा, वित्तीय और अन्य परिस्थितियों के कारण स्कूल छोड़ते हैं। वे मासिक नौकरियाँ कर रहे हैं, जहा उन्हें थोड़ा भुगतान किया जाता है और अक्सर बेईमान नियोक्ताओं द्वारा इसका शोषण किया जाता है।

#### 1.1.3.3 शिक्षा में सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों का ह्रास

नैतिक शिक्षा ही मानव को 'मानव'बनाती है क्योंकि नैतिक गुणों के बल पर ही मनुष्य वन्दनीय बनता है। सारी दुनिया में नैतिकता अर्थात सच्चरित्रता के बल पर ही धन-दौलत, सुख और वैभव की नींव खड़ी है। प्रसंग बताता है कि "इन्द्र ने ब्राह्मण का रूप धारण करके प्रह्लाद के पास जाकर पूछा- "आपको तीन

लोकों का राज्य कैसे मिला ?" प्रह्लमाद ने इसका कारण नैतिकता(शील) को बताया। इन्द्र ने प्रह्माद से वरदान में नैतिकता अर्थात् शील को मांग लिया। शील के जाते ही धर्म, सत्य, सदाचार, बल, लक्ष्मी सभी चले गये।"

भारत की नैतिकता के अंग हैं- सच बोलना, चोरी न करना, अहिंसा, दूसरों के प्रति उदारता, शिष्टता, विनम्रता, सुशीलता आदि। परन्तु आज ये शिक्षा ना तो बालक के माता-पिता, जिन्हें बालक की प्रथम पाठशाला कहा जाता है, ना ही विद्यालय दे पा रहा है। नैतिक शिक्षा के अभाव के कारण ही आज जगत में अनुशासनहीनता का बोल-बाला है। आज का छात्र कहाँ जानता है, बड़ों का आदर-सत्कार, छोटों से शिष्ठता-प्यार, स्त्री जाति की सुरक्षा सम्मान सत्कार। रही-सही कसर पूरी कर देता है हमारा फिल्मजगत और टेलिविजन प्रसारण। जो अश्लीलता की हर हदें पार कर चुका है और उसका मूल्य चुकाना पड़ता है समाज को, क्योंकि मनुष्य का स्वभाव है अनुकरण करना। वह अनुकरण से ही सीखता है। आज नायिकाओं में नग्नता परोसने की होड़ लगी है कि कौन कितने कपड़े उतारता है तथा कौन कितना बोल्ड सीन दे सकता है? पैसे की चकाचौंध ने इतना अन्धा बना दिया कि वह यह भूल गई हैं कि इसका दुष्परिणाम भुगत रही हैं हमारी नवयुवतियाँ, बच्चियाँ, स्त्रियाँ। यह कथन कितना चरितार्थ होता है- कि 'स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है'। दर्शक टेलीविजन चैनलों पर, सिनेमा में पेश नग्नता, उनके नग्नता भरे दृश्यों से कितना विचलित हो रहा है, उसकी भड़ास का शिकार, उसके घरों के आस-पास में जहाँ कहीं मौका मिलता है, मासूम बच्चियाँ, महिलायें बन रही हैं। पिता के साथ बेटी सुरक्षित नहीं, भाई के साथ बहन, पति के साथ पत्नी भी असुरक्षित हैं। समाज में एक ज्वाला जली है हवस की। चारों तरफ, जहाँ पढ़ो, सुनो व देखने को मिलता है देश में महिलाओं क़े खिलाफ असामाजिक घटनायें तेजी से बढ़ रही हैं। दूसरी ओर यदि हम देखें तो साहित्य व सिनेमा जगत समाज का दर्पण होते हैं। जहाँ एक ओर वे गलत दिखाकर समाज को गलत राह पर ले जा रहे हैं, तो वहीं दूसरी ओर सही सोच, सही प्रदर्शन दिशा भ्रमित होने से बचा सकता है। इतिहास बताता है कि राजा जयसिंह अपनी नव विवाहिता के प्रेम प्यार में आबद्ध होकर राजकाज भूल गये थे। बिहारी कवि की एक श्रृंगारिक अन्योक्ति ने राजा को सचेत कर कर कर्तव्य पथ पर अग्रसर कर दिया -

**नहिं परागु नहिं मधुर मधु नहिं विकास इहिकाल।**
**अलि कली ही सों बिंध्यो, आगे कौन हवाल ।।**

इस दोहे ने राजा जयसिंह की आँखें खोल दी थी। यहाँ पूरे ही समाज का दायित्व हो जाता है कि हम अपने नैतिक मूल्यों का पुनर्स्थापन करें। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि " भारत ही वह देश है जो जीवन के नैतिक मूल्यों के साथ अब तक पर्वत से भी अधिक दृढ़ भाव से खड़ा है।" अफसोस! आज हम अपने पूर्वजों के दिखायें, बताये मार्ग को भूल गये हैं। पाश्चात्य सभ्यता, संस्कृति को अपनाते-अपनाते, ना तो हम खुद को ही पहचान पा रहे हैं, ना ही पाश्चात्य को। कुछ नवयुवतियाँ भी आजादी मिलने का अर्थ कुछ और ही ले रही हैं। माँ-बाप की खुली छूट का गलत फायदा उठा रही हैं। आये दिन अखबारों, पेपरों में छप रहा है कि शराब पीकर लड़कियों ने हंगामा किया। देर रात तक लड़कों के साथ क्लबों में, होटलों में पार्टी करना आज आम हो

रहा है। ऐसा इसलिये हो रहा है कि हमारे नैतिक जीवन मूल्यों का पतन हो रहा है। नारी का ऐसा घृणित व्यवहार, घटिया मानसिकता और निकृष्ट सोच का परिणाम है। स्वामी विवेकानन्द ने कहा था कि -"किसी भी राष्ट्र की प्रगति का सर्वोत्तम थर्मामीटर वहाँ की महिलाओं की स्थिति है।" नारी राष्ट्रीय व सामाजिक जीवनामृत का केन्द्र है। जो राष्ट्र समाज में स्त्रियों का आदर नहीं करना चाहते व कभी महान बन ही नहीं पाएंगे। देश के वर्तमान पतन का मुख्य कारण यही है कि हमने शक्ति की इन सजीव प्रतिमाओं के प्रति आदरभाव नहीं रखा। स्त्रियों के प्रति घृणित दृष्टि निन्दनीय है। माँ के रूप में, बहन-बेटी के रूप में महिलाओं को सुरक्षा, सुविधा, स्नेह व दुलार देना समाज का कर्तव्य है। नैतिकता और सदाचार ही राष्ट्रीय जीवन का आधार है।

आज समाज में इन्हीं नैतिक मूल्यों की स्थापना की सबसे अधिक जरूरत है। प्रत्येक बच्चे को सही मार्ग दर्शन मिले, यह उचित शिक्षा ही कर सकती है। नैतिकता का पाठ पढ़ाया नहीं जा सकता, वरन उसे चरित्र में उतारना है। गीता को कण्ठ से गाना ही नहीं होता वरन उसका अक्स अपने हृदय में बसाना होगा तभी यह देश स्त्रियों, मासूम बच्चियों का आदर, सुरक्षा का दर्जा दे पायेगा। वरना मानव दानव का रूप धर चुका है तथा उसका रूकना कठिन ही नहीं नामुमकिन हो जायेगा।

### 1.1.4 नैतिक शिक्षा के सम्बन्ध में विभिन्न शिक्षा आयोगों के सुझाव-

नैतिक शिक्षा मनुष्य के जीवन में बहुत आवश्यक है। इसका आंरभ मनुष्य के बाल्यकाल से ही हो जाता है। सब पर दया करना, कभी झूठ नहीं बोलना, बड़ों का आदर करना, दुर्बलों को तंग न करना, चोरी न करना, हत्या जैसा कार्य न करना, सच बोलना, सबको अपने समान समझते हुए उनसे प्रेम करना, सबकी मदद करना, किसी की बुराई न करना आदि कार्य नैतिक शिक्षा या नैतिक मूल्य कहलाते हैं। सभी धर्म ग्रंथों का उद्देश्य रहा है कि मनुष्य के अंदर नैतिक गुणों का विकास करना ताकि वह मानवता और स्वयं को सही रास्ते में ले जा सके। एक बच्चे को बहुत पहले ही घरवालों द्वारा नैतिक मूल्यों से अवगत करा दिया जाता है। जैसे-जैसे उसकी शिक्षा का स्तर बढ़ता जाता है। उसके मूल्यों में विस्तार होना आवश्यक हो जाता है। यह मूल्य उसे सिखाते हैं कि उसे समाज में, बड़ों के साथ, अपने मित्रों के साथ व अन्य लोगों के साथ कैसे व्यवहार करना चाहिए। विद्यालय में किताबों में वर्णित कहानियों और महत्वपूर्ण घटनाओं के माध्यम से उसके मूल्यों को संवारा व निखारा जाता है। यदि एक देश का विद्यार्थी नैतिक मूल्यों से रहित होगा, तो उस देश का कभी विकास नहीं हो सकता, लेकिन विडम्बना है कि यह नैतिक मूल्य हमारे जीवन से धूृंधले होते जा रहे हैं। हमारी शिक्षा प्रणाली से नैतिक मूल्यों का क्षरण हो रहा है। क्योंकि इनमें नैतिक शिक्षा का अभाव है। अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए हम किसी भी हद तक गिर जाते हैं। ये इस बात का संकेत है कि समाज कि स्थिति कितनी हद तक गिर चुकी है। चोरी, डकैती, हत्याएँ, धोखा-धड़ी, जालसाज़ी, बेईमानी, झूठ, दूसरों और बड़ों का अनादर, गंदी आदतें नैतिक मूल्यों में आई कमी का राम है। हमें चाहिए नैतिक शिक्षा के मूल्य को पहचाने और इसे अपने जीवन में विशेष स्थान दे।

### 1.1.4.1 माध्यमिक शिक्षा आयोग

इस आयोग ने सुझाव दिया की शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य लोकतांत्रिक नागरिकता का विकास करना नेतृत्व की शिक्षा प्रदान करना, व्यवसायिक कौशल का विकास करना है। व्यक्तित्व का विकास करना साथ ही नैतिक व सांस्कृतिक मूल्य शिक्षा का विकास करना है।

### 1.1.4.2 राष्ट्रीय शिक्षा आयोग

कोठारी आयोग ने कहा है की शिक्षा का अधिकार इस ढंग से किया जाना चाहिए कि इससे राष्ट्रीय उत्पाद में वृद्धि, सामाजिक व राष्ट्रीय एकता की भावना बढ़े, आधुनिकरण की गति में तेजी आए तथा सामाजिक नैतिक व आध्यात्मिक मूल्यों का विकास हो। कोठारी आयोग के अनुसार- "देश के आर्थिक विकास, सच्चे जनतंत्र का निर्माण, राष्ट्रीय एकता को बनाए रखने, मूल्यों को जीवित रखने में शिक्षा का महत्वपूर्ण योगदान रहता है।" शिक्षा राष्ट्र की संपन्नता एवं कल्याण की कुंजी है। अतः शिक्षा के सभी अंगो का पुन: सर्वेक्षण आवश्यक है।

### 1.1.4.3 नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति

नई शिक्षा नीति ने भारतीय शिक्षा का विशाल प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। सभी इन सभी प्रतिवेनों में भारतीय कारण की आवश्यकता पर अपनी संतुतियाँ प्रस्तुत की गई। और यह भी प्रस्ताव किया गया कि भारतीय शिक्षा का आधार भारतीयता जीवन दर्शन एवं भारतीयों की आकांक्षाओं को ही होना चाहिए। राष्ट्रीय चेतना को और गहरी बनाने के लिए विशेष रूप से दो कार्यक्रम अपनाए जा सकते हैं -

(क) हमारी सांस्कृतिक विरासत का फिर से मूल्यांकन करना तथा उसे समझना।

(ख) हम जिस भविष्य की कामना करते हैं उसके प्रति दृढ़ प्रेरणा, पूर्ण निष्ठा को उत्पन्न किया जाए।

### 1.1.5 समाज और शिक्षा

आज नए सन्दर्भ में शिक्षा और समाज के पारस्परिक सम्बन्ध को देखने की आवश्यकता है। प्राचीन काल में जो समाज व्यवस्था थी वह आज नहीं है। विज्ञान युग के व्यापक प्रसार से दूर-दराज के देश नजदीक आ गए हैं। समाज व्यापक बनता जा रहा है और इसी व्यापक समाज की दृष्टि से शिक्षा का विचार करना चाहिए। शिक्षण अपने-आप में एक विस्तृत संसार है और उसे इस संसार का प्रतिबिम्ब भी कहा जा सकता है। अपने उद्देश्यों की पूर्ति करते समय वह समाजाधीन रहता है और समाज के निर्माण स्थलों में शीघ्रता लाने की दृष्टि से शिक्षा समाज की सहायता करती है। समाज की व्यापक जरूरतों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा को उसकी सहायता करनी पड़ती है। विज्ञान युग में नए भविष्य निर्माण के लिए शिक्षा को विविध टिका से परिवर्तित करते हुए सावधानी से काम लेना चाहिए। वर्तमान शिक्षा प्रणाली से मात्र सीमित कल्याण की कल्पना की जा सकती है। यथार्थ यह है कि नए वैज्ञानिक युग के सन्दर्भ में कृषि को लक्ष्य बनाकर शिक्षा में

समूल परिवर्तन करते हुए समाजाभिमुख बनाई जाए। विज्ञान युग समाजहित से विमुख हो रहा है। अतः शिक्षा को उत्तरजीविता, समता और स्वायत्तता की समस्याओं के समाधान में अपने को लगाना होगा, क्योंकि यही तीन आज के मानव की सबसे अधिक आवश्यक समस्याए हैं। इन लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए शिक्षा की वर्तमान संरचना को बदलकर ऐसी वैकल्पिक समान्तर रचना विकसित करनी होगी, जिसके साथ समान स्वीकृति, प्रतिफल ओर वैधता जुडी हो।

समाज, देश, काल एवं परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन करने की परम्परा रही है और यह परम्परा भविष्य में भी बनी रहेगी, क्योंकि शिक्षा ही राष्ट्रीय मूल्य तथा आकाँक्षाओं को सम्भव बनाने में सहायक सिद्ध होती है। श्रेष्ठ सबल और योग्य नागरिकों का निर्माण शिक्षा के माध्यम से ही हो सकता है तथा इस प्रकार के माध्यम से आदर्श समाज का निर्माण सम्भव है। अतः शिक्षा और समाज में अटूट सह-सम्बन्ध पूर्व में भी रहे हैं और भविष्य में ही वह बने रहेंगे। समाज अपने आदर्शों एवं आकाँक्षाओं आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु भावी नागरिकों के लिए शिक्षा की ऐसी व्यवस्था करता है कि वह समाज के आदर्शों को प्राप्त करते हुए समाज के लिए उपयोगी नागरिक के रूप में अपने आपको प्रस्तुत कर सके।

### 1.1.5.1 प्राचीन काल में शिक्षा धार्मिक

भारत की प्राचीन शिक्षा पद्धति में हमें अनौपचारिक तथा औपचारिक दोनों प्रकार के शैक्षणिक केन्द्रों का उल्लेख प्राप्त होता है। औपचारिक शिक्षा मन्दिर, आश्रमों और गुरुकुलों के माध्यम से दी जाती थी। ये ही उच्च शिक्षा के केन्द्र भी थे। जबकि परिवार, पुरोहित, पंडित, सन्यासी और त्यौहार प्रसंग आदि के माध्यम से अनौपचारिक शिक्षा प्राप्त होती थी। विभिन्न धर्मसूत्रों में इस बात का उल्लेख है कि माता ही बच्चे की श्रेष्ठ गुरु है। कुछ विद्वानों ने पिता को बच्चे के शिक्षक के रुप में स्वीकार किया है। जैसे-जैसे सामाजिक विकास हुआ वैसे-वैसे शैक्षणिक संस्थाए स्थापित होने लगी। वैदिक काल में परिषद, शाखा और चरण जैसे संघों का स्थापन हो गया था, लेकिन व्यवस्थित शिक्षण संस्थाएं सार्वजनिक स्तर पर बौद्धों द्वारा प्रारम्भ की गई थी। गुरुकुलों की स्थापना प्राय: वनों, उपवनों तथा ग्रामों या नगरों में की जाती थी। वनों में गुरुकुल बहुत कम होते थे। अधिकतर दार्शनिक आचार्य निर्जन वनों में निवास, अध्ययन तथा चिन्तन पसन्द करते थे। वाल्मीकि, सन्दीपनि, कण्व आदि ऋषियों के आश्रम वनों में ही स्थित थे और इनके यहाँ दर्शन शास्त्रों के साथ-साथ व्याकरण, ज्योतिष तथा नागरिक शास्त्र भी पढ़ाये जाते थे। अधिकांश गुरुकुल गाँवों या नगरों के समीप किसी वाग अथवा वाटिला में बनाये जाते थे। जिससे उन्हें एकान्त एवं पवित्र वातावरण प्राप्त हो सके। इससे दो लाभ थे, एक तो गृहस्थ आचाोर्यों को सामग्री एकत्रित करने में सुविधा थी, दूसरे ब्रह्मचारियों को भिक्षाटन में अधिक भटकना नहीं पड़ता था।

मनु के अनुसार ब्रह्मचारों को गुरु के रू में, अपनी जाति वालों में तथा कुल बान्धवों के यहां से भिक्षा याचना नहीं करनी चाहिए, यदि भिक्षा योग्य दूसरा घर नहीं मिले, तो पूर्व-पूर्व गृहों का त्याग करके भिक्षा

याचना करनी चाहिये। इससे स्पष्ट होता है कि गुरुकुल गाँवों के सन्निकट ही होते थे। स्वजातियों से भिक्षा याचना करने में उनके पक्षपात तथा ब्रह्मचारी के गृह की ओर आकर्षण का भय भी रहता था अतएव स्वजातियों से भिक्षा-याचना का पूर्ण निषेध कर दिया गया अ◌ाकर बहुधा राजा तथा सामन्तों का प्रोत्साहन पाकर विद्वान् पण्डित उनकी सभाओं की ओर होते थे और अधिकतर उनकी राजधानी में ही बस जाते थे, जिससे वे नगर शिक्षा के केन्द्र बन जाते थे। इनमें तक्षशिला, पाटलिपुत्र, कान्यकुब्ज, मिथिला, धारा, तंजोर आदि प्रसिद्ध हैं। इसी प्रकार तीर्थ स्थानों की ओर भी विद्वान आकृष्ट होते थे। फलतः काशी, कर्नाटक, नासिक आदि शिक्षा के प्रसिद्ध केन्द्र बन गये। कभी-कभी राजा भी अनेक विद्वानों को आमंत्रित करके दान में भूमि आदि देकर तथा जीविका निश्चित करके उन्हें बसा लेते थे। उनके बसने से वहां एक नया गाँव बन जाता था। इन गांवों को 'अग्रहार' कहते थे। इसके अतिरिक्त विभिन्न हिन्दू सम्प्रदायों एवं मठों के आचारयों के प्रभाव से ईसा की दूसरी शताब्दी के लगभग मठ शिक्षा के महत्त्वपूर्ण केन्द्र बन गये। इनमें शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, मध्वाचार्य आदि के मठ प्रसिद्ध हैं। सार्वजनिक शिक्षण संस्थाएँ सर्वप्रथम बौद्ध विहारों में स्थापित हुई थीं। भगवान बुद्ध ने उपासकों की शिक्षा-दीक्षा पर अत्यधिक बल दिया। इस संस्थाओं में धार्मिक ग्रन्थों का अध्यापन एवं आध्यात्मिक अभ्यास कराया जाता था। अशोक (३०० ई. पू.) ने बौद्ध विहारों की विशेष उन्नति करायी। कुछ समय पश्चात् ये विद्या के महान केन्द्र बन गये। ये वस्तुतः गुरुकुलों के ही समान थे। किन्तु इनमें गुरु किसी एक कुल का प्रतिनिधि न होकर सारे विहार का ही प्रधान होता था। ये धर्म प्रचार की दृष्टि से जनसाधारण के लिए भी सुलभ थे। इनमें नालन्दा विश्वविद्यालय (४५० ई.), वललभी (७०० ई.), विक्रमशिला (८०० ई.) प्रमुख शिक्षण संस्थाएँ थीं। इन संस्थाओं का अनुसरण करके हिन्दुओं ने भी मन्दिरों में विद्यालय खोले जो आगे चल कर मठों के रूप में परिवर्तित हो गये।

### 1.1.5.2 मध्य कालीन शिक्षा राज्य अधीन

भारत में मुस्लिम राज्य की स्थापना होते ही इस्लामी शिक्षा का प्रसार होने लगा। फारसी जानने वाले ही सरकारी कार्य के योग्य समझे जाने लगे। हिन्दू अरबी और फारसी पढ़ने लगे। बादशाहों और अन्य शासकों की व्यक्तिगत रुचि के अनुसार इस्लामी आधार पर शिक्षा दी जाने लगी। इस्लाम के संरक्षण और प्रचार के लिए मस्जिदे बनती गई, साथ ही मकतबों, मदरसों और पुस्तकालयों की स्थापना होने लगी। मकतब प्रारंभिक शिक्षा के केंद्र होते थे और मदरसे उच्च शिक्षा के। मकतबों की शिक्षा धार्मिक होती थी। विद्यार्थी कुरान के कुछ अंशों का कण्ठस्थ करते थे। वे पढ़ना, लिखना, गणित, अर्जीनवीसी और चिट्ठीपत्री भी सीखते थे। इनमें हिंदू बालक भी पढ़ते थे।

मकततबों में शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थी मदरसों में प्रविष्ट होते थे। यहाँ प्रधानता धार्मिक शिक्षा दी जाती थी। साथ साथ इतिहास, साहित्य, व्याकरण, तर्कशास्त्र, गणित, कानून इत्यादि की पढ़ाई होती थी। सरकार शिक्षकों को नियुक्त करती थी। कहीं-कहीं प्रभावशाली व्यक्तियों के द्वारा भी उनकी नियुक्ति होती थी। अध्यापन फारसी के माध्यम से होता था। अरबी मुसलमानों के लिए अनिवार्य पाठ्य विषय था। छात्रावास का

प्रबंध किसी किसी मदरसे में होता था। दरिद्र विद्यार्थियों को ड्डावात्त त्ति मिलती थी। अनाथालयों का संचालन होता था। शिक्षा नि:शुल्क थी। हस्तलिखित पुस्तकें पढ़ी और पढ़ाई जाती थी।

### 1.1.5.3 विभिन्न समाज सुधारकों का अभ्युदय

जीवन्त संस्कृति ही समाज को बिखरने से रोक सकती है। संस्कृति को संकट दल, मत अथवा वाद से नहीं होता। मानवीय जीवन को अधिक उदात्त, मंगलमय और आदर्श बनाने की भावना मनुष्य में आरम्भ से ही रही है। सामाजिक स्तर पर यही भावना जब कर्म के रूप में प्रकट होती है, तो एक सर्वग्राही मानवीय संस्कृति की बुनियाद पड़ती है। संस्कृति, तालाब के पानी की भांति नहीं, हहराती नदी के जल सदृश है। देश, काल और परिस्थिति के अनुरूप ही संस्कृति में भी फेरबदल आवश्यक है। अगर यह परिवर्तन-फेरबदल नहीं होता, तो समाज में द्वंद्व-संकट अनिवार्य है। भारत के प्राचीन ग्रन्थों में कर्म के आधार पर सामाजिक स्वीकृति-मान्यता की अनेक मिसालें हैं। समाज में जन्मना उच्च जाति का ही एकाधिकार रहा हो, ऐसा नहीं लगता, लेकिन साथ ही इस देश के प्राचीन साहित्य में शूद्रों के साथ जघन्य अमानुषिक कृत्यों के भी उल्लेख हैं। इस विसंगति के मूल कारणों में से एक है, देश, काल और परिस्थिति के अनुरूप संस्कृति धर्म और कर्मकाण्ड में बदलाव न आना, इस असन्तुलन की जड़ में ही सामाजिक विकृतियों का मूल उद्गम है। हमारी संस्कृति, धर्म-कर्मकांड में ठहराव आ गया है और देश-काल और परिस्थिति में क्रांतिकारी तब्दीली, इस खाई को पाटने का प्रयास संकट का आवश्यक इलाज है।

समाज सुधारक कौन है? वो व्यक्ति जो मानवता और इंसानियत के प्रति किसी भी प्रकार से चिंतित हो, जो अच्छाई के लिये माहौल में बदलाव लाना चाहता हो, एक व्यक्ति जिसके पास प्रबुद्ध वैचारिक प्रक्रिया हो, वो व्यक्ति जो किसी कमजोर वर्ग के लोगों की पीड़ा को सहन नहीं कर सकता, और ऊपर दिये गये सभी व्यक्ति जो उनकी सेवा को अपना कर्ठव्य मानते है तथा अपने बाद एक ऐसी धरती छोड़ना चाहते है जो पहले से बेहतर हो। वास्तव में एक समाज सुधारक एक आम इंसान होता है जो असाधारण तरीके से मानवता की सेवा करना चाहता है।

भारत सौभाग्यशाली है की कि उसके इतिहास में कई असाधारण इंसान हुए जिन्होंने अपना पूरा जीवन समाज की बेहतरी और दबे-कुचलें वर्ग के लोगों को ऊपर उठाने में लगा दिया। उनमें से कुछ आपके सामने प्रस्तुत है। राजा राम मोहन रॉय, ईश्वर चन्द्र विद्यासागर, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गाँधी, डॉ भीम राव अम्बेडकर ज्योतिबा फुले, एनी बेसेंट, मदर टेरेसा, विनोबा भावे आदि। हिन्दुस्तान के इतिहास में हम जिसे पुनर्जागरण काल कहते है।

### 1.1.5.4 विभन्न समाज सेवा संस्थानों का अभ्युदय

सामाजिक कार्य की अवधारणा द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान जन्मी और प्रोफेसन के रूप में मान्यता मिली। सरकारी, गैरसरकारी तंत्र के अधीन समाज कार्य को प्रोफेशनल सेवा, मूलतः साधन व्यतिरेक, प्रत्येक व्यक्ति को अपनी सम्भावनाएं उत्पादक एवं संतुष्ट जीवन हेतु उपलब्ध होती हैं। समाज कार्य एक व्यवस्थित सहायक अथवा पुनर्स्थापन उपलब्ध कराना है जो कि आर्थिक दृष्टि से निर्भरशील ग्रुप हैं, जैसे बेरोजगार, रोगी, अक्षम, वयोवृद्ध, मानसिक रोगी, विधवा, विकासशील शिशु आदि।

### 1.1.6 भारत में गैर-सरकारी संगठन

प्राचीन काल से, सामाजिक सेवा भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग रही है। स्वतंत्रता के तुरन्तु बाद, भारत में कई गैर-सरकारी संगठन सामने आये हैं। महात्मा गाँधी ने भी भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस को भंग करने और लोक सेवा संघ (लोक सेवा संगठन) को बदलने के लिए अनुरोध किया। हालांकि, उनकी याचिका को अस्वीकार कर दिया गया था, लेकिन महात्मा गाँधी के अनुयायियों ने कई स्वैच्छिक एजेंसियों को देश के विभिन्न सामाजिक और आर्थिक मुद्दों पर काम करने के लिए शुरू किया था। यह भारत में गैर-सरकारी संगठनों का पहला चरण था।

1960 में गैर-सरकारी संगठन विकास का दूसरा चरण शुरू हुआ, जब यह महसूस किया गया कि ग्रामीण क्षेत्रों में विकास के कार्य को पूरा करने के लिए सिर्फ सरकारी कार्यक्रम पर्याप्त नहीं थे। कई समूहों का गठन किया गया था जिनकी भूमिका निचले स्तर पर काम करने की थी। इसके अलावा, लाभदायक राज्य नीतियों ने उस समय गैर-सरकारी संगठनों के गठन की भूमिकाओं को प्रभावित किया। इन वर्षों में, भारत के ग्रामीण विकास में गैर-सरकारी संगठन की भूमिका में वृद्धि हुई। वर्तमान में भी, उनकी भूमिका विभिन्न योजनाओं के जरिए, सरकार की नीतियों के साथ महत्वपूर्ण बदलाव करती है। छठी पंचवर्षीय योजना (1980-1985) में ग्रामीण विकास में गैर-सरकारी संगठन के लिए, सरकार ने एक नई भूमिका की पहचान की थी। सातवीं पंचवर्षीय योजना (1985-1990) में भारत सरकार ने आत्मनिर्भर समुदायों के विकास में गैर-सरकारी संगठन पर सक्रिय भूमिका की परिकल्पना की। ये समूह यह दिखाना चाहते थे कि मानव संसाधन के साथ गाँव के संसाधन कैसे हैं, कुशल स्थानीय ज्ञान जिसे बहुत कम उपयोग किया जाता है, अपने स्वयं के विकास के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। जैसा कि गैर-सरकारी संगठन स्थानीय लोगों के साथ घनिष्ठ सम्बन्धों के बदलाव में काम कर रहे हैं, जो उनके लिए कठिन काम नहीं है। इसके कारण, भारत में आठवीं पंचवर्षीय योजना में, ग्रामीण विकास के लिए गैर-सरकारी सगंठनों को अधिक महत्व दिया गया था। इस योजना के तहत, एक राष्ट्रव्यापी गैर-सरकारी सगंठन नेटवर्क बनाया गया था। इन गैर-सरकारी संगठनों की भूमिका पर ग्रामीण विकास के लिए लागत कम थी। नौवीं पंचवर्षीय योजना में, यह प्रस्तावित किया गया है कि गैर-सरकारी संगठन सार्वजनिक निजी-साझेदारी मॉडल पर विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। कृषि

विकास नीतियों के माध्यम से और उनके कार्यान्वयन तंत्र के माध्यम से ग्रामीण विकास के लिए सरकार द्वारा गैर-सरकारी सगंठनों को अधिक अवसर प्रदान किए गए हैं।

प्रत्येक पंचवर्षीय योजना के साथ, भारत के ग्रामीण विकास में गैर-सरकारी सगंठनों की भूमिका बढ़ रही है, इसलिए गैर-सरकारी संगठन अब विभिन्न क्षेत्रों के पेशेवरों को आकर्षित कर रहे हैं। गैर-सरकारी संगठन विकास योजनाओं के योजनाकारों और कार्यान्वयन के रूप में कार्य करते हैं। वे विकास के लिए उपयोग किए जाने वाले स्थानीय संसाधनों को एकत्रित करने में सहायता करते हैं। गैर-सरकारी संगठन एक आत्मनिर्भर और टिकाऊ समाज बनाने में सहायता प्रदान करते हैं। गैर-सरकारी संगठन लोगों के बीच मध्यस्थ की भूमिका निभाते हैं। गैर-सकारी संगठन वास्तव में विकास, शिक्षा और व्यावसायीकरण विकासों की सुविधाओं को प्रदान करते हैं।

## 1.2 समस्या का प्रादुर्भाव

शिक्षा, समाज एक पीढ़ी द्वारा अपने से निचली पीढ़ी को अपने ज्ञान के हस्तांतरण का प्रयास है। इस विचार से शिक्षा एक संस्था के रूप में काम करती है, जो व्यक्ति विशेष को समाज से जोड़ने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है तथा समाज की संस्कृति की निरंतरता को बनाए रखती है। बच्चा शिक्षा द्वारा समाज के आधारभूत नियमों, व्यवस्थाओं, समाज के प्रतिमानों एवं मूल्यों को सीखता है। बच्चा समाज से तभी जुड़ पाता है जब वह उस समाज विशेष के इतिहास से अभिमुख होता है।

किसी राष्ट्र की स्थिति को वहाँ की संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में ही समझा जा सकता है। संस्कृति एवं नैतिक मूल्यों की शिक्षा के संरक्षण में किसी भी देश के शैक्षिक संस्थान संरक्षक माने जाते हैं। अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान प्रारम्भ से ही समाज में नैतिक मूल्यों, संस्कारों, राष्ट्र निर्माण एवं राष्ट्रीय एकता एवं शिक्षा के प्रसार के लिए कटिबद्ध रहा है। इन सब कारणों को दृष्टिगत रखते हुए इस संस्थान के शैक्षिक योगदान से सम्बन्धित नियम-कानून, विद्यालय वातावरण,शैक्षिक विचारों, पाठ्यक्रम व भौतिक स्वरूप को जानने के लिए शोधकर्ता ने इस विषय पर अध्ययन करने की आवश्यकता महसूस की।

## 1.3 समस्या कथन

शोधकर्ता द्वारा शोध कार्य के लिए जिस समस्या का चुनाव किया गया है उसका शीर्षक इस प्रकार है-

**"अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान का शैक्षिक योगदान"**

## 1.4 अध्ययन समस्या का औचित्य

संसार की सभी जातियों में कुछ न कुछ विशिष्ट सांस्कृतिक और धार्मिक मान्यताए होती हैं। सृष्टि के प्रारम्भिक काल में ही मानव ने अपनी सृष्टि को एक अलौकिक घटना समझा होगा और उसी समय से उनमें किसी अलौकिक शक्ति पर विश्वास उत्पन्न हुआ होगा। धीरे-धीरे जब मानव के ज्ञान में वृद्धि हुई होगी और

उन्होंने सृष्टि की वैज्ञानिक व्याख्या की होगी तब इस अलौकिक शक्ति पर से उनका विश्वास धीरे-धीरे कम होने लगा होगा।

प्राचीन काल से ही प्रकृति के वातावरण में धार्मिक सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों की शिक्षा प्रदान की जाती रही है। लेकिन समय बीतते शिक्षा राजाओं के अधीन हो जाने के कारण इन मूल्यों का हास होने लगा। मध्यकाल और आधुनिक काल आते-आते इन मूल्यों का पाठ्यक्रम में उचित स्थान न दिया जाने लगा। इस कारण से बालक के व्यवहार, आचरण एवं नैतिकता की भावना का ह्रास होने लगा। केवल ज्ञान प्राप्त कर लेना शिक्षा का उद्देश्य नहीं है शिक्षा वह है जो ज्ञान के साथ-साथ समाज, राष्ट्र, धार्मिक, व सांस्कृतिक मूल्यों का निर्माण करें। इन्ही आवश्यकताओं को दृष्टिगत रखते जा बहुत से समाज सुधारकों ने इस ओर विशेष ध्यान आकृष्ट किया और विभिन्न प्रकार की संस्थाओं के माध्यम से शिक्षा को धर्म व नैतिक मूल्य से जोड़ने के लिए प्रयास जारी किये।

उपरोक्त मानदण्डों पर परिचर्चा के आधार पर यह कहा जा सकता है कि शोधार्थी द्वारा चुनी गई समस्या वर्तमान परिस्थितियों में निश्चित रूप से उचित एवं मौलिक सिद्ध होगी।

## 1.5 समस्या में निहित शब्दों की व्याख्या

### 1.5.1 अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान

इस संस्थान की स्थापना सन 1978-79 में गोपाल भाई जी द्वारा भारत जननी परिसर, रानीपुर भट्ट, पोस्ट-सीतापुर, जिला-चित्रकूट (उत्तर प्रदेश) में की गई।

यह एक ऐसा संस्थान है जो समाज उत्थान के लिये हमेशा कार्य करता रहता है। यह संस्थान NGO के तहत समाज में शिक्षा का प्रसार तथा शिक्षा देने का कार्य करता है। इस संस्था का नारा है समाज में शिक्षा जन-जन पहुँचे।

### 1.5.2 शैक्षिक

व्यक्ति जन्म से लेकर मृत्यु पर्यत कुछ ना कुछ सीखता रहता है। शिक्षा जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। ऐसी शिक्षा किसी विशेष व्यक्ति, समय, स्थान अथवा देश तक सीमित नहीं रहती अपितु जिसके भी सम्पर्क में आकर बालक जो कुछ भी सीखता है वह शिक्षा के अन्तर्गत आता है |

शिक्षा विश्व के प्रत्येक समाज में निरन्तर चलने वाली एक ऐसी प्रक्रिया है जिसका उद्देश्य मनुष्य की समस्त शक्तियों ज्ञान व कला कौशल का विकास करते हुए उसके विचारों व आचरण सम्बन्धी व्यवहार में समाज हितैषी परिवर्तन लाना है जिससे वह सभ्य, सुसंस्कृत, एवं योग्य नागरिक बनकर स्वयं व समाज दोनों का निरन्तर विकास करें।

प्रस्तुत लघु शोध अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान का शैक्षिक दर्शन औपचारिक शिक्षा विषयक बातों से है।

### 1.5.3 योगदान

- अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान एक ऐसा संस्थान है जिसमें समाज उत्थान के लिए शैक्षिक कार्य, जन जागरूकता का कार्य किया जाता है।
- यह संस्थान अनुसूचित जाति जनजाति तथा समाज से वंचित लोगों को शैक्षिक अवसर प्रदान करता है तथा उनको समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य करता है।
- शिक्षा के मध्यम से नैतिक मूल्यों एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विकास करना।

प्रस्तुत लघु शोध में योगदान से तात्पर्य अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में किये जा रहे धरातलीय क्षेत्र से है।

## 1.6 अध्ययन के उद्देश्य

- अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के भौतिक स्वरूप का अध्ययन करना।
- अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के शैक्षिक विचारों का अध्ययन करना।
- अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के शैक्षिक प्रयासों का अध्ययन करना।
- अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के शिक्षा में योगदान का अध्ययन करना।
- अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के शैक्षिक क्रियाकलापों का अध्ययन करना।

## 1.7 अध्ययन का सीमांकन

प्रत्येक शोध की एक सीमा होती है। उसी सीमा तक उसके निष्कर्ष वैध होते हैं। प्रस्तावित शोध की निम्न सीमाए हैं-

- प्रस्तावित शोध अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान, चित्रकूट जिले तक ही सीमित है।
- प्रस्तावित शोध अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान द्वारा शिक्षा में दिए योगदान को सम्मिलित किया जाएगा।
- प्रस्तावित शोध अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के क्रियाकलापों व भौतिक सुविधाओं को सम्मिलित किया जाएगा।
- अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के गुरु-शिष्य सम्बन्ध, अनुशासन एवं वित्त व्यवस्था को सम्मिलित किया जाएगा।

## 1.8 शोध अध्ययन विधि

### ➢ व्यक्तिगत अध्ययन विधि-

प्रस्तुत समस्या का सावधानीपूर्वक अध्ययन एवं विश्लेषण तथा सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन करने के बाद अनुसंधानकर्ता ने यह निष्कर्ष निकाला कि इस अध्ययन के लिए व्यक्तिगत अध्ययन विधि उपयुक्त है।

वैयक्तिक अध्ययन विधि वह विधि है जिसके द्वारा व्यक्ति, परिवार, आदत, जाति, घटना और संस्था आदि का गहन अध्ययन गुणात्मक आधार पर किया जाता है। यह प्राचीन अध्ययन पद्धति है, इस अध्ययन पद्धति के जन्मदाता **फ्रेडरिक प्ले** थे।

**गुड और हॉट** (1952) के अनुसार "वैयक्तिक अध्ययन विधि वह विधि है जिसके द्वारा किसी सामाजिक इकाई के सम्पूर्ण स्वरूप का गहन अध्ययन किया जाता है।

**पीवी यंग** के शब्दों में "व्यक्तिक अध्ययन विधि वह विधि है जिसके द्वारा सामाजिक इकाई के जीवन की खोज और विवेचना कि जाती है। यह इकाई एक व्यक्ति, एक परिवार, एक संस्था, एक सामाजिक वर्ग या समुदाय कुछ भी हो सकता है।"

इस प्रकार वैयक्तिक अध्ययन विधि वह विधि है जिसमें एक सामाजिक इकाई के सम्पूर्ण स्वरूप की खोज, विवेचना सम्बन्धी छोटा सूक्ष्म और गहन अध्ययन किया जाता है। इसमें सामाजिक इकाई को सम्पूर्ण रूप में देखते हुए पर्याप्त सूचनाओं का व्यवस्थित संकलन करके अतीत और वर्तमान का समन्वय करते हुए गुणात्मक अध्ययन किया जाता है।

➢ **व्यक्तिगत अध्ययन विधि की विशेषताएँ-** व्यक्तिगत अध्ययन विधि की कुछ महत्वपूर्ण विशेषताओं का संक्षिप्त विवरण निम्न प्रकार से है-

- व्यक्तिगत अध्ययन विधि में किसी एक ही इकाई का किसी एक समय में अध्ययन किया जाता है।
- व्यक्तिगत अध्ययन विधि में अध्ययन सूक्ष्म और गहन होता है। इसलिए इसमें सामाजिक इकाई से सम्बन्धित सभी बातों को बहुत महत्व दिया जाता है।
- व्यक्तिगत अध्ययन विधि में अध्ययन की इकाई के एक या कुछ पहलुओं का अध्ययन नहीं किया जाता है, बल्कि उसके जीवन और संघटकों से सम्बन्धित सभी पहलुओं का अध्ययन किया जाता है।
- व्यक्तिगत अध्ययन विधि में अनुसंधनकर्ता अध्ययन इकाई से सम्बन्धित सभी पक्षों के आँकड़ो और तथ्यों का संकलन बड़े ही व्यवस्थित ढंग से करता है, जिससे कि उस अध्ययन इकाई की खोज और विवेचना सही ढंग से की जा सके।
- व्यक्तिगत अध्ययन विधि के द्वारा जो तथ्य या आँकड़े प्राप्त होते हैं वह संख्या में ना होकर शब्दो के रूप में होते हैं । इस प्रकार से प्राप्त आँकड़ो का साख्यिकीय विश्लेषण सम्भव नहीं होता है।

सांख्यिकीय विश्लेषण के अभाव में भी अध्ययन इकाई के सम्बन्ध में जो खोजपरक विवेचना प्रस्तुत की जाती है वह अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण होती है।

## ➢ व्यक्तिगत अध्ययनों के प्रकार

### 1. ऐतिहासिक व्यक्तिगत अध्ययन

यह अध्ययन किसी संगठन/व्यवस्था के दीर्घकालीन विकास का पता लगाता है। बचपन से लेकर जवानी तक एक वयस्क अपराधी का अध्ययन इसका एक उदाहरण है। इस प्रकार का अध्ययन साक्षात्कारों, अभिलेखों तथा दस्तावेजों पर अधिक निर्भर करता है।

### 2. अवलोकन व्यक्तिगत अध्ययन

यह अध्ययन एक शराबी, अध्यापक, छात्र, यूनियन नेता, कोई गतिविधि घटना या लोगों के विशेष समूह के अवलोकन पर केन्द्रित होता है। यद्यपि इस प्रकार के अध्ययन में अनुसंधानकर्ता शायद ही पूर्ण भागीदार या पूर्ण अवलोकनकर्ता होते हैं।

### 3. मौखिक इतिहास व्यक्तिगत अध्ययन

यह आमतौर पर किसी व्यक्ति द्वारा किये गए कथन होते हैं जो कि अनुसंधानकर्ता किसी व्यक्ति से गहन साक्षात्कार के माध्यम से एकत्र करता है। उदाहरणार्थ, एक मादक पदार्थ सेवन करने वाला व्यक्ति या एक शराबी, या एक वेश्या, या रिटायर्ड व्यक्ति जो अपने बेटे के साथ परिवार में समायोजन करने में असफल रहता है। इस उपागम का प्रयोग उत्तरदाताओं के सहयोग और स्वभाव पर अधिक निर्भर करता है।

### 4. स्थितीय व्यक्तिगत अध्ययन

इस प्रकार के अध्ययन में विशेष घटनाओं का अध्ययन होता है। घटना से सम्बन्धित सभी व्यक्तियों के विचार लिये जाते हैं। उदाहरणार्थ, एक साम्प्रदायिक दंगा- यह दो भिन्न धर्मों के दो व्यक्तियों के बीच संघर्ष से कैसे शुरू हुआ, किस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति ने उस स्थान पर उपस्थित अपने अपने धर्म के लोगों का समर्थन माँगा. पुलिस को कैसे सूचित किया गया, किस प्रकार पुलिस ने एक विशेष धार्मिक समूह के लोगों को गिरफतार किया, किस प्रकार अभिजात वर्ग ने दखलन्दाजी की और पुलिस पर दबाव डाला, जनता और मीडिया ने कैसे प्रतिक्रिया की आदि। इन सभी विचारों को एक साथ रखकर घटना का गहनता से अध्ययन किया जाता है जो कि उसे समझने में महत्वपूर्ण योगदान करता है। इन अध्ययनों में विस्तृत साक्षात्कार, अवलोकन, अभिलेखों और प्रतिवेदनों की जाँच आदि शामिल हैं।

एक व्यक्ति के एकल का अध्ययन निम्न स्रोतों के आधार पर किया जा सकता है -

- परिवार का इतिहास तैयार करके।
- इसके आधार पर एकल का जीवन वृन्त बन जाता है। यह विवरण अध्ययनकर्ता के निदान, उपचार तथा सुझाव देने में सहायता करता है।
- इकाई का इतिहास तैयार किया जा सकता है ।
- अगला समायोजन उपचार तथा सान्तवना देना, तथा समायोजन के कार्यक्रमों का अनुसरण या कार्यक्रम की प्रभावशीलता।

### ➢ केस स्टडी (व्यक्तिगत अध्ययन) एक गुणात्मक तकनीकी है-

व्यक्तिगत अध्ययन का प्रयोग वैसे कई रूपों में गणनात्मक तरीके से भी किया जा सकता है। यह तकनीकी एक खुर्दबीनी तकनीकी कहलाती है। जिससे शोध इकाई को सूक्ष्म से सूक्ष्म उन पक्ष को भी अति विस्तार एवं गहराई से देखा जा सकता है, जो सामान्य रूप से नहीं देखे जा सकते है।

प्रस्तुत अध्ययन में अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के शैक्षिक विचारों का पता लगाने के लिए वैयक्तिगत अध्ययन तकनीकी का प्रयोग किया है। मूल्य आधारित शिक्षा का प्रयास कहां तक सफल है? और बच्चों पर इसका क्या प्रभाव पड़ रहा है? इसलिए शोधार्थी द्वारा इस संस्था की स्थिति जानने के लिए व्यक्तिगत अध्ययन विधि का प्रयोग किया गया है। इस अध्ययन में केवल व्यक्तिगत अध्ययन तकनीकी ही सफल हुई है।

## 1.9 शोध उपकरण :-

प्रत्येक और सभी प्रकार के अध्ययन के लिए हमें निश्चित प्रकार के शोध उपकरणों की आवश्यकता होती है, जो नये क्षेत्रों के वास्तविक तथ्यों को एकत्र करने में सक्षम होते हैं।

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आकड़ों के संकलन हेतु शोध उपकरण के रूप में प्रेषण और साक्षात्कार प्रविधि का प्रयोग किया गया है।

### 1.9.1 प्रेक्षण :-

इसे अवलोकन, निरीक्षण आदि नामों से भी जाना जाता है। पी.वी. यंग' के शब्दों में- "प्रेक्षण हमारे चक्षुओं के माध्यम से किया गया स्वाभाविक घटनाओं के सम्बन्ध में एक ऐसा क्रमबद्ध एवं विचारपूर्वक अध्ययन है जो कि उनके घटित होने के समय किया जाता है। प्रेक्षण का उद्देश्य विषम सामाजिक घटनाओं, संस्कृति के प्रतिरूपों अथवा मानव व्यवहार के अन्तर्गत सार्थक अन्तर्सम्बन्धित तत्वों के स्वरूप तथा विस्तार

को ज्ञात करना होता है।" निरीक्षण की इस परिभाषा इस प्रकार यह स्पष्ट है कि निरीक्षण की प्रविधि इन्द्रियानुभविक तथ्यों को संकलित करने के प्रति प्रवृत्त होती है।

निरीक्षण दो प्रकार का होता है-

1 प्रत्यक्ष निरीक्षण

2. अप्रत्यक्ष निरीक्षण

चूंकि शोध कार्य में प्रत्यक्ष निरीक्षण विधि का प्रयोग किया गया है अतः प्रत्यक्ष निरीक्षण का अर्थ है- व्यवहार जैसा हो रहा है उसी रूप में अवलोकन करना प्रत्यक्ष निरीक्षण है।

इस प्रकार यह स्पष्ट है कि निरीक्षण की प्रविधि इन्द्रियानुभविक तथ्यों को संकलित करने के प्रति प्रवृत्त होती है। यह विशिष्ट प्रकार की स्थितियों में प्राणियों से सम्बन्धित उन व्यवहारों तथा सन्दर्भों का चयन उत्तेजन, अभिलेखन तथा कूट संकेतन है जो शोध उद्देश्यों के अनुकूल हो।

### 1.9.2 साक्षात्कार :-

शोध उपकरण के रूप में साक्षात्कार प्रश्नावली का दूसरा रूप है। इसको व्यापक ढंग से परिभाषित करते हुए जान डब्ल्यू बेस्ट के शब्दों में- "साक्षात्कार एक प्रकार से मौखिक प्रकार की प्रश्नावली है। इसके अन्तर्गत उत्तर लिखने के स्थान पर आमने-सामने की स्थिति में विषयी मौखिक उत्तर देता है। वास्तव में व्यवहारपरक विज्ञानों में साक्षात्कार से तात्पर्य अनुसंधान की एक प्रविधि से है। अतीत में साक्षात्कार का प्रयोग निदान, उपचार व चयन आदि के लिए किया जाता रहा है परन्तु आधुनिक वैज्ञानिक युग में इसका उपयोग अनुसंधान की एक वैज्ञानिक प्रविधि के रूप में किया जाने लगा है।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि साक्षात्कार आधुनिक वैज्ञानिक युग में एक साधारण प्रक्रिया नहीं है बल्कि अब इसने एक अविकसित कला तथा अध्ययन की वैज्ञानिक पद्धति का रूप धारण कर लिया है। अब साक्षात्कारकर्ता एक सामाजिक स्थिति में केवल पारस्परिक वार्तालाप से ही सम्बन्धित नहीं रह गया है बल्कि साक्षात्कार में अब उनकी भूमिका अति सक्रिय तथा अत्यन्त महत्वपूर्ण हो गयी है।

## 1.10 अध्ययन का महत्व एवं सार्थकता

क्या आज की शिक्षा हमारा सर्वांगीण विकास कर रही है क्या वह जीवन मूल्यों पर आधारित है सामाजिक मूल्यों के बारे में भी हमे सचेत करती है शिक्षा के ज्ञान को आज एक बाजार या व्यवसाय का रूप दे दिया गया है और उच्च शिक्षा सामान्य वर्ग के दायरे से बाहर है। यह एक सामाजिक विसंगति जी कैसी रहेगी की शिक्षा को मात्र जीवन में जीविका उपार्जन का माध्यम बना दिया गया है व इसी दिशा में अधिकाधिक ध्यान दिया जा रहा है। उसके सर्वाधिक सबल पक्ष ज्ञान पर अधिक ध्यान नहीं दिया जा रहा है शिक्षा केवल इसीलिए नहीं दी जाती है कि आपके लिए भरण पोषण का माध्यम बन सके। वह आपको जब

तक अपनी संस्कृति, जीवन मूल्यों, वैश्विक परिवर्तन, कृति का संरक्षण, परस्पर सहयोग व समन्वय जैसे मानवीय गुणों का विकास नहीं करती, वह अधूरी शिक्षा ही कही जाएगी। शिक्षा का रोजगार के साधन के प्रचार-प्रसार से जुड़ा होना एक अत्यन्त महत्वपूर्ण पक्ष है, पर शिक्षा के प्रश्नों की जबरदस्त अवहेलना का अन्य परिणाम ही सामाजिक भ्रष्टाचार को बढ़ाता है।

जब हम शिक्षा में मानवीय मूल्यों का समावेश करते हैं तो वह व्यक्तित्व विकास में भी सहायक होती है। जैसे सत्य कहना एक अच्छी बात है, क्योंकि एक सत्य आपको कहीं असत्य कहने से बचाता है। असत्य कहने पर आपको फिर उस असत्य को छुपाने के लिए असत्य का सहारा लेना डा वैसे भी सत्यम शिवम सुन्दरम यह कथन ही अपने आप में सत्य की महानता को प्रकट करता है।

प्राचीन काल से ही शिक्षा प्रकृति के वातावरण में धार्मिक, सांस्कृतिक व नैतिक मूल्यों के आधार पर दी जाती थी। मध्य और आधुनिक काल में शिक्षा में नैतिक व सांस्कृतिक मूल्यों का ह्रास होने से बालकों में सामाजिक एवं मानवीयता के गुण फीके पड़ने लगे। यदि हमें सामाजिक व आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त करनी है तो शिक्षा को नवीन प्रयोगों के साथ-साथ पारम्परिक शिक्षा के साथ जोड़ना अति आवश्यक है। जब तक बालक के अन्दर मानवीय व नैतिक मूल्यों का विकास नहीं होगा वह समाज व राष्ट्र प्रगति नहीं कर सकता। आज आधुनिक युग में इन मूल्यों की आवश्यकता को देखते हुए अनेक समाज सुधारकों व आयोगों आदि ने मूल्य शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए है। अनेक समाज सुधारक देश के अन्दर विभिन्न संस्थाओं के माध्यम से जीवन मूल्य, सांस्कृतिक मूल्य व नैतिक गुणों के साथ-साथ नवीन तकनीकी शिक्षा प्रदान कर रहे हैं-

- बालक में वर्तमान के साथ ही अतीत की समझ विकसित करना
- ज्ञान के विकास के द्वारा जीवन जीने की सहज क्षमता को जगाना
- कुछ मूल मूल्यों को विकसित करना जैसे मन की निडरता, विवेक शक्ति आदि।
- अपनी सांस्कृतिक विरासत के उत्थान के लिए विद्यार्थियों को इससे परिचित कराना।
- एक उत्तम चरित्र में वे सत्य, अहिंसा, निर्भयता, ब्रह्मचारी, अस्वाद, अस्तेय और अपरिग्रह आदि गुणों का होना आवश्यक समझते थे।

अतः प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से संस्था द्वारा संचालित शैक्षिक क्रियाविधि, उनके विचार, उनकी भौतिक स्वरूप सांस्कृतिक क्रियाकलापों व दैनिक दिनचर्या के बारे में गहन अध्ययन कर बालकों को सांस्कृतिक, सामाजिक मूल्यों के साथ-साथ तकनीकी शिक्षा प्रदान की जा सकती है। जो राष्ट्रीय शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायक सिद्ध होगी।

# द्वितीय अध्याय

## सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

2.1 प्रस्तावना

2.2 शोध समस्या से सम्बन्धित कतिपय शोध अध्ययन

2.3 अध्ययन से सम्बन्धित लेख, समाचार, पत्र पत्रिकाए, पुस्तकें आदि

2.4 निष्कर्ष

# द्वितीय अध्याय : सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण

## 2.1 प्रस्तावना

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन शोध का अभिन्न अंग होता है। यह किसी शोधकर्ता के लिए समस्या विशेष के मूल में पहुँचने का महत्वपूर्ण साधन तथा अनुसन्धान का प्राथमिक आधार है। शोध प्रबन्ध की वास्तविक योजना एवं उसके संचालन से पूर्व शोधकर्ता समस्या से सम्बन्धित उपलब्ध साहित्य का अध्ययन इसलिए करता है क्योंकि यह उसे अनावश्यक पुनरावृति से बचाता है। प्रस्तुत शोध अध्ययन में शोधकर्ता का शोध विषय **अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान का शैक्षिक योगदान है।** उक्त समस्या में शोधकर्ता को संस्थान के शैक्षिक विचारों, प्रभावों तथा भौतिक स्वरूपों का अध्ययन करना है, परन्तु समस्या से सम्बन्धित शोध कार्य को पूर्ण करने के लिए सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण करना नितांत आवश्यक है। शोधकर्ता के लिए शोध समस्या से सम्बन्धित उपर्युक्त निष्कर्ष प्राप्त करने के लिए समस्या से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक जिसकी आवश्यकता को निम्नलिखित बिन्दुओं के आधार पर स्पष्ट किया जा सकता है -

- सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण के द्वारा शोधकर्ता को अपने शोध कार्य की स्पष्ट पृष्ठभूमि प्राप्त होती है तथा उसमें निहित विभिन्न सिद्धांतों एवं अवधारणाओं को समझने में सहायता मिलती है।
- प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के शैक्षिक योगदान प़र अध्ययन कर रहा है अतः उसे यह जानना नितांत आवश्यक है कि इस क्षेत्र में कितने कार्य हो चुके हैं तथा उस कार्य की प्रकृति क्या है? जो कि सम्बन्धित अध्ययन द्वारा ही सम्भव है। मिलता हे समस्या का परिभाषीकरण, और अवधारणाओं व सीमांकन के निर्माण में सहायता लती है।
- सम्बन्धित साहित्य सर्वेक्षण की सहायता से प्राप्त निष्कर्षों के विश्लेषण की सोच विकसित हो।

## 2.2 शैक्षिक योगदान से सम्बन्धित शोध अध्ययन-

**सिंह, नीलम(1999)** ने अपने शोध ग्रन्थ में "भारत वर्ष में मिशनरी शिक्षा योगदान तथा वर्तमान समय में उपादेयता" पर अध्ययन किया। अध्ययन निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए-

- अंग्रेजों ने भारतीय कला, चित्रकला, वस्तु कला, मूर्तिकला की खोज एवं उसके संरक्षण की व्यवस्था की। भारत में साहित्य तथा सांस्कृतिक जागृत उत्पन्न हुई।

- मिशनरी शिक्षा देश में न केवल आधुनिक शिक्षा पद्धति को प्रचलित किया वरन स्वयं शिक्षा संस्थाओं का संचालन करके भारतीयों के समक्ष एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।

- मिशनरियों ने एक नवीन प्रणाली का सूत्रपात करके इस देश की जनता का एक अकथनीय हित किया। उन्होंने भारतीय जनता को अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रोत्साहित किया एवं उनके स्तर को ऊंचा उठाया।

- अंग्रेजी शिक्षा के द्वारा भारतीय समाज का पुनरुत्थान हुआ। भारतीय समाज की जाति प्रथा, ऊंच-नीच, सती प्रथा और शिशु हत्या जैसी सामाजिक कुरीतियों का निराकरण किया तथा भारतीयों को पाश्चात्य विज्ञान के अध्ययन का अवसर मिला। जिस कारण श्री रामानुजम जगदीश चंद्र बसु तथा सीवी रमन जैसे वैज्ञानिकों का जन्म हुआ।

- अंग्रेजी शिक्षा के कुछ दोष भी थे। भारतीय संस्कृति पर प्रतिकूल प्रभाव। पाश्चात्य संस्कृति एवं सभ्यता को थोपा गया। राष्ट्रीय एकता समाप्त हो गई। शिक्षा शक्ति सुलभ के बजाय महंगी हो गई। भारतीय भाषाओं की उपेक्षा हुई। भारतीय साहित्य को पाठ्यक्रम में शामिल करने की उपेक्षा की गई।

**गुप्ता, सत्येन्द्र (2005)** ने अपने शोध ग्रन्थ में "बुन्देलखण्ड(उत्तर प्रदेश) क्षेत्र में सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन" में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए-

- सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाओं ने बुन्देलखण्ड उत्तर प्रदेश क्षेत्र में संख्यात्मक रूप से तीव्र गति प्रगति की है।
- यह संस्था समस्त जिला मुख्यालयों सहित तहसीलों, कस्बों एवं ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा प्रदान करने के कार्य कर रहे हैं।
- यह संस्थान बुन्देलखण्ड क्षेत्र में बालक एवं बालिकाओं की शिक्षा पर लगभग समान रूप से ध्यान दे रहे हैं।
- विद्या मन्दिर संस्थाए स्वयं में स्वामित्व वाले पक्के एवं कंक्रीट भवनों में समस्त छात्रों के बैठने के लिए कक्ष कक्षोपकरण एवं शौचालयों की व्यवस्था किए हुए हैं।
- सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में छात्रों के नामांकन की दर में सतत रूप से वृद्धि हो रही है।
- इन संस्थाओं में ग्रामीण पृष्ठभूमि वाले छात्रों का अनुपात अधिक है।
- सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थाओं में आचार्य छात्र अनुपात मानकों के अनुरूप है।
- इन संस्थाओं में छात्रों के शारीरिक विकास हेतु संतोषजनक रूप में ही प्रयास कर रहे हैं।
- सभी सरस्वती विद्या मन्दिर संस्थान स्ववित्तपोषित श्रेणी के हैं एवं छात्रों से प्राप्त होने वाला शुल्क ही उनकी आय का नियमित स्रोत है।
- ये संस्थान छात्रों के प्रवेश हेतु पारदर्शी प्रक्रियाओं का पालन कर रहे हैं।
- यह संस्थान उत्तर प्रदेश सरकार के ही पाठ्यक्रम का परिचालन कर रहे हैं।

**शर्मा, डॉ० शशीकांत (2007)** ने अपने शोध ग्रन्थ में "गिजुभाई बधेका का शैक्षिक चिंतन एवं आधुनिक भारतीय शिक्षा परिषद में इसकी प्रासंगिकता" का अध्ययन किया। निष्कर्ष स्वरूप इन्होंने पाया कि-

- गिजुभाई अपना सम्पूर्ण जीवन बालकों के हितों की रक्षा के लिए अर्पित किया। बाल शिक्षा में उनका योगदान अतुलनीय है। गिजू भाई मॉन्टेसरी से अधिक प्रभावित थे।
- शिक्षा जीवन व्यापी प्रक्रिया है इसका उद्भव मानव के भीतर से है।
- बालक के मानसिक व्यवहार के मूल कारण को जानकर उसका समाधान करना ही उनकी दृष्टि में व्यवहार परिष्करण का सर्वोत्तम तरीका है।
- गिजूभाई का मत है कि शिक्षा व्यवस्था पर विचार करते समय क्या पढ़ना? किस लिए पढ़ना? और कैसे पढ़ना? इन पर चिंतन करना आवश्यक है। उनका मानना है कि मानव की स्वाभाविकता की रक्षा करने वाली तथा उसके स्वभाव को उच्चगामी बनाने वाली हो।
- उन्होंने शिक्षा का उद्देश स्वास्थ्य शिक्षा, अध्यात्मिक विकास, चारित्रिक विकास, आत्माभिव्यक्ति, वैज्ञानिक बुद्धि का विकास, शांत एवं बन्धुत्व का विकास, व्यावसायिक दक्षता का विकास होना बताया है।
- गीजूभाई लड़कियों और लड़कों के समान पाठ्यक्रम का समर्थन करते हैं। पाठ्यक्रम में गणित, विज्ञान, भूगोल, इतिहास, समाज विज्ञान, कला, व संगीत, जैसे परम्परागत विषयों के साथ-साथ व्यवसायिक कौशलों का विकास करने वाले विषयों को शामिल करना भी आवश्यक मानते हैं।
- गिजूभाई बधेका छोटे बालकों के लिए मांटेसरी शिक्षा पद्धति का पुरजोर समर्थन करते है। उनका मानना है कि इस पद्धति का उद्देश्य बालक के शारीरिक, मानसिक तथा आध्यात्मिक स्वःस्पूर्ति विकास में सहायता देना है।
- गिजूभाई भय और दमन पर अधिक आधारित अनुशासन के घोर विरोधी थे।
- बालक के मानसिक व्यवहार के मूल कारण को जानकर उसका समाधान करना ही उनकी दृष्टि में व्यवहार परिष्करण का सर्वोत्तम तरीका है।
- उनका मत है कि शिक्षक का व्यवहार शिक्षण पद्धति तथा विषय वस्तु यदि बालक के रुचिकर होंगे तो स्वाभाविक रूप से अनुशासनहीनता की समस्या उत्पन्न नहीं होगी।

**सिंह, रेनू (2008)** ने "भारत में छत्रपति शाहू जी महाराज का शैक्षिक योगदान विशेष रूप से दलितों के शैक्षिक उत्थान में" अध्ययन किया। निष्कर्ष स्वरुप में इन्होंने जो पाया है वह निम्नलिखित हैं-

- शिक्षा का उद्देश्य अध्यात्मवाद एवं भौतिकवाद से सम्बन्धित बताया। हरिजन शिक्षा, स्त्री शिक्षा, जनसाधारण की शिक्षा एवं धार्मिक शिक्षा पर अधिक जोर दिया।
- इन्होंने व्यवसायिक विज्ञान शिक्षा पर अधिक जोर दिया जो वर्तमान में प्रासंगिक है।
- छत्रपति शाहू जी महाराज के शैक्षिक विचारों से यह स्पष्ट है कि आदर्शवादी होते हुए भी आधुनिक जीवन की आवश्यकताओं एवं वास्तविकताओ के प्रति भली-भांति जागरूक थे। इसलिए उन्होंने जीवन के कटु सत्य की उपेक्षा नहीं की।
- शिक्षा के द्वारा बुद्धि, मस्तिक, शरीर, आत्मा के साथ ही हाथों का प्रशिक्षण करने के पक्ष में थे।
- राष्ट्रीय भावना का समावेश और भारत के पुनर्निर्माण की तीव्र अभिलाषा छत्रपति शाहूजी के शैक्षिक विचारों की विशेषता है।
- व्यक्ति की असीम शक्ति पर विश्वास करते थे। उनका मानना था कि वास्तविक शिक्षा से ही व्यक्ति का सर्वांगीण विकास सम्भव है।
- परीक्षा के प्रति इनका दृष्टिकोण आंतरिक परीक्षा प्रणाली है। शिक्षा दर्शन के क्षेत्र में शाहू जी के विचारों में अनेक गुण विद्यमान हैं। स्वतंत्रता, क्रियाशीलता, अनुभूति एकाग्रता, चिंतंन, सामाजिकरण, सृजनात्मक, अभिव्यक्ति, व्यक्तित्व विकास, शिक्षकों का सम्मान आदि।

**त्रिपाठी, आशुतोष (2014)** ने "शोध हेतु पंडित राम श्री राम शर्मा आचार्य के अध्यात्मवाद का व्यावहारिक दृष्टिकोण शिक्षा और समाज निर्माण में योगदान का समीक्षात्मक अध्ययन" में निम्नलिखित निष्कर्ष प्राप्त किए-

- स्वास्थ्य शैक्षिक समाज के निर्माण हेतु हमें अपनी शिक्षा व्यवस्था में पूर्ण गतिविधियों और शैक्षिक क्रियाकलापों को समाहित करना होगा जो आध्यात्मिक आधारभूत मूल्यों पर आधारित है तथा जिनकी समाज निर्माण में सार्वदेशिक व सार्वकालिक उपयोगिता है।
- वैज्ञानिक अध्यात्म भारतीय संस्कृति और परम्पराओं के मूल में है और इस पर आधारित मूल्यों के सृजन और संवर्धन द्वारा ही हम वसुधैव कुटुंबकम की भावना को साकार कर सकते हैं। अस्तु पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का अध्यात्म छात्रों को आदर्श नागरिक के रूप में भी निर्मित कर उन्हें शान्ति का संवाहक और विश्व बन्धुत्व का सृजन बनाने में पूर्णता समर्थ हैं।

- पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य द्वारा प्रणयति साहित्य और दर्शन का सम्यक अनुशीलन करने के उपरांत यह सहज ही परलक्षित होता है की आचार्य श्री का सम्पूर्ण व्यक्तित्व एक स्वस्थ शैक्षिक समाज के सृजन हेतु समर्पित है।

- हम पश्चात अंधानुकरण में अपनी सांस्कृतिक विरासत को भूलाते जा रहा है जो कालांतर में हमें अपने गरिमा से गरिमा रहित कर देगी। आचार्य श्री का वैज्ञानिक अध्यात्मावाद शिक्षा व समाज निर्माण दोनों ही दृष्टियों से सर्वकालिक व सार्वदेसिक महत्त्व रखता है।

- पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य का अध्यात्मवाद वर्तमान परिवेश में पूर्णतया प्रसांगिक है। आचार्य श्री ने जहां एक ओर प्रचलित आडंबरों से उसे मुक्त कराया वहीं दूसरी ओर वह ऐसे अध्यात्म को आत्मसात करने की बात कहते है जो कोरे कर्म कांडो से दूर विशुद्ध वैज्ञानिकता पर आधारित है।

- आचार्य ने अध्यात्मवाद में सत्य, एकता, सहयोग, आडंबरहीनता, दया, अहिंसा, आत्मशांति, धर्म परायणता, निर्भयता, अंतरदर्शन, उत्सर्ग, प्रयश्चित, अनेकता में एकता, सहअस्तित्व, ध्यान, परमानंद, सुचिता, विभेदीकरण, सहनशीलता जैसे अनेकानेक आधारभूत तत्व विद्यमान हैं जो छात्रों को आदर्श नागरिक बनाकर एक स्वस्थ शैक्षिक समाज के सृजन में सहायक है।

- आचार्य श्री के अध्यात्मवाद में सन्निहित आध्यात्मिक मूल्यों की समाज निर्माण में महती भूमिका है। आचार्य शिक्षा और समाज निर्माण को एक दूसरे का पूरक मानते हैं।

- आचार्य का संपूर्ण व्यक्तित्व ही विश्व बंधुत्व का सबसे बड़ा संवाहक है। आपके अध्यात्मवाद में शांतिपूर्ण सहअस्तित्व,तदानुभूति सहनशीलता, को विशेष महत्व दिया गया है और यह आधारभूत तत्व ही विश्व बंधुत्व की भावना को उद्दीप्त करते है।

- आचार्य का अध्यात्मवाद विश्व धर्म, विश्व संस्कृति, विश्व राष्ट्र, विश्व भाषा की संकल्पना के साथ विश्व बंधुत्व की भावना को मूर्त रूप देने का एक सफल प्रयास है।

## 2.3 अध्ययन से सम्बन्धित लेख, समाचार, पत्र-पत्रिकाएँ, पुस्तकें आदि




चित्र 2.3 सम्बन्धित साहित्य




चित्र 2.3 समाचार

## 2.4 समीक्षात्मक निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध समस्या से सम्बन्धित साहित्य के उपर्युक्त समीक्षात्मक अध्ययन के आधार पर स्पष्ट होता है कि आज तक के अधिकांश विचारकों की साहित्यिक कृतियों पर शैक्षिक कार्य हुए जिसके आधार पर शैक्षिक विचारधारा, शिक्षा दर्शन तथा शिक्षा के अन्य आयामों पर निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं। जिन्होंने माना की शिक्षा की सार्थकता मानव के समग्र विकास पर निहित है।

जीवन में चरित्र, धर्म और ज्ञान की भावना को बल देने वाले विभिन्न संस्थाए जो समाज में व्याप्त कुरीतियों को अपने शैक्षिक वचनावृत से दूर कर रहे हैं। ऐसी ही एक संस्था **अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान** है।

सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन एवं विश्लेषण के पश्चात शोधकर्ता द्वारा प्रस्तुत समस्या से सम्बन्धित अध्ययन कहीं देखने को नहीं मिला। उनके साहित्य के उदात्त मूल्यों का अनुशीलन वर्तमान के गिरते जीवन मूल्यों को दिशा प्रदान कर रहा है। **"अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान का शैक्षिक योगदान"** पर अभी तक कोई शोध कार्य देखने को नहीं मिला। ऐसे सचेतन समाज सेवी संस्थान के शैक्षिक विचारों व कार्यो से अवगत कराना एवं विभिन्न क्षेत्रों में अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान की सेवाओं को प्रकाश में लाना व राष्ट्रीय जीवन के विकास को समाज उपयोगी शिक्षा विकास से जोड़ने सम्बन्धी योगदान को जनमानस के सामने लाना इस सोच का प्रयोजन है।

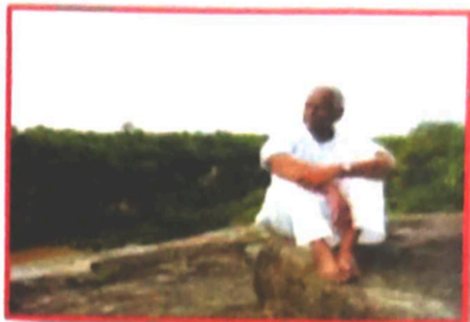
# तृतीय अध्याय

## संस्थापक जीवन परिचय

# तृतीय अध्यय: संस्थापक जीवन परिचय

## 3.1 गोपाल भाई का पारिवारिक जीवन

**पारिवारिक जीवन में गोपाल भाई जी ने बताया कि-**



चित्र 3.1 गोपाल भाई

पूज्य बाबा स्व0 श्री हनुमान का अक्षर देवता से सम्बन्ध नहीं जुड़ पाया था। उनके द्वितीय पुत्र पूज्य स्व0 **श्री मोहनलाल** तथा पूज्य माँ स्व0 **श्री मती देवरती** की कृपा से मैंने शरीर पाया। पिता जी भी साक्षर मात्र थे। परिवार में शिक्षा का वातावरण नहीं था। घोर गरीबी के दिन थे। ऐसी परिस्थिति में जन्म तिथि ठीक-ठीक ज्ञात बाद के वर्षों में भी नहीं रही। माँ को इतना याद था कि मैं चैत्र नवरात्रि में पैदा हुआ था।

मेरे चाचा स्वर्गीय श्री शिव प्रसाद ने 2009 में बताया कि मैं **चैत्र शुक्ल नवमी रविवार** को इस धरा में आया था। वीगहना नाम के छोटे से गाँव बाँदा जिले में पलने बढ़ने लगा। मैं धीरे- धीरे बड़ा हो रहा था। पिताजी को चिंता थी कि मैं हिन्दी ज्ञान प्राप्त कर लूँ ताकि रामायण पढ़ना, चिट्ठी पढ़ना-लिखना आ जावे। उनकी चिंता में कोई सहायक नहीं था। मेरे पिता अपने परिवार में यद्यपि दूसरे क्रम में थे, किंतु परिवार के मुखिया नहीं बने।

पिता जी की ससुराल कुल कुम्हनी चिल्ली थी। मेरे नाना समझदार तथा कबीरी गायक थे। उनके बेटे रामकृपाल कबीरी के, कीर्तन के अच्छे गायक थे। आज 80 वर्षीय रामकृपाल कबीरी भजन के अपने जिले के अच्छे गायकों में गिने जाते हैं।

## 3.2 शैक्षिक जीवन

**प्रारम्भिक शिक्षा-** कक्षा (1-5) श्री कौशल किशोर संस्कृत विद्यालय, बिलगाँव (बाँदा) में पुर्ण किया।

उच्चतर माध्यमिक शिक्षा-जूनियर हाई स्कूल, खुरहंड(बाँदा)।

**माध्यमिक शिक्षा-** कक्षा 9 से 12 की शिक्षा हिन्दू इण्टर कॉलेज, अतर्रा (बाँदा) से 1960 में पूर्ण किया।

**स्नातक शिक्षा-** अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा(बाँदा)

**बी0एड0-** अतर्रा पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज, अतर्रा (बाँदा)

**शैक्षिक जीवन के विषय में गोपाल भाई जी ने बताया-**

गाँव से 3 किलोमीटर दूर जमरेही विद्यालय में मेरा नाम लिख आया। मेरी उम्र संभवत: 9- 10 वर्ष थी जब मैं कक्षा-1 का छात्र बना।

**श्री मंगली प्रसाद** जी दलित समूह से सम्बन्ध रखने वाले जमरेही विद्यालय के एक मात्र शिक्षक थे। चौहानों का गाँव है उन्हीं का प्रभाव चलता था। मंगली प्रसाद जी स्वयं कबीरी गायक थे। उनका मेरे मामा रामकृपाल से परिचय था, उन्होंने मुझसे एक कीर्तन गाने को कहा मुझे आज भी याद है मैंने "चले श्याम सुंदर से मिलने सुदामा गाते चले मन में हरे कृष्णा रामा" कीर्तन सुनाया। मेरा नाम लिख गया मैं जमरेही पढ़ने जाने लगा.परन्तु वहाँ से जल्द ही छोड़ दिया।

श्री कौशल किशोर संस्कृत विद्यालय में प्रवेश लिया। उस समय संस्कृत शिक्षा ब्राह्मण परिवार के लिए ही मान्य थी फिर भी मुझे ले लिया गया। कुछ दिनों अब मैं जमरेही न जाकर बिलगांव विद्यालय में जाने लगा कक्षा 5 तक की शिक्षा यही पूरी हुई।

जूनियर शिक्षा हेतु जूनियर हाई स्कूल खुरहंड स्टेशन आना पड़ता था। गाँव से 5 किलोमीटर नित्यपैदल आना जाना होता था। आठवीं पास हुआ। संस्कृत,अंग्रेजी में विशेष योग्यता मिली।

आगे की शिक्षा का क्या होगा अनिश्चितता थे अंधकार था। गरीबी के कारण सोचा भी नहीं जा सकता था। जुलाई आई साथ के लोग लल्लू भाई, बद्री भाई आदि अतर्रा जाने, वहाँ प्रवेश लेने की तैयारी करने लगे। मेरे पिताजी हिम्मत की तथा उन्होंने मुझे भी आगे बढ़ाने का निश्चय किया मेरा प्रवेश विज्ञान वर्ग में हो गया।

कक्षा 9 से 12 तक की शिक्षा (माध्यमिक शिक्षा) हिन्दू इण्टर कॉलेज, अतर्रा 1960 में पूर्ण किया। इस काल मैं कॉलेज की प्रार्थना से लेकर सम्पूर्ण सामाजिक सांस्कृतिक मंच की गतिविधियों में विद्यालय प्रधानाचार्य **श्री जगपत** जी सहित सभी का स्नेह प्राप्त रहता था। कालेज की ओर से बुन्देलखण्ड की ओर.से बाल बचत योजना का वह धन जिसे कॉलेज के छात्रों ने जमा किया था उसका ड्राफ्ट देने के लिए साथ में गीत गाने के लिए तत्कालीन **पीएम पंडित जवाहरलाल नेहरू** का दर्शन लाभ आगरा के पास बिचपुरी नामक स्थान में हुआ, यह घटना 1959 की है।

19 नवंबर 1960 को तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष एवं सूचना प्रसारण मंत्री **श्री मती इन्दिरा गाँधी जी** अतर्रा पी जी कॉलेज, अतर्रा के कार्यक्रम में पधारी हुई थी। उनके स्वागत हेतु हिंडोल राग का गीत लेकर प्रस्तुत किया गया। 1960 तक की यह कुछ अविस्मरणीय प्रसंग है। इसी काल में **श्री जगवीर सिंह** जो कॉलेज के कृषि विभाग के प्रमुख थे तथा **श्री शिवप्रसाद जी** गुप्त जो नगर के प्रतिष्ठित सामाजिक राजनैतिक कार्यकर्ता थे। इन दोनों का सानिध्य, स्नेह, आशीष भरपूर मिला।

अपने आगे की यात्रा में मैं इन दोनों की प्रेरणा आज भी साथ लेकर चलता हूँ। 1960 में ही प्रथम छात्र के रूप में श्री जनपत जी की प्रेरणा से अतर्रा पी जी कॉलेज, अतर्रा में प्रवेश लिया यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि श्री जगपत जी ही थे जिन्होंने 9वीं कक्षा से 12वीं कक्षा तक की शिक्षा शुल्क में छूट दिया। इसी क्रम में स्नातक प्रवेश में भी उनका सहारा मिला। स्नातक की शिक्षा अर्थाभाव भाव के कारण स्नातक के प्रथम वर्ष में ही छूट गई।

## 3.3 वैवाहिक जीवन :

### वैवाहिक जीवन के विषय में स्वयं गोपाल भाई जी ने बताया कि-

9वीं कक्षा उत्तीर्ण करते ही पुरानी परम्परा के आधार पर मेरा विवाह कर दिया गया, लेकिन विवाह के बाद उस काल में लड़की विवाह करके नहीं आती थी। विवाह के बाद गवना 3-5 वर्ष बाद होता था। उसी परम्परा के आधार पर 12 वीं उत्तीर्ण होने के बाद जब मैं लगभग 21 वर्ष का था तब मेरा गवना हो गया, वर्ष 1960 था। 1965 में प्रथम पुत्र की प्राप्ति हुई एक पुत्र के बाद आगे परिवार बढ़ाने की योजना नहीं थी, किन्तु प्रकृति के नियम के सामने टिक न पाया। चार लड़के एवं एक लड़की का पिता हो गया। पत्नी के सम्बन्ध अक्षर देवता से नहीं बन पाए, हस्ताक्षर मात्र करना उनका लक्ष्य रहा। कृषि तथा पशुपालन में मेरी पत्नी **श्री मती राम कुमारी** की निपुणता आजीवन रही। आज भी वह अपने दम पर अकेले 40 बीघा कृषि भूमि का 45 गायों का अकेले खेत में मकान बनाकर गाँव- बस्ती से दूर रहकर सब को चुनौती दे रही है। आयु लगभग 76-77 वर्ष है। जैसा कि गाँव में कम पढ़े-लिखे परिवारों में अब तो शिक्षित परिवारों में भी झगड़ा ईर्ष्या की घटनाएं देखी जाती हैं, लेकिन वैवाहिक जीवन के लगभग 60 वर्षों में हिंसा की कोई घटना नहीं हुई। हमारा परस्पर का भाव व्यवहार सदा समभाव रहा।

## 3.4 सामाजिक जीवन

### सामाजिक जीवन के विषय में गोपाल भाई जी ने बताया-

वर्ष 1961 में नौकरी की खोज परिवार का सहयोग मुख्य चिन्ता थी। **स्वास्थ्य विभाग** में एक छोटे कर्मचारी के रूप में मैं चयनित हुआ किन्तु वह नौकरी तथा वहाँ के वातावरण ने नौकरी से मन उचट कर दिया। सरकारी सेवा छोड़। 1964 तक अतर्रा में ही कुछ व्यवसायिक प्रतिष्ठान में काम या नौकरी करने का प्रयास किया। 4 वर्षों की नौकरी में गल्ला व्यवसाय के अवैध धंधे ने नौकरी छोड़ने को मजबूर किया।

**प्रधानाचार्य पद**

1965 से आदर्श बाल निकेतनज जूनियर हाईस्कूल, अतर्रा में जिसकी स्थापना का एक छोटा सा निमित्त भी था उसमें प्रधानाचार्य के नाते वर्ष 1975 तक काम किया। उस काल में बाँदा जनपद का श्रेष्ठतम तथा बुन्देलखण्ड का चर्चित पूर्व माध्यमिक विद्यालय था। तत्कालीन शिक्षा मंत्री **श्री राम प्रकाश गुप्त** ने इस विद्यालय का शिलान्यास किया था। इसी काल खण्ड में **अजय दुर्ग** नामाक साप्ताहिक समाचार- पत्र का प्रकाशन भी उस काल की बड़ी घटना थी। 1975 में आपात काल प्रारम्भ की अवस्था में सरकार जेल भेजना चाहती थी। जेल न जा कर जिला एवं प्रान्त बदलकर चित्रकूट मध्य प्रदेश में रहकर आपात काल की अवस्था का विरोध करने का संकल्प लिया। इसी काल में 1975-85 **श्री सद् गुरु सेवा ट्रस्ट** में उसके ग्रामीण प्रकल्प का समन्यक के रूप में काम करने का मौका मिला। इसी अवधि में 1978-79 में **अखिल भारतीय समाज**

**सेवा संस्थान की स्थापना** किया। चित्रकूट पठारी क्षेत्र जिससे ठीक-ठीक परिचय हो चुका था। उसको कर्म क्षेत्र बनाकर कार्य प्रारम्भ किया तथा 1985 में सद्गुण सेवा ट्रस्ट से मुक्त हो कर अन्त्योदय का भाव लेकर पूरा समय देकर काम करना प्रारम्भ किया।

अब तक दास प्रथा के शिकार 5000 हजार कुल परिवारों को मुक्त कराया, 10000 एकड़ उन्हीं की अपनी जमीन पर उनको अपना कब्जा दिया, 22 छोटी बड़ी जांचो लगभग 250 मुकदमों का सामना करना पड़ा।

क्षेत्र की सामंतवादी ताकतों ने कई बार समूल समाप्त करने का प्रयास किया उनसे बचता गया संस्थान माध्यम से संघर्ष और रचना दोनों प्रकार की गतिविधियों को निरंतरता के साथ आगे बढ़ाया गया। जल प्रबन्धन में देश के अन्दर द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया। शिक्षा के क्षेत्र में लगभग 20000 बालक-बालिकाओं को शिक्षा से जोड़ने का सौभाग्य प्राप्त किया।

## 3.5 उपाधियाँ

### ➢ गोपाल जी

संगीत ठीक होने के कारण नौवीं कक्षा तक में कृष्ण का पात्र था बना तब से मुझे मेरे साथी गोपाल जी कहने लगे कहने लग गए धीरे-धीरे मेरा वास्तविक नाम गया प्रसाद खो गया।

### ➢ गोपाल भाई

सामाजिक जीवन में गाँधीवादी विचारधारा से प्रभावित होने के कारण खादी वस्त्र पहनने लगा जिससे मुझे गोपाल भाई बोला जाने लगा। यहाँ यह घटना उल्लेखनीय है 1960 को श्री मती इन्दिरा गांधी जी का आगमन अतर्रा पी जी कॉलेज, बाँदा में हुआ। उसमें स्वागत गीत गाने के लिये श्री जगपत जी ने खादी के वस्त्र भेंट किये थे। तब से आज तक मैं खादी वस्त्र ही धारण कर रहा हूँ।

### ➢ पिता जी

वर्तमान में मेरे परिवार के सभी सदस्य सारे बच्चे, माता जी, पत्नी जी सभी पिता जी कहने लगे, फिर सारे कार्यकर्ता, पाठा क्षेत्र के सभी लोग भी पिता जी कह कर पुकारने लगे। मैं इन सभी उपाधियों को स्वीकार किया।

# चतुर्थ अध्याय

## गोपाल भाई के शैक्षिक विचार

4.1 आदर्श शिक्षा
4.2 सद संस्कार की शिक्षा
4.3 जन जन को शिक्षा
4.4 व्यक्तिव का विकास
4.5 कर्तव्यों की शिक्षा
4.6 कर्म की शिक्षा
4.7 स्त्री शिक्षा
4.8 योग शिक्षा अनिवार्य
4.9 शिक्षक और विद्यार्थी
4.10 अन्य

# चतुर्थ अध्यय: गोपाल भाई के शैक्षिक विचार

## 4.1 आदर्श शिक्षा

नागरिकों को जागरूक और विवेकशील बनाने की आवश्यकता है, जब तक नागरिकों में अच्छाई-बुराई में भेद करने की विवेक शक्ति ना होगी तब तक ना तो वह अपने समाज में बुराइयों को दूर कर सकेंगे और ना उनमें अच्छाइयों का विकास कर सकेंगे।

यदि सच पूछा जाए तो इस समय हमारे भारतीय समाज में सबसे बड़ी कमी ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा की है इस कमी को दूर करने के लिए हम नैतिक एवं चारित्रिक विकास की बात प्रारम्भ में ही कर चुके हैं। परन्तु यहाँ यह कहना चाहते हैं कि नैतिकता एवं चरित्र के आधार आदर्शों और मूल्यों के निर्माण का प्रयास हमें शिशु काल से ही करना होगा और शिक्षा के किसी भी स्तर पर जारी रखना होगा। मूल्य हमारे व्यवहार के निर्देशक और नियंत्रक होते हैं। यदि हम अपने आने वाली पीढ़ी में उच्च मूल्यों का निर्माण कर सके तो फिर समझिए समाज में बुराई नाम की कोई चीज नहीं रहेगी।

## 4.2 सद संस्कार की शिक्षा

आज कल तो संस्कार की परिभाषा ही बदल रही है। आधुनिकता के इस युग में अधिकांश माता-पिता इतने व्यस्त हो गए हैं कि उनके पास बच्चों के साथ वक्त बिताने का समय नहीं है और अगर है भी तो वे इसे गंभीरता से नहीं लेते और यही वजह है कि बच्चे में संस्कार की कमी होती है। परिवार ही बच्चे की पहली पाठशाला है और माता-पिता बच्चे के शिक्षक हैं। बच्चे ही देश के भविष्य हैं और इन्हीं पर हमारे देश व समाज का विकास टिका है। अच्छे संस्कारों से ही शिक्षा पल्लवित होगी। वर्तमान समय में यह महसूस किया जा रहा है कि जैसे-जैसे शिक्षित नागरिकों का प्रतिशत बढ़ रहा है, वैसे-वैसे समाज के संस्कारों में गिरावट आ रही है। हमें संस्कारों का सौंदर्य बोध होना चाहिए और बच्चे को भी इसकी जानकारी देनी चाहिए।

विद्यार्थी जो देश का भविष्य हैं वे तनाव, अवसाद, वाह्य आकर्षण और अनुशासनहीनता के शिकार हैं। इसका कारण पाश्चात्य संस्कृति, विद्यालय या समाज ही नहीं, बल्कि संस्कारों के प्रति हमारी उदासीनता है। अत: परिवार में प्रत्येक सदस्य का दायित्व है कि बच्चों में भौतिक संसाधनों के स्थान पर संस्कारों की सौगात दें।

बच्चे को संस्कारी बनाने की पहली सीढ़ी घर है और उनमें यहीं से संस्कार डाला जा सकता है अन्यथा बड़े होने पर इसकी कोई गुंजाइश नहीं रहती। सबसे जरूरी है कि अपने बच्चे को सुबह उठकर घर के बड़े सदस्यों को पैर छूने की आदत डालें और संस्कार की शुरुआत यहीं से होती है। अगर घर में आपसे बड़ा कोई सदस्य है तो आप स्वयं पर भी इस नियम को लागू करें क्योंकि प्रैक्टिकल ज्ञान अधिक प्रभावी होता है

चाहे वो बच्चे पर हो या बड़े पर और यह मानना सही है कि देखी हुई चीजें हमेशा याद रहती है। तो इसे अपनाने में तनिक भी देरी ना करें।

## 4.3 जन जन को शिक्षा

आज भी हमारी जनसंख्या का अधिकांश भाग निरक्षर है। हमारी निरक्षरता ही प्रगति की दौड़ में हमारे पीछे रहने का एक प्रमुख कारण है। हमारे कामगार, किसान व अन्य व्यक्तियों में निर्धनता के कारण शिक्षा की ओर अपना ध्यान आकृष्ट नहीं कर पा रहे हैं। कुछ लोग किसी समस्या के चलते इस अभियान में भाग नहीं ले पाते हैं। अन्य लोगों में पढ़ाई के नाम से ही नीरसता का अनुभव होता है। शिक्षा उन्हें सुनने में ही अच्छी लगती है परन्तु वे इसमें रुचि नहीं दिखाते हैं। हमारे पास वित्तीय संसाधनों की कमी भी इस अभियान की असफलता का प्रमुख कारण बनती है। लाखों की संख्या में शिक्षित लोग बेरोजगार हैं, उन्हें दर-दर की ठोकरें खानी पड़ रही हैं। इन परिस्थितियों में अशिक्षितों को शिक्षा प्रदान करने के प्रयासों को धक्का पहुँचता है।

मेरा मानना है कि हमारा देश विकास की दौड़ में अग्रणी देशों में तब तक सम्मिलित नहीं हो सकता जब तक देश में लोग निरक्षर बने रहेंगे। यदि हम विकसित देशों की ओर देखें तो हम पाएँगे कि वहाँ शिक्षा का प्रचार-प्रसार अधिक है।वहाँ अधिकांश लोग शिक्षित हैं जिसके कारण ही वे हमसे बहुत आगे हैं। हमारे देश के कई छोटे-छोटे राज्य पूर्ण साक्षरता के लक्ष्य के करीब हैं लेकिन उत्तर व दक्षिण भारत के अधिकांश बड़े राज्यों में स्थिति चिंताजनक कही जा सकती है। अशिक्षा के कारण लोगों में अपने परिवेश, अपने समाज और अपने राष्ट्र के प्रति उचित समझदारी नहीं आ पाती है। निरक्षर लोग लोकतंत्र के मूल सिद्धान्तों को समझने में असमर्थ होते हैं। अत: हमारा सर्वशिक्षा अभियान राष्ट्र के विकास के लिए स्वयं में एक अनिवार्यता है।

## 4.4 व्यक्तिव का विकास

हर व्यक्ति जन्म से अनूठा है, सभी में कुछ विशेष ऐसा है जो हमें औरों से अलग करता है। यही विशेषताएँ तय करती हैं कि हम कौन है और किसी परिस्थिति में किस तरह व्यवहार करेंगे। ज्यादातर समय हम अपनी उन विशेषताओं के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाते है जो हमें नुकसान पहुँचाती हैं और फिर स्वयं को कमतर आंकने लगते हैं। हालाँकि हम ये जानते हैं किहर कोई अपने आप में अनूठा है, बस आवश्यकता है तो अपने भीतर सोई हुई आकांक्षाओं कोजगाने की और अपने व्यक्तित्व को निखारने की। यहीं पर व्यक्तिव विकास की प्रक्रियाएँ / तकनीके मददगार होती हैं। व्यक्तित्व विकास के द्वारा एक जड़ता और अरुचि की अवस्था में फँसा व्यक्ति, उत्साही, प्रसन्न और लक्ष्य की ओर प्रेरित व्यक्ति के रूप में परिवर्तित हो जाता है। व्यक्तित्व विकास की प्रक्रियामें व्यक्ति अपने अनूठेपन को बिना किसी हिचकिचाहट और सीमाओं

के बंधन के साझा करनासीखता है, ख़ुशी मनाना सीखता है और ये सब और अधिक उत्साह और चैतन्य के साथ होता है।

व्यक्तित्व विकास के लिए यह बहुत आवश्यक है कि आपके अंदर किताबी ज्ञान ना होकर व्यवहारिक ज्ञान होना चाहिए। किताबी ज्ञान सिर्फ लिखित परीक्षा में काम आता है, जबकि व्यवहारिक ज्ञान जीवन की हर कठिन परिस्थिति में काम आता है। व्यवहारिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमें अच्छे मित्र बनाने चाहिए। अच्छी पुस्तकें पढ़नी चाहिए। जिन लोगों का व्यवहारिक ज्ञान अच्छा होता है उनका व्यक्तित्व विकास अपने आप हो जाता है।

## 4.5 कर्तव्यों की शिक्षा

मानव को यथाशक्ति और आवश्यकतानुसार कार्य करना ही उसका कर्त्तव्य पालन कहलाता है। मानव जीवन कर्त्तव्यों का भण्डार है उसके कर्त्तव्य उसकी अवस्थानुसार छोटे और बड़े होते हैं। इनको पूर्ण करने से जीवन में उल्लास, आत्मिक शान्ति और यश मिलता है।

बचपन में माता-पिता तथा परिजनों की आज्ञा मानना ही कर्त्तव्य कहलाता है। विद्यार्थी जीवन में गुरू की आज्ञा ही उसका कर्त्तव्य बन जाता है। युवावस्था में उसके कर्त्तव्य परिजनों, पड़ोसियों के अतिरिक्त राष्ट्र के प्रति भी हो जाते हैं। उसके कन्धों पर समाज और राष्ट्र की उन्नति का भार आ पड़ता है, उसे स्वयं या अन्य कृपालु व्यक्तियों के द्वारा अशिक्षितों के लिए विद्यालय, प्रौढ़ शिक्षालय, समाज केन्द्र, रोगियों के लिए अस्पताल खुलवाने पड़ते हैं। उसे देश की कारीगरी, कला-कौशल और व्यापार की उन्नति करनी पड़ती है। उसका जीवन सदा त्याग, तपस्या और सेवा–भाव में लिप्त रहता है।

जिस प्रकार प्रत्येक शासक का कर्त्तव्य अपने शासितों की रक्षा करना है, उसी प्रकार उनका कर्त्तव्य भी उसकी मंगल कामना करना है। शिक्षक का कर्त्तव्य अपने छात्रों के हृदय पर से अज्ञानता का आवरण हटाकर उन्हें आदर्शवादी बनाना है। यही सब मानव के कर्त्तव्य है। इनको पूर्ण करने के लिए उसे अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है। उसको प्राकृतिक शक्तियाँ अपने कर्त्तव्य का पालन करती हुई पूर्ण सहयोगी देती है। इस पर भी जो कर्त्तव्य के पथ से विचलित हो जाता है, उसका समाज में निरादर होता है और उसका अपयश सर्वत्र फैल जाता है जो मानव लज्जा, भय, निन्दा और विघ्नों की चिन्ता न करके अपने-अपने कर्त्तव्य पालन पर दृढ़ रहते हैं, वे अपने जीवन में सफल होते हैं।

कर्त्तव्य पालन करने वाले व्यक्ति का अन्त: कारण स्वच्छ और सरल हो जाता है। वह साहसी और निर्भीक हो जाता है। उसके जीवन में उत्साह और आकांक्षाओं की लहरें किल्लोलें मारने लगती हैं।उसके शत्रु उससे कोसों दूर भाग जाते हैं। उसकी विघ्न बाधाएँ उसके मार्ग को छोड़ देती हैं। उसका सम्मान सर्वत्र होता है। वह महापुरुषों के रूप में पूजा जाता है। उसकी शक्ति पर लोगों को विश्वास होता है। पन्ना धाय ने अपने कर्त्तव्य को पूरा करने के लिए अपने एकमात्र पुत्र का बलिदान कर दिया था

## 4.6 कर्म की शिक्षा

मनुष्य जैसा कर्म करता है वैसा ही फल भोगता है। वस्तुत: मनुष्य के द्वारा किया गया कर्म ही प्रारब्ध बनता है। इसे यूं समझें कि किसान जो बीज खेत में बोता है, उसे ही फसल के रूप में वह बाद में काटता है। भगवान श्रीकृष्ण गीता में स्वयं कहते हैं कि कोई भी मनुष्य क्षण भर भी कर्म किए बगैर नहीं रह सकता है। आज के परिवेश में विचार किए जाने की आवश्यकता यह है कि क्या हम शत-प्रतिक्षण, दिन-प्रतिदिन जो कर्म कर रहे हैं, वह हमें जीवन में ऊंचाई की तरफ ले जा रहे हैं या फिर इस संदर्भ में कहीं लापरवाही हमें नीचे तो नहीं गिरा रही है? हम अच्छे कर्मो के सहारे स्वर्ग में जा सकते हैं और बुरे के द्वारा नरक में। मानव के पास ही प्रभु ने शक्ति प्रदान की है कि अपने अच्छे कर्मो के सहारे वह जीवन नैया को पार लगा सके।

परमात्मा का हिसाब बिल्कुल साफ है। अच्छे कर्मो का फल शुभ व बुरे का फल अशुभ। वह कभी ऐसा जोड़-घटाना नहीं करता है कि अच्छे कर्मो में से बुरे का फल निकालकर फल दे। जो जैसा करता है उसे वैसा ही भोगना पड़ता है। यदि ऐसा नहीं होता तो श्रीराम भगवान होकर पिता दशरथ को बचा लेते, श्रीकृष्ण अभिमन्यु को बचा लेते, पर ऐसा हुआ नहीं, क्योंकि सबको अपने किए हुए शुभ या अशुभ कर्मो का फल अवश्य भोगना पड़ता है। अच्छे फल की प्राप्ति के लिए हम अच्छे कर्मो को करने के लिए प्रतिबद्ध हों तो बात बनती है। हम अच्छे कर्म करते नहीं और अपेक्षा अच्छाई की करते हैं। यदि हम थोड़ा-सा सजग व सेवारत हो जाएं तो बात बनते देर नहीं लगेगी। अच्छे कर्मो से यदि स्वर्ग मिल भी जाए तो उसे स्थाई नहीं समझना चाहिए। स्वर्ग का सुख-ऐश्वर्य भोगने के पश्चात इन्द्र जैसे लोगों को भी अच्छे कर्मो के अभाव में पुन: नाना प्रकार की योनियों में भटकना पड़ता है। प्रभु कृपा से जीवन में यदि सत्ता, संपत्ति व सत्कार मिले तो उसे बचाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि हम अपने अच्छे कर्मो में बढ़ोतरी करें। जीवन के सच्चे मूल्य को समझें। प्रभु प्राप्ति में जो कर्म सहायक हों उन्हें ही करने का प्रयास करें। प्रभु को अपने से ज्यादा उसके बनाए गए नियम प्रिय हैं। जो नियमों में बंधकर जीवन यापन करता है वह लक्ष्य की प्राप्ति नि:संदेह करता है। कर्म को यदि हम पूजा बना लें तो बन्धन से मुक्ति भी सम्भव है।

सम्पूर्ण जीवन एक संघर्ष है और हमें जीवन की लड़ाई जीतने के लिए अपनी कड़ी मेहनत के माध्यम से चौकस रहना होगा। इस ग्रह पर जन्म लेने वाले सभी जीवन एक दिन मर जाएगे। इसलिए, अपने जीवन को सबसे बेहतर तरीके से चलाने के लिए, हमें अपने काम के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए। समय किसी का इंतजार नहीं करता है इसलिए हमें अपने हर मिनट को उपयोगी बनाना चाहिए। हमारा जीवन विभिन्न घटनाओं और कार्यों से भरा हुआ है। लोग धन्य हैं जो अपना काम समय पर पूरा करते हैं। हालाकि, जो लोग नहीं करते हैं, या फिर अपने कार्य को करने में संकोच या संकोच करते हैं, वे जीवन में कुछ भी हासिल नहीं करते हैं। आलसी लोग कभी भी गौरव की ऊँचाइयों को प्राप्त नहीं कर सकते हैं जबकि सक्रिय लोग बहुत ऊँचाइयों तक पहुँचते हैं।

हमें अपने काम को पूजा मानना चाहिए और कड़ी मेहनत में व्यस्त रहने की कोशिश करनी चाहिए। काम जीवन में अर्थ जोड़ता है और आत्मविश्वास और मोक्ष लाता है। काम हमारे शरीर और दिमाग के लिए एक सबसे अच्छा व्यायाम है जो जीवन में वास्तविक आनन्द लाता है। कार्य कौशल विकास के साथ-साथ नए अवसरों के लिए भी रास्ता निकालता है।

## 4.7 स्त्री शिक्षा

भारतीय समाज के सही आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए नारी शिक्षा बेहद ज़रूरी है। महिला एवं पुरुष दोनों ही एक सिक्के के दो पहलू हैं। जिस तरह से साइकिल का सन्तुलन दोनों पहियों पर निर्भर होता है उसी तरीके से समाज का विकास भी पुरुष और महिला के कन्धों पर आश्रित है। दोनों ही देश को नई ऊँचाईयों तक ले जाने की क्षमता रखते हैं इसलिए दोनों को ही बराबर की शिक्षा का हक़ मिलना ज़रूरी है। अगर इन दोनों में से किसी भी एक की शिक्षा का स्तर गिरा तो समाज की प्रगति होना नामुमकिन है।

नारी को समाज में उसका उचित स्थान दिलवाने के लिए एक ओर राजा राममोहन, स्वामी दयानन्द सरस्वती, महात्मा गाँधी जैसे महान् सुधारकों ने भरसक प्रयत्न किये,परन्तु आज भी जीवन के हर क्षेत्र में उसके साथ भेदभाव होता है। आज भी समाज में किसी न किसी रूप में नारी का शैक्षणिक स्तर पर शोषण किया जा रहा है। महिलाओं के साथ अमानवीय व्यवहार और छेड़छाड़, घरों, सड़कों, बगीचों, कार्यालयों सभी स्थानों पर देखा जा सकता है। बलात्कार, दहेज उत्पीड़न, हत्या आदि के जो मामले प्रकाश में आते हैं, उनमें से अधिकांश सबूतों के अभाव से टूट जाते हैं। बाल-विवाह की त्रासदी अनेक कन्याएं भोग रही हैं जो चाहे इन सभी का कारण नारी को अशिक्षित बनाकर उसे उसके मानवीय अधिकारों से वंचित करना है। वास्तविकता यह है कि एक शिक्षित नारी ही अपने परिवार की अशिक्षित नारियों को पढ़ाकर अपने अर्जित ज्ञान व विकसित क्षमता का लाभ पूरे परिवार को दे सकती है। नारी सशक्तीकरण की आधारशिला भी शिक्षा ही है। शिक्षा द्वारा नारी सशक्त और आत्मनिर्भर बनकर अपने व्यक्तित्व का उचित रूप से विकास कर सकती है, परन्तु आज नारी-सशक्तीकरण के क्षेत्र की मुख्य बाधाएँ हैं जैसे-महिलाओं में व्याप्त अशिक्षा, अधिकारों के प्रति उदासहीनता, सामाजिक कुरीतियाँ तथा पुरुषों का महिलाओं पर प्रभुत्व आदि। इन सभी समस्याओं से निजात दिलवाने का एक मात्र साधन शिक्षा ही है इसलिए समाज के आर्थिक, सामाजिक, साँस्कृतिक और राजनीतिक विकास के लिए महिलाओं का शिक्षित होना अति आवश्यक है।

वर्तमान समय में राष्ट्रीय स्तर पर यह महसूस किया जा रहा है कि नारी शिक्षा की दिशा में ठोस प्रयास के बिना समान का सन्तुलित विकास सम्भव नहीं है। इसलिए नारी-शिक्षा की दिशा में लगातार प्रयास किया जा रहा है। आज भारत में अनेक विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालय चलाये जा रहे हैं। महिलाओं को शिक्षित बनाने का वास्तविक अर्थ उसे प्रगतिशील और सभ्य बनाना है ताकि उसमें तर्क-शक्ति का विकास हो सके। यदि नारी शिक्षित होगी तो वह अपने परिवार की व्यवस्था ज्यादा अच्छी तरह से चला

सकेगी। एक अशिक्षित नारी न तो स्वयं का विकास कर सकती है और न ही परिवार के विकास में सहयोग.दे सकती है। शैक्षणिक स्तर पर कन्या शिक्षा की सदैव से ही उपेक्षा की जाती रही है व उसे केवल घरेलू कामकाजों को सीखने तथा पुत्र-सन्तान को जन्म देने के सन्दर्भ में ही प्रकाशित किया जाता है। इसलिए नारी सबसे पहले पूर्णता शिक्षित हो तभी वह शोषण व अत्याचारों के चक्रव्यूह से निकल कर मानवीय जीवन व्यतीत कर सकेगी।

## 4.8 योग शिक्षा अनिवार्य

जिस तरह शिक्षा के बिना जीवन अधूरा है ठीक उसी तरह योग के बिना अच्छे स्वास्थ्य की कल्पना भी बेकार है। वैज्ञानिक अविष्कारों के इस युग में शरीर को फिट रखने के लिए असंख्य संसाधन मौजूद है लेकिन क्या यह साधन सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध है, नहीं! क्योंकि यह विलास सामग्री हैं जिसका आनंद कुछ लोग ही ले पाते हैं। लेकिन योग सभी के लिए समान रूप से उपलब्ध है, इसमें किसी भी तरह का कोई खर्चा नहीं है। योग का आनंद और स्वास्थ्य लाभ सभी व्यक्ति समान रूप से उठा सकते है बस जरूरत है सही तरह से योग को सीखने की। शरीर, मन और आत्मा को नियंत्रित करने में योग मदद करता है। शरीर और मन को शांत करने के लिए यह शारीरिक और मानसिक अनुशासन का एक संतुलन बनाता है। यह तनाव और चिंता का प्रबंधन करने में भी सहायता करता है और आपको आराम से रहने में मदद करता है। योग आसन शक्ति, शरीर में लचीलेपन और आत्मविश्वास विकसित करने के लिए जाना जाता है।

विद्यार्थियों के लिए योग बहुत ही लाभदायक माना गया है इससे बच्चों के मन-मस्तिष्क में स्थिरता आती है। बच्चों को अपनी पढ़ाई में ध्यान केंद्रित करने में भी सहायता मिलती है। योग के चमत्कार को तो पूरी दुनिया ने स्वीकार किया है इसी वजह से दुनिया के अधिकांश देशों में योग शिक्षा को अनिवार्य किया गया है।

### योग के फायदे

- मांसपेशियों के लचीलेपन में सुधार।
- शरीर के आसन और एलाइनमेंट को ठीक करता है।
- बेहतर पाचन तंत्र प्रदान करता है।
- आंतरिक अंग मजबूत करता है।
- अस्थमा का इलाज करता है।
- मधुमेह का इलाज करता है।
- दिल सम्बन्धित समस्याओं का इलाज करने में मदद करता है।
- त्वचा के चमकने में मदद करता है।

- शक्ति और सहनशक्ति को बढ़ावा देता है।
- एकाग्रता में सुधार।
- मन और विचार नियंत्रण में मदद करता है।
- चिंता, तनाव और अवसाद पर काबू पाने के लिए मन शांत रखता है।
- तनाव कम करने में मदद करता है
- रक्त परिसंचरण और मांसपेशियों के विश्राम में मदद करता है।
- वज़न घटाना।
- चोट से संरक्षण करता है।

ये सब योग के लाभ हैं। योग स्वास्थ्य और आत्म-चिकित्सा के प्रति आपके प्राकृतिक प्रवृत्ति पर ध्यान केंद्रित करता है।

## 4.9 शिक्षक और विद्यार्थी

शिक्षक वह होते हैं जो अपनी ज्ञान की ज्योति से हमें प्रकाशित करते हैं और हमारा मार्गदर्शन करते हैं। यह किसी भी आयु वर्ग के लोग हो सकते हैं और इनका हमारे जीवन को सफल बनाने में बहुत बड़ा योगदान होता है। इतिहास में जितने भी महान पुरुष हुए सभी के शिक्षकों का भी जिक्रहमें मिलता है। शिक्षक जिसे हम गुरु कह कर भी बुलाते हैं, और हमारे अभिलेखों में गुरु को वंदनीय एवं पूजनीय बताया गया है। हम प्रत्येक गुरुपूर्णिमा के अवसर पर इनकी पूजा भी करते हैं। हमारे पुराणों में गुरु को भगवान से बढ़ कर बताया गया है, वो इस लिये क्यों कि यह माना जाता है कि धरती पर मनुष्य जब आया तो उसे भगवान का बोध नहीं था, वह गुरु ही है जिसने मनुष्य को भगवान से अवगत कराया। इस लिये पहले गुरु की पूजा की जाती है और उसके बाद भगवान की। हमारे हिन्दू मान्यताओं में शिक्षक को भगवान से भी उपर माना जाता है।

### 4.9.1 शिक्षक की उपयोगिता

किसी भी समाज को विकसित करने के लिये, यह महत्वपूर्ण है कि वहाँ के लोग शिक्षित हों और एक शिक्षक ही ऐसे समाज का निर्माण कर सकता है। अर्थात शिक्षक को हम किसी देश के प्रगति का सूचकमान सकते हैं। वे बच्चों को शिक्षित करते हैं और अपनी ज्ञान की आभा से उन्हे चमकना सिखाते हैं, जिससे बच्चे क्षितिज से निकलते नन्ही किरणों से सफर तय कर के, नभ तल पर आकर सूर्य की तरह चमकना सीख जाते हैं और देश का नाम रोशन करते हैं। मनुष्य चाहे जितना भी बड़ा क्यों न हो जाए, उसे कभी न कभी एक मार्गदर्शक कि आवश्यकता जरूर पड़ती है और आपका मार्गदर्शक ही आपका शिक्षक व गुरु है। गुरु की सीमा केवल स्कूली पुस्तकों मात्र तक सीमित नहीं होती, जरूरत पड़ने पर वे सच्चे दोस्त भी बन जाते हैं और आपकी हर प्रकार से सहायता करते हैं।

ऐसे तो हर वह शक्स शिक्षक कहलाता है जिससे आप कुछ सीखते हैं, चाहे वह आपकी माँ ही क्यों न हो। माँ किसी भी व्यक्ति की पहली शिक्षक होती है जो उसे चलना, बोलना जैसी मूलभूत आवश्यकताए सिखाती हैं। अध्यापक वह व्यक्ति है जो आपको स्कूल में शिक्षा देते हैं, गुरु जो जीवन सम्बन्धी ज्ञान देते हैं और शिक्षक इन दोनो के मिश्रण को कहते है, जो आवश्यकता पड़ने पर हर प्रकार से आपको अज्ञान के अंधेरे से बाहर निकालते हैं। हम अपने शिक्षकों का जितना भी गुणगान करें कम ही है और छात्रों के जीवन मे उनके स्कूली शिक्षकों का बहुत योगदान होता है, वे उन्हे सदैव याद रखते हैं। महात्मा गाँधी, गोपाल कृष्ण गोखले को अपना राजनैतिक गुरु मानते थे, ठीक इसी प्रकार भले किसी के जीवन में गुरु अलौकिक रूप से उपस्थित रहते हैं, परन्तु उसके शिष्य के अच्छे प्रदर्शन से गुरु की चर्चा खुद ब खुद होने लगती है।

## 4.9.2 शिक्षाक समाज निर्माता

शिक्षक का दर्जा समाज में हमेशा से ही पूजनीय रहा है। कोई उसे गुरु कहता है, कोई शिक्षक कहता है, कोई आचार्य कहता है, तो कोई अध्यापक या टीचर कहता है ये सभी शब्द एक ऐसे व्यक्ति को चित्रित करते हैं, जो सभी को ज्ञान देता है, सिखाता है और जिसका योगदान किसी भी देश या राष्ट्र के भविष्य का निर्माण करना है। सही मायनो में कहा जाये तो एक शिक्षक ही अपने विद्यार्थी का जीवन गढ़ता है। शिक्षक ही समाज की आधारशिला है। एक शिक्षक अपने जीवन के अन्त तक मार्गदर्शक की भूमिका अदा करता है और समाज को राह दिखाता रहता है, तभी शिक्षक को समाज में उच्च दर्जा दिया जाता है।

माता-पिता बच्चे को जन्म देते हैं। उनका स्थान कोई नहीं ले सकता, उनका कर्ज हम किसी भी रूप में नहीं उतार सकते, लेकिन शिक्षक ही हैं जिन्हें हमारी भारतीय संस्कृति में माता-पिता के बराबर दर्जा दिया जाता है क्योंकि शिक्षक ही हमें समाज में रहने योग्य बनाता है। इसलिये ही शिक्षक को समाज का शिल्पकार कहा जाता है। गुरु या शिक्षक का सम्बन्ध केवल विद्यार्थी को शिक्षा देने से ही नहीं होता बल्कि वह अपने विद्यार्थी को हर मोड़ पर उसको राह दिखाता है और उसका हाथ थामने के लिए हमेशा तैयार रहता है। विद्यार्थी के मन में उमड़े हर सवाल का जवाब देता है और विद्यार्थी को सही सुझाव देता है और जीवन में आगे बढ़ने के लिए सदा प्रेरित करता है। एक शिक्षक या गुरु द्वारा अपने विद्यार्थी को स्कूल में जो सिखाया जाता है या जैसा वो सीखता है वे वैसा ही व्यवहार करते हैं। उनकी मानसिकता भी कुछ वैसी ही बन जाती है जैसा वह अपने आस-पास होता देखते हैं। इसलिए एक शिक्षक या गुरु ही अपने विद्यार्थी को आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। सफल जीवन के लिए शिक्षा बहुत उपयोगी है जो हमें गुरु द्वारा प्रदान की जाती है। विश्व में केवल भारत ही ऐसा देश है जहाँ पर शिक्षक अपने शिक्षार्थी को ज्ञान देने के साथ-साथ गुणवत्तायुक्त शिक्षा भी देते हैं, जोकि एक विद्यार्थी में उच्च मूल्य स्थापित करने में बहुत उपयोगी है। जब अमेरिका जैसे शक्तिशाली देश का राष्ट्रपति आता है तो वह भी भारत की गुणवत्तायुक्त शिक्षा की तारीफ करता है। किसी भी राष्ट्र का आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक विकास उस देश की शिक्षा पर निर्भर करता है। अगर राष्ट्र की

शिक्षा नीति अच्छी है तो उस देश को आगे बढ़ने से कोई रोक नहीं सकता अगर राष्ट्र की शिक्षा नीति अच्छी नहीं होगी तो वहाँ की प्रतिभा दब कर रह जायेगी बेशक किसी भी राष्ट्र की शिक्षा नीति बेकार हो, लेकिन एक शिक्षक बेकार शिक्षा नीति को भी अच्छी शिक्षा नीति में तब्दील कर देता है। शिक्षा के अनेक आयाम हैं, जो किसी भी देश के विकास में शिक्षा के महत्व को अधोरेखांकित करते हैं। एक शिक्षक द्वारा दी गयी शिक्षा ही शिक्षार्थी के सर्वांगीण विकास का मूल आधार है। शिक्षकों द्वारा प्रारम्भ से ही पाठ्यक्रम के साथ ही साथ जीवन मूल्यों की शिक्षा भी दी जाती है। शिक्षा हमें ज्ञान, विनम्रता, व्यवहार, कुशलता और योग्यता प्रदान करती है। शिक्षक को ईश्वर तुल्य माना जाता है। आज भी बहुत से शिक्षक शिक्षकीय आदर्शों पर चलकर एक आदर्श मानव समाज की स्थापना में अपनी महती भूमिका का निर्वहन कर रहे हैं। लेकिन इसके साथ -साथ ऐसे भी शिक्षक हैं जो शिक्षक और शिक्षा के नाम को कलंकित कर रहे हैं, ऐसे शिक्षकों ने शिक्षा को व्यवसाय बना दिया है, जिससे एक निर्धन शिक्षार्थी को शिक्षा से वंचित रहना पड़ता है और धन के अभाव से अपनी पढ़ाई छोड़नी पड़ती है। आधुनिक युग में शिक्षक की भूमिका अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शिक्षक वह पथ प्रदर्शक होता है जो हमें किताबी ज्ञान ही नहीं बल्कि जीवन जीने की कला भी सिखाता है।

आज के समय में शिक्षा का व्यवसायीकरण और बाजारीकरण हो गया है। शिक्षा का व्यवसायीकरण और बाजारीकरण देश के समक्ष बड़ी चुनौती है। पुराने समय में भारत में शिक्षा कभी व्यवसाय या धंधा नहीं थी। गुरु एवं शिक्षक ही वो हैं जो एक शिक्षार्थी में उचित आदर्शों की स्थापना करते हैं और सही मार्ग दिखाते हैं। एक शिक्षार्थी को अपने शिक्षक या गुरु प्रति सदा आदर और कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए। किसी भी राष्ट्र का भविष्य निर्माता कहे जाने वाले शिक्षक का महत्व यहीं समाप्त नहीं होता क्योंकि वह ना सिर्फ हमको सही आदर्श मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं बल्कि प्रत्येक शिक्षार्थी के सफल जीवन की नींव भी उन्हीं के हाथों द्वारा रखी जाती है।

### 4.9.3 प्रशिक्षित एवं ज्ञानी शिक्षक

देश के शिक्षा क्षेत्र में देखी जाने वाली अनेक खामियों में से एक है बच्चों में कम सीखने की स्थिति का लगातार बना रहना...यानी पढ़ने के बाद भी बच्चों के सीख पाने पर प्रश्नचिन्ह।

एक अच्छा शिक्षक अपने विषय का स्वामी होता है परन्तु एक महान शिक्षक एक उत्कृष्ट सम्प्रेषक होता है। वह न केवल अपनी पाठयक्रम आवश्यकताओं का संचालन करता है बल्कि बुद्धिमत्तापूर्ण प्रश्न भी पूछता है। वह एक सार्थक ढंग से छात्रों के लिये पाठ्यक्रम के अधितम परिणामों पर विचार विमर्श हेतु मंच उपलब्ध करवाता है। एक कहावत है, एक अच्छा शिक्षक एक चिकित्सक की तरह होता है जो अज्ञान को दूर करता है और एक कलाकार के तौर पर सृजनात्मकता की प्रेरणा देता है। कुशल शिक्षक अपने छात्रों को ध्यानपूर्वक सुनते हैं, उनके विचारों और प्रश्नों का विश्लेषण करते हैं और सृजनात्मक तरीके से प्रभावी फीडबैक भी देते हैं।

### 4.9.4 सेवा भाव एवं परोपकारी

मदद की जाती है। इसके बाद शिक्षक उस भाव को निखारते हैं। लेकिन निःस्वार्थ भाव से की गई सेवा के ही सही मायने हैं, जिसका उपयोग निजी आवश्यकता या उन्नति के लिए नहीं किया गया हो। साधनों की कमी के बावजूद जिसके सेवा भाव में कमी न आए वह शुद्ध सेवा है। यही सेवा जीवन को प्रगति के पथ पर ले जाती है।

सेवा के दो स्वरूप होते हैं। एक वह जो अपनी सुख सुविधा और आराम के लिए सेवा ली जाए। दूसरी वह सेवा जो सहायता, सहयोग व सहानुभूति के रूप में की जाती है। अभिभावकों को बच्चों में परोपकार-भाव को जाग्रत करने का प्रयत्न करना चाहिए। इसका प्रारम्भ घर की व्यवस्था ठीक करते समय चीजों को उठाने, रखने में अपने हाथ बंटवाकर, छोटे भाई-बहनों को पढ़ाने-लिखाने और स्कूल जाने-आने में सहयोग करा कर तथा ऐसी सेवायें लेकर किया जा सकता है। जिससे उसे उसका अभ्यास हो और रुचि उत्पन्न हो। साथ ही समय समय पर बच्चे को परोपकार के महत्व और उससे होने वाले लाभ के बारे में भी बतलाना चाहिए। हालांकि बच्चों को अनेक अवसरों पर परोपकार की शिक्षा दी जाती है। लेकिन उसका कोई लाभ नहीं होता क्योंकि सिर्फ औपचारिकता के रूप में कार्यक्रम के माध्यम से उन्हें मौखिक उपदेश तक ही सीमित रखा जाता है। वास्तविक प्रेरणा नहीं दी जाती। वास्तविक प्रेरणा तो बच्चों को ठीक-ठीक अभिभावकों से ही प्राप्त हो सकती है। ऐसे कामों के लिए दूसरों की अपेक्षा माता-पिता की बातें सबसे अधिक प्रभाव डालती हैं। जिसका विस्तार शिक्षक करते हैं। सभी मनुष्यों में सहज ही सेवा और सहयोग की प्रवृति होती है। जरूरत बस उस संस्कार को सहेजने और विकसित करने की है। छोटे बच्चे अपने अभिभावक की बात को आसानी से मान लेते हैं, इसलिए उन्हें उनकी छोटी आयु में ही ऐसी कई बातें समझानी चाहिए जो उनके भविष्य की नींव के लिए आवश्यक है। देखा जाए तो इसके दूसरे प्रभाव भी सामने आते हैं। कई बार अभिभावक या शिक्षक बच्चों को पैसे या उपहार का प्रलोभन देकर उनसे वह कार्य करवाते हैं जिसे उन्हें स्वेच्छा से करनी चाहिए। ऐसा करने से बच्चे में गलत प्रवृति का भी जन्म हो सकता है। इसलिए बदले में सेवा का भाव विकसित करने के बजाय उसे मन के भीतर जागृत करने की आवश्यकता है।जीवन में परोपकार और सेवा का भाव बहुत आवश्यक है। इससे व्यक्तित्व का विकास होता है। सेवा करने से लोग आप के व्यक्तित्व और कार्य को याद करते हैं। किसी भी पीड़ित का भला करने या उसकी मदद करने से मन को शांति मिलती है। किसी भी बच्चे द्वारा किए जाने वाला काम उसके प्रयत्न को दर्शाता है जिसकी सराहना करनी चाहिए। लेकिन यदि बच्चा उसी कार्य को निःस्वार्थ भाव से और विनम्रता से करे तो उसमें सेवा भाव की वृद्धि होना कहेंगे। वह सबके प्यारे भी होते हैं। बच्चे में जैसे-जैसे सेवा कार्य बढ़ता जाता है उसमें अधिक से अधिक सदभावना का भी विकास होता है। यह समाज, राष्ट्र और उसके स्वयं की उन्नति के लिए लाभदायक होता है। फिर वह राष्ट्र और समाज का एक स्वस्थ नेतृत्व करने योग्य और सक्षम बन सकता है। देश से लेकर विश्व के इतिहास में ऐसे अनेकों उदाहरण हैं, जहां साधारण व्यक्ति ने सामान्य सेवा भाव के मार्ग पर चलकर महानता

को प्राप्त किया है। लेकिन सेवा भाव में दोष होते ही पतन में भी देर नहीं लगी और इसके भी उदाहरण कम नहीं हैं।

बच्चों में सेवा भाव का विकास नि:स्वार्थ भावना के संस्कार के समान है। जिससे उसके उत्साह और कार्य करने क्षमता में दिन-प्रतिदिन विकास होता है। जिस सेवा स्वार्थ होता है वह आगे चलकर मन पर बोझ बन जाता है। जिससे निकल पाना कई बार बहुत मुश्किल हो जाता है। इसलिए इस भाव की निर्मलता को बनाए रखना आवश्यक है। यदि सेवा को कोई तात्कालिक मूल्य न लिया जाए और भविष्य में इसके लाभ को ध्यान में रखा जाए तो भी यह एक प्रकार का स्वार्थ ही है। क्योंकि इस तरह यह भाव अपने सेवा मूल्यों के बदले में एक साथ उसका मोल वसूलने के बराबर होगा। जो व्यक्तित्व उन्नति में बाधक होगा। इसलिए वर्तमान और भविष्य के लाभ की भावना से अलग होकर बच्चों में नि:स्वार्थ सेवा का भाव ही सदा के लिए विकसित करना चाहिए।

### 4.9.5 मानवता का पूरक

मानवता यह मनुष्य का सबसे धर्म होता हैं। मानवता यह हर एक मनुष्य के लिए जरुरी हैं। अगर कोई मनुष्य दूसरों की सहायता करके मानवता नहीं दिखायेगा तो उस मनुष्य की सहायता भगवन भी नहीं करता हैं। जिस मनुष्य के पास मानवता नहीं होती हैं उसका जीवन निरर्थक होता हैं। इस धरती पर मनुष्य का जन्म इसलिए हुआ हैं की, वह दुनिया में कुछ ऐसा करके दिखाए जो कई सालों तक दुनिया उसे याद रखे। मनुष्य यह एक ऐसा प्राणी हैं, जो समाज में सभी लोगों के साथ मिल जुलकर रहता हैं। मनुष्य कोई भी कार्य कभी अकेले नहीं कर सकता हैं। अगर इस धरती पर मनुष्य मानवता को भूल जायेगा तो उसे अपना जीवन जीना बहुत मुश्किल हो जायेगा।

आज के समय में मनुष्य एक-दुसरे से सबसे ज्यादा प्रगति करना चाहता हैं और उसके चक्कर में वो स्वार्थी बनता जा रहा हैं। वो मानवता की भावना को भूलता जा रहा हैं। आज मनुष्य दूसरों की सहायता करना तो दूर ही हैं। आज वो अपने फायदे के लिए दूसरों को नुकसान भू पहुँचाने के लिए घबराता नहीं हैं।

### 4.9.6 वेतन भोगी आदर्श शिक्षक

आज की व्यवस्था में शिक्षण एक पेशा है और शिक्षक वेतन भोगी कर्मचारी है। शिक्षक आज विद्या दानी न होकर नौकरी करने वाल व्यक्ति रह गये है। अत: उनमे भी अन्य विभागों के कर्मचारियों की भाँती काम से जी चुराने, अयोग्य होते हुए भी तिकडम या सिफारिश से नियुक्ति पा लेने, गुटबन्दी, कक्षा में न पढाकर ट्यूशन से धन कमाने की बुरी प्रवृतिया पनप चुकी है। ऐसी स्थिति में आदर्श अध्यापकों का नितांत अभाव ही दिखाई देता है।

आदर्श अध्यापक नियमित रूप से और ठीक समय का पालन करता है। आदर्श अध्यापक सदैव निर्मल और निष्पक्ष होता है उसके लिए सभी विद्यार्थी समान है। वह सब विद्यार्थियों के लिए पिता समान होता है। आदर्श अध्यापक अपने आदर्श और रहन-सहन में सादे होते है। उनके पास जीवन की चमक धमक के लिए कोई समय नही होता। वह अपनी फालतू धनराशि को पुस्तको और पत्र-पत्रिकाओं पर ही खर्च करता है।

### 4.9.7 अद्यतन पूर्ण शिक्षा

भारतीय शिक्षा प्रणाली में प्रैक्टिकल ज्ञान कम और किताबी ज्ञान ज्यादा होता है। लेकिन वास्तव में यह सिद्धांत सही नहीं है। यह बात सही है की, एक किताब में उस विषय की पूरी जानकारी रहती है, जिसके बारे में आप जानना चाहते हो। लेकिन अपने इस शिक्षा प्रणाली में कुछ विषय ऐसे है, जिन्हे समझने के लिए किताबी ज्ञान की नहीं बल्कि प्रैक्टिकल ज्ञान की जरुरत है।

जैसे की विज्ञान, किसी भी प्रकार के खेल, कला और ऐसे ही बहुत सारे विषय है। जिनको प्रैक्टिकल के बिना अच्छे से नहीं समझा जा सकता है। इसलिए वास्तविक ज्ञान की कमी के कारण वास्तविक दुनिया में बाहर जाने पर यह अभ्यास उन्हें हैरान कर देता है। भारतीय शिक्षा प्रणाली खेल और कला के महत्व पर पर्याप्त जोर नहीं देती है। छात्रों को हमेशा हर समय अध्ययन करने के लिए कहा जाता है जहां उन्हें खेल और कला जैसी अन्य गतिविधियों के लिए समय नहीं मिलता है। जैसा कि भारतीय शिक्षा प्रणाली दिन-ब-दिन गिरती जा रही है, इस पर विचार करना और कुछ प्रभावी समाधान तैयार करना महत्वपूर्ण है जो हमारी प्रणाली में सुधार कर सकें और आने वाली पीढ़ियों के लिए एक उज्ज्वल भविष्य बना सकें। हम स्कूलों और कॉलेजों में कौशल विकास कार्यक्रम शुरू करके इसे शुरू कर सकते हैं जो ग्रेड पर कम और प्रतिभा और व्यावहारिक ज्ञान पर अधिक ध्यान केंद्रित करेंगे। साथ ही, स्कूल में पढ़ाए जाने वाले विषय व्यावहारिक ज्ञान के साथ होने चाहिए। इससे छात्रों को अवधारणा को बेहतर ढंग से समझने और अधिक परिणाम प्राप्त करने में मदद मिलेगी। हर साल पाठ्यक्रम को अद्यतन किया जाना चाहिए ताकि वृद्ध शिक्षा मॉडल को दूर किया जा सके।

इसके अतिरिक्त, सरकारी और निजी स्कूलों को अपने ज्ञान और योग्यता के अनुसार शिक्षकों के वेतनमान में वृद्धि करनी होगी। कई स्कूल कम योग्यता के साथ शिक्षकों को नियुक्त करते हैं ताकि कम वेतन की पेशकश की जा सके, हालांकि, यह छात्रों के सीखने को प्रभावित करता है। संक्षेप में, भारत की शिक्षा प्रणाली को समाज के साथ-साथ राष्ट्र की बेहतरी के लिए बदलना होगा।

## 4.10 अन्य

### 4.10.1 वनवासी शिक्षा

भारत के उपेक्षित और आदिवासी बहुल सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में विद्यालय फाउंडेशन द्वारा शिक्षा का संचालित किए जा रहे हैं। ग्रामीण भारत के उत्थान में शिक्षा के महत्व को समझने वाले कई संगठन इसमें सहयोग दे रहे हैं। वर्तमान में 2200 बच्चों के साथ शिक्षा अभियान प्रारम्भ है जिन्हें मुफ्त शिक्षा उपलब्ध करा रहा है। यहां बुनियादी शिक्षा ही नहीं दी जाती बल्कि समाज के उपेक्षित वर्गो को स्वास्थ्य, विकास और स्वरोजगार सम्बन्धी शिक्षा भी दी जाती है।

### 4.10.2 बंधुआ मजदूरी उन्मूलन

भारत में प्रचलित विभिन्न अन्य सामाजिक बुराइयों की तरह, बंधुआ मजदूरी भी हमारी जाति-व्यवस्था से जुडी हुई है। मुख्य रूप से, यह उच्च जातियों से संबंधित व्यक्ति हैं, जो शोषक हैं और निम्न जाति के लोग शोषित हैं।

बंधुआ मजदूर से तात्पर्य किसी मजदूर से अत्यधिक कार्य करवाने के बाद भी उन्हें मजदूरी न देना और जीवन भर उसको मजदूर बनाकर शोषण करने से है। यदि कोई मजदूर ऋण न चुका पाए तो उसके बदले उसे जीवन भर कार्य करना पड़ता था। वास्तव में इस अमानवीय प्रथा का उपयोग शोषक जमींदारों या साहूकारों द्वारा अवैतनिक श्रम प्राप्त करने के लिए एक चाल के रूप में किया गया है। इस प्रणाली को समाज के कुछ सामाजिक और आर्थिक रूप से शक्तिशाली वर्गों को समाज के कमजोर वर्गों का शोषण करने में सक्षम बनाने के लिए डिजाइन किया गया था।

### 4.10.3 पलायन को रोकना

भारत में गांवों से शहर की ओर पलायन की प्रवृत्ति बेहद ज्यादा है। जहां गांव में विद्यमान गरीबी, बेरोजगारी, कम मजदूरी, मौसमी बेरोजगारी, जाति और परम्परा पर आधारित सामाजिक रुढ़ियां, अनुपयोगी होती भूमि, वर्षा का अभाव एवं प्राकृतिक प्रकोप इत्यादि कारणों ने न सिर्फ लोगों को बाहर भेजने की प्रेरणा दी वही शहरों ने अपनी चकाचौंध सुविधाएं, युवाओं के सपने, रोजगार के अवसर, आर्थिक विषमता, निश्चित और अनवरत अवसरों में आकर्षित करने में कोई कसर नहीं छोड़ी।

हमारे देश की ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत निरंतर घट रहा है जिसके पीछे मुख्य कारण गाँवों से शहरों की ओर पलायन है। आज देश को विकसित देशों की श्रेणी में लाने के लिए गाँवों में बुनियादी विकास मूल आवश्यकता है। गाँवों में शहरों जैसी सुविधाए उपलब्ध करानी होंगी। देश में व्याप्त विभिन्न कुरुतियों को समूल नष्ट करना होगा तथा हर जगह शिक्षा की अलख जगानी होगी। शिक्षा के माध्यम से ही ग्रामीण जनता में जन चेतना का उदय होगा तथा वे विकास की मुख्यधारा से जुड़ सकेंगे।

### 4.10.4 मानवाधिकार का दर्शन

मानवाधिकार अधिकारों का एक समूह है, जो प्रत्येक मानव का अधिकार है। हर इंसान को इन अधिकारों से विरासत में मिला है, चाहे वह किसी भी जाति, पंथ, लिंग, आर्थिक स्थिति से सम्बन्धित हो। मानव अधिकार यह सुनिश्चित करने के लिए बहुत महत्वपूर्ण है कि सभी मनुष्यों के साथ समान व्यवहार हो। वे वास्तव में दुनिया में अच्छे जीवन स्तर के लिए आवश्यक हैं।

मानवाधिकार किसी देश के नागरिकों के हितों की रक्षा करता है। यदि आप एक इंसान हैं तो आप मानव अधिकारों के लिए उत्तरदायी हैं। मानव अधिकार आपको सुख और समृद्धि से भरा अच्छा जीवन देने में मदद करेंगे। किसी भी व्यक्ति के जीवन, स्वतंत्रता, समानता और सम्मान का अधिकार ही मानव अधिकार है। मनुष्य योनि में जन्म लेने के साथ मिलने वाला प्रत्येक अधिकार मानवाधिकार की श्रेणी में आता है। संविधान में बनाये गए अधिकारों से बढ़कर महत्व मानवाधिकारों का माना जा सकता है। इसका कारण यह है कि ये ऐसे अधिकार हैं जो सीधे प्रकृति से सम्बन्ध रखते हैं जैसे जीने का अधिकार केवल कानून सम्मत अधिकार नहीं है बल्कि इसे प्रकृति से प्रदान किया गया है। सभी व्यक्तियों को गरिमा और अधिकारों के मामले में जन्मजात स्वतंत्रता और समानता प्राप्त है। वास्तव में प्रत्येक व्यक्ति को ऐसे जीवन स्तर को प्राप्त करने का अधिकार है जो उसे और उसके परिवार के स्वास्थ्य, कल्याण और विकास के लिए आवश्यक है। मानव अधिकारों में आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक अधिकारों के समक्ष समानता का अधिकार एवं शिक्षा का अधिकार आदि नागरिक और राजनैतिक अधिकार भी सम्मिलित हैं।

### 4.10.5 सशक्त लोकशक्ति का गठन

स्वतंत्र भारत में भ्रष्टाचार का सुरसामुख लगातार फैलता रहा है। उसने सरकारी विभागों से लेकर सामाजिक सरोकारों से जुड़ी सभी संस्थाओं को अपनी चपेट में ले लिया है। शिक्षा और स्वास्थ्य जैसी मानवीय मूल्यों से जुड़ी संस्थाए भी अछूती नहीं रहीं।

# पंचम अध्याय

## संस्थान का परिचयात्मक विवरण

# पंचम अध्याय: संस्थान का परिचयात्मक विवरण



## 5.1 स्थापना

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान की स्थापना: 1978-79 में की गई।

## 5.2 कार्यक्षेत्र

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान का कार्यक्षेत्र-चित्रकूट, बाँदा, महोबा, ललितपुर, हमीरपुर, अनूपपुर, टीकमगढ़ तक विस्तृत है।

**क्षेत्रीय कार्यालय**

- मकदूमगंज मानिकपुर
- बरगढ़
- बाँदा

**सहयोगी- साथी**

- चाइल्ड फण्ड इण्टर नेशनल
- वाटर एण्ड इण्डिया
- यूनिसेफ
- नाबार्ड
- उपमा (यू. एस. ए.)
- अग्रवाल फाउंडेशन
- स्थानीय सुजन
- समर्पित स्वयं सेवक कार्यकर्त

## 5.3 संस्थान का दर्शन: अन्त का उदय

## 5.4 उद्देश्य

- प्रयास पूर्वक निर्मित से संस्कारित कार्यकर्ताओं के समूह के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों के विरुद्ध लोक चेतना, लोक शिक्षण, प्रशिक्षण तथा सुदृढ़ जन संगठन खड़ा करना।
- ग्रामीण हकदारी, ग्राम स्वराज एवं कर्तव्य बोध का मार्ग।
- परम्परागत ज्ञान के प्रति आस्था जगाना, निरोगी काया हेतु प्रेरित करना, औषधिय पौधों की खोज उनका रोपण, संरक्षण, संवर्धन, उनका लोकहित में उपयोग एवं ग्रामीण वैद्यो को प्रोत्साहन।

# पंचम अध्याय: संस्थान का परिचयात्मक विवरण

## 5.1 स्थापना



अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान की **स्थापना: 1978-79** में की गई।

## 5.2 कार्यक्षेत्र

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान का कार्यक्षेत्र-चित्रकूट, बाँदा, महोबा, ललितपुर, हमीरपुर, अनूपपुर, टीकमगढ़ तक विस्तृत है।

### क्षेत्रीय कार्यालय

- मकदूमगंज मानिकपुर
- बरगढ़
- बाँदा

### सहयोगी- साथी

- चाइल्ड फण्ड इण्टर नेशनल
- वाटर एण्ड इण्डिया
- यूनिसेफ
- नाबार्ड
- उपमा (यू. एस. ए.)
- अग्रवाल फाउंडेशन
- स्थानीय सुजन
- समर्पित स्वयं सेवक कार्यकर्त

## 5.3 संस्थान का दर्शन: अन्त का उदय

## 5.4 उद्देश्य

- प्रयास पूर्वक निर्मित से संस्कारित कार्यकर्ताओं के समूह के माध्यम से सामाजिक विसंगतियों के विरुद्ध लोक चेतना, लोक शिक्षण, प्रशिक्षण तथा सुदृढ़ जन संगठन खड़ा करना।
- ग्रामीण हकदारी, ग्राम स्वराज एवं कर्तव्य बोध का मार्ग।
- परम्परागत ज्ञान के प्रति आस्था जगाना, निरोगी काया हेतु प्रेरित करना, औषधिय पौधों की खोज उनका रोपण, संरक्षण, संवर्धन, उनका लोकहित में उपयोग एवं ग्रामीण वैद्यो को प्रोत्साहन।

- निर्धनता के विरुद्ध विभिन्न अभियानों का संचालन, क्रियान्वयन, प्रमुख रूप से प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन। शून्य लागत विषमुक्त उत्पादन को बढ़ावा।
- बाल, युवा एवं मातृशक्ति का विकास, मुख्य रूप से समाज रचना की आधार नारी को सम्मानजनक स्थिति में लाना। उच्च शिक्षा से जोड़ना।
- स्नेह, सम्मान से वंचित, उपेक्षित दिन जनों एवं जीवन जीने का सार्थक आधार खो चुके दरिद्र दलित, आदिवासियों का स्वाभिमान जगाकर उनके निराश जीवन में चेतना का संचार करना। मानवीय चेतना सम्पन्नप शिक्षा के अवसर देना।
- शिक्षा, चेतना, रचना, सद्संस्कार एवं प्रकृति संतुलन।
- स्वच्छ भारत, स्वस्थ पर्यावरण, प्रेरक लोक संस्कृति, लोक विधाए।
- सरकारी योजनाओं को लाभार्थी तक पहुँचाना ।

## 5.5 हस्तक्षेप

- सशक्त लोक शक्ति का गठन।
- विसंगतियों के विरुद्ध सार्थक पैरवी।
- महिला सशक्तिकरण शिक्षा प्रसार।
- किशोरी स्वास्थ्य एवं सशक्तिकरण।
- स्वास्थ्य चेतना प्रसार।
- प्राकृतिक संसाधन विकास एवं आजीविका संवर्द्धन।
- बंधुआ मजदूरी उन्मूलन।
- पंचायत सशक्तिकरण।
- क्षमता वृद्धि के विविध प्रयास।
- जन तथा तंत्र के बीच सेतु का काम।
- बुन्देलखण्ड लोक संस्कृति प्रमुख रूप से आदिवासी संस्कृति का सम्मानजनक स्थापन एवं संरक्षण।

## 5.6 उपलब्धियाँ

- 33 वर्षों में लगभग 20 हजार को साक्षर देवता के साथ जोड़ा गया। आज भी सब धीरे-धीरे उच्च शिक्षा से भी जुड़ रहे हैं। वर्तमान में लगभग 2200 उन बच्चों के साथ शिक्षा अभियान प्रारम्भ है जो समाज में अभावग्रस्त, वंचित, उपेक्षित तथा शोषित - कुपोषित हैं।
- सरकारी प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था तथा आंगनबाड़ियों के साथ तालमेल बिठाकर बाल अभ्युदय के प्रयास जारी है।

- गाँव-गाँव शिक्षा संस्कार केन्द्रों की स्थापना कर, मानवीय शिक्षा की अलख जगाना, संस्थान का धर्म- कर्म रहा है। इस राष्ट्रीय अखण्डता के प्रयास को जिसने भी देखा, समझा है उसने इस गम्भीर दूरगामी प्रयास को आवश्यक माना है। कुछ ने तो दूर देश रहकर भी सहयोग का हाथ बढ़ाया है।
- बाँदा जिले के कुछ विद्यालयों, गाँवों में स्वच्छ भारत अभियान का अंग बनकर जन चेतना प्रयास तथा आदर्श प्रदर्शनों के माध्यम से समाज का ध्यानाकर्षण किया जा रहा है। यहाँ जल भरण के भी आदर्श उदाहरण देकर जा सकते हैं।
- जल प्रबंधन, जल संरक्षण के क्षेत्र में कार्य कर फिक्की जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठन से देश का द्वितीय पुरस्कार प्राप्त करना कल्पना से परे कार्य रहा। यह पुरस्कार 28 नवंबर, 2017 को फिक्की हाउस में प्राप्त हुआ। संस्थान को नई पहचान मिली।
- मुक्तभूमि के साथ लाभार्थी परिवारों को जोड़कर उन्हें प्रेरित कर कृषि विकास के कीर्तिमान स्थापित हुए। टिकरिया, मनगवां, इटावा, पाटन के गरीब परिवार जल विद्युत सुविधा पाकर खाने, बचाने और बेचने लायक उत्पादन लेने लगे हैं।
- आदिवासी, गैर आदिवासी परिवारों की हजारों एकड़ कृषि भूमि रक्तहीन क्रांति के माध्यम से दबंगों के चंगुल से छुड़ाना संस्थान का ऐतिहासिक कार्य रहा।
- गरीबों की छोटी कृषि भूमि (चित्रकूट, बाँदा, टीकमगढ़, अनूपपुर) में प्राकृतिक विधि से धान, सब्जी, फलदार पौधे प्रमुख रूप से अनार की आदर्श, अनुकरणीय, पर्यावरणीय कृषि के उदाहरण, आज बड़ा आकार लेने लगे हैं। देश के तमाम विचारवान लोगों ने इस तापमान रोधी (ग्लोबल वार्मिंग ) प्रयास को सराहा है।
- वन उपज यथा महुआ, आंवला, चिरौंजी शहद आदि आदिवासी परिवारों की जीविका का आधार बनें इस क्षेत्र में अनेक फलदाई प्रयास रहे हैं।
- शान्तिमय रीति से दासता से मुक्ति, के जोखिम भरे मार्ग पर चले। हजारों परिवारों को नया जीवन मिला। जगन्नाथपुरम जैसे पुनर्वास के आदर्श कार्य सम्पन्न हुए।
- ग्रामीण हकदारी का लक्ष्य लेकर अन्त्योदय हेतु पीड़ित परिवारों की शासन, प्रशासन, उच्च न्यायालय तक सफल पैरवी की और इस दिशा में अन्य सराहनीय कार्य किए जिससे संस्थान को ख्याति प्राप्त हुई।
- संस्थान में कार्यरत पुराने साथियों को हस्तक्षेप हेतु बुन्देलखण्ड के कई ऐसे संस्थानों में स्थापित किया गया है जहाँ मानवता कराह रही थी, कार्य की आवश्यकता थी। इन सब संस्थाओं को वंश शब्द से संबोधित किया गया है।
- स्वयं सेवी जगत के भाई- बहन तथा समस्याग्रस्त व्यक्ति या समूह जो भी समाधान हेतु सम्पर्क में आए हैं, उनको संस्थान की सेवाए सहज ही उपलब्ध हुई है।

- चित्रकूट ही नहीं बाँदा, महोबा, ललितपुर, हमीरपुर, सोनभद्र, अनूपपुर, टीकमगढ़ संस्थान प्रयासों के साक्षी हैं।
- टिकरिया गाँव में 12 एकड़ में विद्यमान वनोद्यान संस्थान प्रयास का साक्षी हैं।
- सौर ऊर्जा विधि से गाँव में स्वच्छ पेयजल आपूर्ति, प्रकाश एवं कृत्रिम पवन का लाभ लिया जा रहा है।
- प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन के अंतर्गत 15000 हेक्टेयर में बंधीकरण, 300 एकड़ में समतलीकरण, 75 फार्म पाण्ड, 5 डाल सिंचाई एवं 100 से अधिक पेयजल कूप, तालाब, जलबंध की छोटी बड़ी संरचनाए आदि।

### 5.7 लक्ष्य समूह

मान, सम्मान, स्नेह, प्रेरणा से वंचित, निराश कुंठाग्रस्त समाज का अंतिम मानव समूह।

➢ **प्रमुखता-**

वनवासी, आदिवासी, कोल मवइया आदि।

➢ **लक्ष्य समूह की स्थिति परिस्थिति**

पीढ़ी दर पीढ़ी बंधुवापन की पीड़ा, ज्ञान का अंधकार, स्वाभिमान शून्य, सारे संसाधनों की चोरी की निराशा, दरिद्रता की मार, आजीविका का संकट, योजनाओं के सही लाभ से वंचित, पलायन, पथरीली, कृषि भूमि आदि।

➢ **लक्ष्य क्षेत्र**

दुर्गम वन, पठार, पर्वत, अनुपजाऊ भूमि, गहरा जल संकट, अनियमित वर्षा, संचार का अभाव, वन विनाश। प्रमुख रूप से चित्रकूट, बाँदा (उत्तर प्रदेश)।

➢ **हमारा ध्येय**

दरिद्रता, शोषण, उत्पीड़न, बंधवापन का जीवन जीने वाले, प्रकृति की गोद में पले, बसे, बढ़े एवं रचे होने के बाद भी वन संपदा से वंचित, शिक्षा चिकित्सा, जनकल्याणकारी सरकारी योजनाओं की ओर से उपेक्षित, मानवअधिकारों की परिधि से दूर, विषम विसंगतियों के शिकार, लक्ष्य समूह को स्वाभिमानपूर्ण जीवन हेतु अभिप्रेरित/स्पंदित करना, उचित अवसर का सृजन करना।

"यह देश मेरा, धरा मेरी, गगन मेरा, इसके लिए बलिदान हो प्रत्येक कण मेरा, प्रत्येक क्षण मेरा" का भाव जन जन के मन में भरना।

## 5.8 कार्य संस्कृति

- **अनुशासन:** अनुशासित आचरण एवं शालीन वाणी अनिवार्य शर्त है।
- **मातृ शक्तिः** मातृ शक्ति का सम्मान सुरक्षा, समान अवसर वेतनमान सम्मान स्वाभिमान, प्रेरणा प्रोत्साहन हम सबका दायित्व धर्म कर्म होगा।

### ➢ सामूहिक कार्य पद्धति

- मिलजुल कर कार्य करना जिम्मेदारी का समुचित अनुपालन।
- नियमित बैठक, कर्तव्यपरायणता ।
- परस्पर विचार विमर्श संवाद एव चर्चा ।
- संवादशीलता, पारदर्शिता एवं संस्थान के प्रति निष्ठा ।
- सामूहिक निर्णय, एक दूसरे के प्रति सम्मान की भावना ।
- निर्णय का निष्ठा से अनुपालन।
- स्वयंसेवकत्व का भाव, श्रम के प्रति आस्था अममिक का सम्मान
- गतिशीलता, गुणवत्ता, ईमानदारी, विश्वास एवं सृजनात्मक, रचनात्मक गुणात्मकता (सकारात्मकता) को प्रोत्साहन एवं बढ़ावा। इन सब पर नित्य चिन्तन चाहिए।

### ➢ सामूहिक नेतृत्व/ संगठनात्मक :

- लक्ष्य समूह (वनवासी. गिरिजन, दलित पिछडे वर्ग एवं सीमान्त समुदाय के सम्मानजनक गरिमापूर्ण टिकाऊ नेतृत्व का विकास करना प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना ।
- क्षमता, योग्यता, दक्षता एवं दायित्व बोध से पद धारण एवं कार्य।

### ➢ परिणाम एवं प्रभाव :

- उपलब्धियों की चर्चा, प्रचार-प्रसार सार्वजनिक रूप से करना ।
- कमियों की चर्चा संस्थान के अन्दर करना, संवाद, विद्यार-विमर्श द्वारा एक दूसरे को प्रेरित एवं प्रोत्साहित कर दूर करना।
- अपने कमजोर साथी को मिलजुल कर ऊपर उठाने का अपने अपने स्तर पर प्रयास करना।
- ऐसे सारे कार्य करना, जिनसे परिणाम प्राप्त हो तथा कार्य प्रभाव पूर्ण हो।

> प्रोत्साहन

- क्रियाशीलता, कार्यकुशलता, रचनात्मक जवाबदेही, शालीनता, समर्पण, निष्ठा का सम्मान एवं प्रोत्साहन। परस्पर पूरकता के साथ कार्य करते हुए प्रोत्साहन, प्रेरणा शक्ति को बढ़ाना।

- **अनुभवों को बढ़ावा**

  कार्यकर्ताओं को सम्मान व महत्व उनके अनुभवों का कार्यकर्ताओं के साथ आदान-प्रदान। पुराने कार्यकर्ताओं को भी प्रेरक बनना होगा।

- **विजन, मिशन :**

  संस्थान के उदगम, विजन, मिशन, उद्देश्य रणनीति उपलब्धियां एवं सभी कार्यक्रमों की सम्यक जानकारी रखना, प्रचार-प्रसार तथा अपने साथियों, सहयोगियों की क्षमतावृद्धि, ज्ञानवृद्धि करना।

- **अतिथि:** अतिथियों के प्रति सद्भावना अपनी उपलब्धियों, सफलताओं का प्रस्तुतीकरण, आवास, भ्रमण अगुवाई एवं विदाई का समुचित प्रबन्ध करना।

## 5.9 कार्यकर्ता सेवा नियमावली

### सभी कार्यकर्ताओं के लिये समान रूप से अनुपालनार्थ बिन्दु-

- संस्थागत मूल्य एवं आदर्श नैतिक जीवन जीते हुए कार्य व्यवहार में दिखाई पडे।
- संस्थागत कार्य संस्कृति, आचार, व्यवहार, मार्यादा, मात शक्ति का सम्मान एवं गौरव का गुणात्मक विकार करना।
- लक्ष्य समूह के प्रति सदभावना रखना, मित्रता का व्यवहार करना, उचित जानकारी एवं सहयोग देना, हर संभव मदद देना।
- संस्थान किसी भी कार्यकर्ता की सम्पूर्ण निजी समस्याओं के समाधान का स्थान नहीं जीवन पर्यनत रोजगार का भी आधार नहीं, अस्तु जिसे जहा अवसर मिलें, यह अवश्य प्रयत्न करता रह।
- यहाँ रहते हुए पूरी निष्ठा एवं समय देकर कार्य करना होगा।
- अपने मन में विरोध भाव को संस्था के बाहर न कह कर न प्रकट कर संस्था के प्रमुख के साथ संवाद करना। यदि समाधान न मिले साथ ही विरोध का ही निश्चय बने तो संस्थान छोड़कर बाहर रहकर विरोध करना।

- क्रियाशीलता, कार्यकुशलता, रचनात्मक जवाबदेही, शालीनता, समर्पण, निष्ठा का सम्मान एवं प्रोत्साहन। परस्पर पूरकता के साथ कार्य करते हुए प्रोत्साहन, प्रेरणा शक्ति को बढ़ाना।

- **अनुभवों को बढ़ावा**

  कार्यकर्ताओं को सम्मान व महत्व उनके अनुभवों का कार्यकर्ताओं के साथ आदान-प्रदान। पुराने कार्यकर्ताओं को भी प्रेरक बनना होगा।

- **विजन, मिशन :**

  संस्थान के उदगम, विजन, मिशन, उद्देश्य रणनीति उपलब्धियां एवं सभी कार्यक्रमों की सम्यक जानकारी रखना, प्रचार-प्रसार तथा अपने साथियों, सहयोगियों की क्षमतावृद्धि, ज्ञानवृद्धि करना।

- **अतिथि:** अतिथियों के प्रति सद्भावना अपनी उपलब्धियों, सफलताओं का प्रस्तुतीकरण, आवास, भ्रमण अगुवाई एवं विदाई का समुचित प्रबन्ध करना ।

## 5.9 कार्यकर्ता सेवा नियमावली

### सभी कार्यकर्ताओं के लिये समान रूप से अनुपालनार्थ बिन्दु-

- संस्थागत मूल्य एवं आदर्श नैतिक जीवन जीते हुए कार्य व्यवहार में दिखाई पडे ।
- संस्थागत कार्य संस्कृति, आचार, व्यवहार, मार्यादा, मात शक्ति का सम्मान एवं गौरव का गुणात्मक विकार करना।
- लक्ष्य समूह के प्रति सदभावना रखना, मित्रता का व्यवहार करना, उचित जानकारी एवं सहयोग देना, हर संभव मदद देना।
- संस्थान किसी भी कार्यकर्ता की सम्पूर्ण निजी समस्याओं के समाधान का स्थान नहीं जीवन पर्यनत रोजगार का भी आधार नहीं, अस्तु जिसे जहा अवसर मिलें, यह अवश्य प्रयत्न करता रह।
- यहाँ रहते हुए पूरी निष्ठा एवं समय देकर कार्य करना होगा।
- अपने मन में विरोध भाव को संस्था के बाहर न कह कर न प्रकट कर संस्था के प्रमुख के साथ संवाद करना। यदि समाधान न मिले साथ ही विरोध का ही निश्चय बने तो संस्थान छोड़कर बाहर रहकर विरोध करना।

- प्रशिक्षण शैक्षणिक भ्रमण कार्यशाला एवं अन्य दूसरी जगह जाने पर संस्थान का प्रतिनिधित्व करना। संस्था की सरिमा एवं मूल्यों को बनाये रखना, संस्थान एवं अपनी स्वयं की छवि को विकसित करना बढ़ावा देजा।
- सभी कार्यालयों में, परिसर के अगल-बगल रहने वाले कार्यकर्ता सायं प्रार्थना में नियमित रूप से भाग लेंगे। में दिनचर्या का आदान-प्रदान करना, अगले दिन के कार्यक्रम का नियोजन भी करना।
- कार्यकर्ताओं की संचालन समिति हमारी मुख्य नैतिक संस्था होगी, उसके अनुशासन में रहना प्रत्येक का धर्म-कर्म होगा। यह समिति मुख्य कार्यकारी की अपनी आंख-कान होगी। इस समिति का प्रतिवर्ष गठन निदेशक द्वारा संस्था संचालन की सुगमता हेतु किया जायेगा।

## 5.10 महिला समानता एवं सशक्तिकरण नीति :

- संस्थान स्तर पर लैंगिग (महिला, पूरुष) भेदभाव स्वीकार नहीं होगा। महिला और पुरुषो को सेवा के
- समान अवसर उपलब्ध होंगे, समान कार्य के लिये समान वेतन दिया जायेगा।
- किसी भी महिला कार्यकर्ता को न्यूनतम वेतन से कम वेतन देय नहीं होगा।
- गर्भवती महिला को गर्भावस्था के दौरान 6 सप्ताह का अवकाश तथा गर्भावस्था के बाद 6 सप्ताह वेतनिक अवकाश (अर्थात कुल 3 महीने) का प्रसूति अवकाश देय होगा।
- गर्भपात की अवस्था में महिला कार्यकर्ता को 6 सप्ताह का वैतनिक अवकाश देय होगा
- संस्थान में हर स्तर पर महिलाओं की समान भागेदारी को प्रोत्साहन दिया जायेगा। प्रबधकारी समिति भी महिलाओं की उचित भागेदारी सुनिश्चित की जायेगी।
- प्रत्येक कार्यक्रम में महिलाओं की भागेदारी सुनिश्चित की जाती है।
- महिला कार्यकर्ताओं को नियोजन एवं निर्णायक जैसी भूमिकाओं में पदासीन करना प्रबंधन एवं समन्वयक जैसे पदों पर नियुक्त करना।
- महिला एवं पुरुष दोनों कार्यकर्ताओं के लिये मातृत्व एवं पितृत्व अवकाश का प्रावधान होगा। महिला कार्यकर्ताओं के लिये विशेष सुविधा एवं सुरक्षा जैसे-प्रावधानानुसार क्षेत्र में आने जाने के लिये व्यवस्था/साधन मुहैया कराना।
- संस्थान में महिला कार्यकर्ताओं की क्षमता वृद्धि हेतु प्रयास करना। मनोबल बढ़ाना तथा सम्मान देना। महिलाओं में सामर्थ्य पैदा करने वाले प्रयासों जैसे शिक्षण, प्रशिक्षण, महिला संगठनों का निर्माण,प्रवाह, स्थायित्व एवं रचानात्मक विकास, भ्रमण कार्यशाला शिविर, सामाजिक गतिशीलता को प्रोत्साहन वाले कार्यों को बढ़ावा देना।
- कार्यक्रमों का स्वरूप तय करने एवं लागू करने में महिलाओं की सक्रिय भागेदारी सुनिश्चित करना।
- महिला संगठनों को प्रोत्साहित एवं मजबूत करना/ बनाना।

- संसाधन अवसर तथा कार्यक्रम के फायदे तक महिलाओं तथा पुरुषों की समान पहुंच एवं नियंत्रण सुनिश्चित करना।
- कार्यक्रम परियोजना के प्रत्येक चरण (पहचान, नियोजन, क्रियान्वयन तथा मूल्यांकन) में महिलाओं की भागीदारी सुनिश्चित करना।
- महिलाओं को उत्पादक, पुनरुत्पादन और सामुदायिक / सामाजिक गतिविधियों में समान रूप से भागीदारी के प्रति जागरुक करना।
- किसी भी महिला कार्यकर्ता के साथ यदि पुरुष कार्यकर्ता का व्यवहार मर्यादा से परे पाया जायेगा तो उसे दण्डनीय अपराध माना जायेगा। वाणी, व्यवहार, सहकार्य में तनिक भी हिंसा स्वीकार नहीं होगी।
- पुरुष कार्यकर्ता ने यदि व्यंग, उपहास भद्दा मजाक किया, अशोमनीय हाव-भाव प्रकट किया तो उसे तुरन्त सेवा मुक्त किया जा सकेगा।

## 5.11 लिंग नीति

### 5.11.1संस्थागत जेंडर

- महिलाओं को कार्यालय में काम का सुरक्षित वातावरण उपलब्ध कराना संस्था की जिम्मेदारी है। इसके लिए संस्था सदैव प्रयत्नशील रहेगी।
- स्त्री पुरुष समानता के मुद्दों पर चर्चा के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण करना।
- संस्था में कार्यरत महिला एवं पुरूष की संख्या बराबर होनी चाहिए। किसी भी दशा में 1/3 से कम नहीं होना चाहि।
- संस्था प्रमुख द्वारा सभी कार्यकर्ताओं (महिला एवं पुरूष) के साथ वेतन, पद, संसाधन आदि में जेण्डर समानता का व्यवहार किया जाएगा।
- महिला कार्यकर्ताओं के साथ किसी भी प्रकार का अभद्र व्यवहार, छेड खानी, अनचाहा शारीरिक संपर्क आदि की शिकायत मिलने पर संस्था द्वारा कडी कार्यवाही की जायेगी।
- लैंगिक भावार्थ वाले अश्लील वाक्य व टिप्पणी का प्रयोग संस्था में वर्जित है।

### 5.11.2 निर्णय प्रक्रिया:

- संस्था के अन्दर जेण्डर समानता को बढ़ावा देने के लिए यह आवश्यक है कि पुरूषों के साथ महिलाओं को भी निणर्य प्रक्रिया में शामिल किया जाए। यद्यपि महिलाओं की आवश्यकताओं, प्राथमिकताओं, क्षमताओं तथा रूचियों को कम महत्व दिया जाता है। अतः संस्था की यह जिम्मेदारी बनती है कि क्षेत्र, समुदाय, कार्यालय में उनके विचारों,आवश्यकताओं, प्राथमिकताओं,

क्षमताओं को हर स्तर पर चिन्हित किया जा सके और निर्णय प्रक्रिया में उनकी सहभागिता को सुनिश्चित किया जा सके।

- संस्था के कार्यक्रमों से संबंधित निर्णय में सभी कार्यकर्ताओं (महिला एवं पुरूष) को हर स्तर पर निर्णय प्रक्रिया से जोड़ा जाए। महिलाओं द्वारा लिए गए निर्णयों पर विशेष रूप से विचार किया जाए।
- हर कार्यक्रम में महिलाओं की सहभागिता सुनिश्चित की जाए और उनकी आवश्यकताओं, प्राथमिकताओं के आधार पर कार्यक्रमों का निर्धारण किया जाए।
- कार्यक्रमों की योजना बनाने, कियान्वित करने तथा उसके मूल्यांकन में भी समुदाय (महिला एवं पुरूष) की सहभागिता सुनिश्चित करें।

### 5.11.3 बाह्य वातावरण:

- फील्ड में जाते समय अनुशासन का पालन करना अनिवार्य है।
- कार्यकर्ता/ कत्री गाँव में अपने व्यवहार, आचरण आदि के प्रति सचेत रहना चाहिए
- कार्यकर्ता/कत्री को गाँव में किसी के लिए अपमानजनक शब्दों व भाषा का प्रयोग न करें
- (जिससे किसी की संवेदनाओं को ठेस पहुँचें) ऐसा होने पर संस्था द्वारा दोषी व्यक्ति के खिलाफ कदम उठाया जाएगा।
- महिला कार्यकर्ताओं के साथ किसी भी प्रकार का अभद्र व्यवहार, छेड खानी, अनचाहा शारीरिक स्पर्श आदि की शिकायत मिलने पर संस्था द्वारा कड़ी कार्यवाही की जायेगी।
- यदि संस्था के पास गाड़ी है और वह महिला कार्यकर्ताओं को लेकर फील्ड जाती है तो उस में फस्ट एड बॉक्स के साथ एक सेनेट्री नेपकीन होना अनिवार्य है।

### 5.11.4 क्षमताब्रद्धि:

- संस्थान द्वारा दो स्तर पर प्रशिक्षण प्रबंध रहेगा प्रथम में लिंग भेद के प्रति सभी को संवेदित किया जायेगा।
- द्वितीय चरण में महिला कार्यकत्रियों को लिंग भेद, स्वास्थ्य, सामाजिक विभेद आदि को लेकर विशेष प्रशिक्षण दिया जायेगा तथा संगठन में उनकी भूमिका की समीक्षा होती रहेगी।
- महिला क्षमतावृद्धि के सभी सम्भव प्रयास समय-समय होते रहेंगे।

### 5.11.5 लिंग नीति विवरण:

संगठनात्मक लिंग नीति महिलाओं और पुरुषों के बीच असमानता और भेदभाव की अभिव्यक्ति के रूप में में व्यापक विचार देगी, जो समय बोलने के दौरान चुनौती के रूप में सामने आया। यद्यपि, संगठन के भीतर लिंग संबंध की प्रक्रिया हमेशा बाहरी वातावरण को अपनी दिशा देती है। इसलिए, संगठन प्रत्येक व्यक्ति को एक ही मंच पर रखकर लोगों के जीवन को बदलने के प्रयास के अनुरूप, परिवर्तनशील और परिवर्तनकारी सामाजिक प्रक्रिया को महत्वपूर्ण पंक्ति के रूप में स्वीकार करता है।

### 5.11.6 महिला उत्पीडन विरोधी समिति :

- संस्थान में कार्यरत वरिष्ठ महिलाओं की एक समिति होगी। यह समिति महिला विषयक समस्त विषयों के प्रति उत्तरदायी होगी।
- समिति की नियमित बैठके होती रहेगी।
- बैठक में संस्थागत सभी महिला कार्यकर्ताओं की शिकायतो पर समाधान दिया जायेगा।
- महिला समानता, सम्मान की नीति पर निरन्तर विचार होगा। सभी को मान्य मार्ग का निर्धारण होगा।
- आंशिक समय देने वाली महिला कार्यकत्रियां भी इस समिति की एक महत्वपूर्ण भाग होंगी।

### 5.11.7 मार्गदर्शक सिद्धांत और मूल्य

- विशिष्टता: लिंग समानता के आधार पर औरसशक्तीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से सभी स्तरों पर सामान्य सामाजिक मंच प्रदान करके सभी पुरुषों और महिलाओं की भागीदारी को बढ़ाना।
- भेदभाव, धर्म, जाति और पंथ, विकलांगता और उम्र के बिना भागीदारी।
- पारदर्शिता: सभी के लिए खुलापन।
- ईमानदारी: ईमानदारी और जवाबदेही।
- सामाजिक संवेदनशीलता: समुदाय के सदस्यों के बीच उनकी जाति, पंथ, विश्वास, आदर्शों और भावना। समुदाय के अंतिम सदस्य के बीच।
- विश्वास पैदा करना।
- रचनात्मकता और नवाचार सीखना।
- व्यवस्थित और एकीकृत दृष्टिकोण।

## 5.12 बाल संरक्षण नीति

- अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान ने बच्चों की सुरक्षा और संरक्षण का विश्लेषण करते हुए विभिन्न प्रकार की सामाजिक, आर्थिक गतिविधियों में बच्चों की भूमिका एवं जिम्मेदारी को शामिल किया है। ये गतिविधियों सामुदायिक, घरेलू, कार्यस्थल में संस्थागत उद्देश्यों के अनुरूप बच्चों की विभिन्न आवश्यकतओं को पूरा करने के लिए की जाती है। इसके अलावा, सामाजिक, संस्कृति, सामाजिक सेटअप, सामाजिक विश्वास और रुपरेखा संगठन में एक कर्मचारी की भूमिका और जिम्मेदारी को प्रभावित करती है जो अधिकार, स्थिति और अधिकारों के अभ्यास के रूप में परिलक्षित होती है। सत्ता, स्थिति और अधिकारों के संदर्भ में असमानता के कारकों का आंकलन करते हुए संगठन ने असमानता और अंतर प्रक्रिया की समस्याओं को दूर करने और नीति दस्तावेजों को वापस दर्शाते हुए समाधान प्रस्तुत करने की तत्काल आवश्यकता महसूस की।
- अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के उद्देश्य, निर्देश देते हैं कि सभी कार्यक्रम और नीति बच्चों के लिए समान अवसर पैदा करें। यह उन कारकों को प्रतिबंधित करता है जो लड़कियों और लड़कों के बीच सामाजिक अंतर को बढ़ावा देते हैं और आत्म-विकास की उनकी प्रक्रिया में बाधा डालते हैं। इसके अलावा अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान लैंगिक भेदभाव को एक समस्या और चुनौती के रुप में स्वीकार करता है, जो पक्षपाती सामाजिक न्याय, शिक्षा के प्रति संरचनात्मक असमानता, बेरोजगारी और आजीविका के अवसर और खराब स्वास्थ्य पर प्रतिबंधित प्राथमिकता के माध्यम से अपना रास्ता प्राप्त करता है।
- अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान उम्मीद करता है कि उसके सभी कर्मचारी, स्वयं सेवक, साझेदार संगठन और अतिथि अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान कार्यक्रम के विभिन्न कार्यक्रमों से जुड़े सभी बच्चों तथा संस्थान से व्यक्तिगत रुप से जुडे उन सभी बच्चे को सम्मान और गरिमा प्रदान करेंगे।
- परियोजना और बच्चों के सीधे संपर्क वाले संस्थान कर्मचारी और स्वयंसेवक यह कहने के लिए एक बयान पर हस्ताक्षर करते हैं कि उन्होंने नीति को पढ़ा है, इसका सम्मान करेंगे और इसका पालन करेंगे और समझेंगे कि उन मामलों में कार्रवाई की जाएगी जहां उनका व्यवहार नीति के अनुसार नहीं होगा। इससे इन प्रोटोकॉल को तोड़ने वाले स्वयंसेवकों कर्मचारियों पर अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी साथ ही उन्हें काम से भी निकाला जा सकता है।
- संस्थान के अधिकृत व्यक्तियों से, स्वयसेवकों और बाहरी आगंतुकों के लिए बच्चों के फोटो या वीडियो फुटेज लेने के लिए अनुमति की आवश्यकता होगी। निदेशक/सचिव/ समन्वयक से अधिकार मांगा जाना चाहिए और ली गई तस्वीरों की प्रकृति पर कड़े नियम लागू किए जाएंगे। इन

तस्वीरों। या वीडियो का उपयोग बिना किसी पूर्व अनुमति के किसी अन्य उद्देश्य के लिए नहीं किया जाएगा। बच्चो की फोटो साझा करने हेतु सहमति पर हस्ताक्षर हो।

- संस्थान स्टाफ और स्वयंसेवकों को उन बच्चों के साथ कभी भी अकेले नहीं रहना चाहिए जो एक निजी स्थान पर अपनी संतान नहीं है जहां उन्हें अन्य जिम्मेदार वयस्कों द्वारा आसानी से नहीं देखा जा सकता है।
- जहाँ भी संभव हो और व्यावहारिक हो,। दो वयस्क नियम का पालन किया जाना चाहिए, जिसमें दो या दो से अधिक वयस्क सभी गतिविधियों का पर्यवेक्षण करते हैं जहाँ नाबालिग या बच्चे शामिल होते हैं और हर समय मौजूद रहते हैं। यदि यह संभव नहीं है, तो संस्थान कार्यक्रम स्टाफ सदस्य बच्चों को शामिल होने पर सामुदायिक सदस्यों के साथ होने वाले विकल्पों की तलाश करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।
- स्टाफ और स्वयंसेवक एक तरह से बच्चे को अनुशासित नहीं करेगे जो कि बाल अधिकारों पर कन्वेशन के खिलाफ है यह प्रभावी रूप से बचचे के खिलाफ हिंसा के किसी भी रूप, शारीरिक या मौखिक रूप से सहनशीलता का मतलब नहीं है।
- संस्थान के कर्मचारियों और स्वयंसेवकों को इस बात से अवगत होना चाहिए कि वे उन बच्चों के साथ काम कर सकते हैं जो परिस्थितियों और गालियों का अनुभव करते हैं. विशेष ध्यान प्राप्त करने के लिए संबंध का उपयोग कर सकते है, भले ही कोई बच्चा बद हवाशी में व्यवहार करता हो, वयस्क को हमेशा जिम्मेदार माना जाता है। वरयस्क को समझौता करने वाली स्थिति में रहने से बचना चाहिए।
- बच्चों के प्रति अनुचित व्यवहार, जिसमें संस्थान नीति का पालन करने में विफलता या बच्चे का यौन शोषण, अनुशासनात्मक कारवाई का आधार है, जिसमें रोजगार इंटर्नशिप सा बोई / सलाहकार समिति की सदस्यता बर्खास्तगी शामिल है।
- संस्थान स्टाफ और स्वयंसेवकों को अपनी भाषा, कार्यो और नाबालिगों और बच्चों के साथ संबंधों में धारणा और उपस्थिति के बारे में चितित होना चाहिए। सभी कार्यक्रम के कर्मचारियों और स्वयंसेवकों को बच्चों की उपस्थिति में व्यवहार। चरित्र का उच्च स्तर बनाए रखना चाहिए। (उदाहरण के लिए, उन्हें बच्चे की उपस्थिति में किसी भी अस्वीकार्य भाषा का उपयोग नहीं करना चाहिए)।
- जब बच्चे, परिवार के समुदाय और कार्यक्रम या बच्चों के साथ काम करते हैं, तो संस्थान स्टाफ और स्वयंसेवकों को उचित रूप से तैयार होना चाहिए और सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील होना चाहिए।

- अनुभवहीन कर्मचारियों और स्वयंसेवकों को जटिल समस्याओं वाले बच्चों को संभालने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। (उदाहरण के लिए, जिन बच्चों का यौन शोषण किया गया है)। इन बच्चों को एक सक्षम और विश्वसनीय संगठन, एक टीम या पेशेवरों को जिम्मेदार व्यक्तियों और प्राधिकरण के परामर्श के साथ निर्देशित किया जाना चाहिए।
- संस्थान स्टाफ और स्वयंसेवकों को किसी भी परिस्थिति में दूसरों के साथ सभी संबंधों में संस्थान मिशन स्टेटमेंट और मूल मूल्यों तक जीना चाहिए।
- यदि बाल/बच्चे कुछ बाहरी आवासीय कार्यक्रम/ बैठक / परामर्श में भाग लेने जा रहे हैं, तो स्टाफ, जो बच्चों के साथ हैं, को ध्यान में रखना चाहिए।
- परामर्श या बैठक में भाग लेने वाले प्रत्येक बच्चे/बच्चे वयस्क के साथ होंगे जो बच्चे। बच्चों को सुरक्षा, देखभाल और सहायता प्रदान करने के लिए जिम्मेदार होगे।
- साथ देने वाला कर्मचारी कोई ऐसा व्यक्ति होना चाहिए जो संस्थान के लिए जाना जाता है और उस पर भरोसा करता है।
- लिंग संतुलन पर भी विचार किया जाना चाहिए। यदि प्रतिनिधिमंडल में कोई भी बालिकाएँ हैं, तो उनके साथ एक महिला कर्मचारी होनी चाहिए।
- यदि बच्चा और साथ वाले कर्मचारी विपरीत लिंग के हैं, तो उनके पास अलग-अलग आवास, शौचालय और बाथरूम होना चाहिए।
- यदि एक से अधिक बच्चे हैं और वे विपरीत लिंग के हैं तो उनके पास अलग-अलग आवास, शौचालय और स्नानघर होना चाहिए।
- साथ में मौजूद कर्मचारी परामर्श के बाल संरक्षण संहिता और बाल सरक्षण दिशानिर्देशों का पालन करेंगे। इसके अलावा, वह नीचे सूचीबद्ध वयस्क की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को पूरा करने में सक्षम होना चाहिए।
- यह महत्वपूर्ण है कि. गाय के नगरक की जिम्मेदारियों को पूरी तरह से समझाया जाए और साथ में आने वाले जसरक, संगठन, सपिस जाये। बच्चे (जहां भी संभव हो) और उनके अभिभावको दवारा सहमति मनात की जाए साग के कर्मचारियों की जिम्मेदारियां शामिल है
- बैठक और पर वापस जाने के लिए बच्चे/ बच्चों की याता की सुविधा, इसमें यात्रा के दौरान सभी समर्थन शामिल होंगे।
- बैठक के समय के दौरान एक स्थान से दूसरे स्थान पर बच्चे । बच्चों की आवाजाही को सुगम बनाना।
- यदि आवश्यक हो तो बच्चे। बच्ची को चिकित्सा सहायता प्रदान करना। इसमें बचची / बच्ची के मेडिकल और आपातकालीन जानकारी रखने वाले स्टाफ को हर समय अपने कब्जे मे रखना

चाहिए, जिसमें मेडिकल आपात स्थिति के दौरान बच्चे। बच्चों के अभिभावकों से उनकी और से कार्य करने की लिखित अनुमति होती है।

- हर समय बच्चे। बच्चों के पता ठिकाने के बारे में पता होना।
- जरूरत पड़ने पर बालक/बालिकाओं को जानकारी, सलाह और सहायता प्रदान करना।
- बैठक में बच्चे। बच्चों की भागीदारी के लिए प्रोत्साहन और सहायता प्रदान करना।
- यह सुनिश्चित करना कि बच्चे जब भी संभव हो, दुभाषियों और अनुवाद सहायता के अतिरिक्त प्रावधान के माध्यम से बच्चों के अन्य समूहों के साथ संवाद करने में सक्षम हो।
- यह सुनिश्चित करना कि बच्चे आराम कर सके और चर्चा में भाग ले सकें।
- उनकी देखभाल में बच्चे / बच्चों की शारीरिक और भावनात्मक जरूरतों के बारे में जागरूक होना और इन जरूरतों को पूरा करने में सहायता करना।
- किसी भी कठिनाइयों के आयोजकों को सूचित करना कि उनकी देखभाल के तहत
- अनुभव कर रहे हैं और उन्हें दूर करने के तरीके खोज रहे हैं।
  माता-पिता या अभिभावकों द्वारा लिखित स्वीकृति
- संस्था प्रमुख द्वारा लिखित स्वीकृति
- बच्चे की लिखित / हस्ताक्षरित सहमति।
- चिकित्सा इतिहास (एलर्जी की जानकारी सहित) और बच्चे का रक्त समूह।
- बालक / बालकों की विशेष आवश्यकताओं की सूची यदि कोई हो। सुनिश्चित करें कि वयस्को के साथ उनकी भूमिका और जिम्मेदारियों (आधार सहिता और जमीनी नियमों की स्थापना पर पूरी तरह से जानकारी दी गई है।
- सुनिश्चित करें कि बच्चों और युवकों बाल संरक्षण मुद्दों के बारे में जानकारी दी गई है।
- बाल संरक्षण केंद्र (एस) को असाइन करे जो किसी भी आवास स्थानों पर परामर्श और के दौरान बच्चों की सुरक्षा और समर्पण की जरूरतों के लिए जिम्मेदार है।
- सन्दर्भित व्यक्ति यह सुनिश्चित करेंगे कि बच्चों और युवाओं को उस व्यक्ति के नाम (नो) के बारे में पता हो जिससे वे किसी भी चिंता की रिपोर्ट कर सकते है
- बच्चों को इस बारे में जागरूक किया जाना चाहिए कि वे आयोजक की टीम के अन्य वयस्की से संपर्क करने के लिए स्वतंत्र है, उनके पास कोई प्रश्न होना चाहिए या यदि उनके साथ वयस्क उपलब्ध नहीं है या उचित जवाब दे रहा है।
- प्रतिभागियों के आपातकालीन संपर्कों, चिकित्सा आवश्यकताओं, भोजन वरीयताओं, यात्रा योजनाओं आदि के बारे में सभी जानकारी के साथ एक डेटाबेस बनाएँ।

- प्रत्येक युवा प्रतिभागी को आपातकालीन नंबर कार्ड 'जिसमें प्रमुख नम्बर और पते हो। सुनिश्चित करें कि परामर्श के दौरान एक नर्स / डॉक्टर ऑन-साइट या ऑन-कॉल उपलब्ध हैं।
- उपलब्ध चिकित्सा आपूर्ति या साइट पर एक प्राथमिक चिकित्सा किट उपलब्ध कराएँ।
- एबीएसएसएस के रूप में अलग सेट करें जहां युवा प्रतिभागी आराम कर सकते हैं यदि वे बीमार महसूस कर रहे हैं।

## षष्ट अध्याय

# शैक्षिक योगदान

6.1 आवासीय विद्यालय

6.2 सेमिनार/वर्कशॉप

6.3 बाल अभ्युदय केन्द्र

# षष्ट अध्याय: शैक्षिक योगदान

## 6.1 आवासीय विद्यालय

➤ **आवासीय विद्यालय के विशेष में गोपाल भाई जी ने बताया कि-**

मेरा अपना विश्वास है कि समाज के सबसे अंतिम व्यक्ति को जब तक हम नेतृत्व की भूमिका में नहीं खड़ा करेंगे तब तक वह दूसरों की ओर टुकुर-टुकुर असहाय बना देखता रहेगा। वह पढ़-लिख भी जाएगा, लेकिन पढ़ाई- लिखाई उसके कार्य व्यवहार में नहीं आएगी। वह सम्मान, स्वाभिमान के साथ नहीं जी सकेगा। इसीलिए संस्थान में पाँच वर्ष के लिए प्राप्त एक सहायत के अन्तर्गत विद्यालय छोड़ चुके उन 50 बाल किशोरों को चुना जो पांचवी, छठवीं एवं आठवीं के बाद पढ़ाई छोड़ कर घर बैठ गए थे। इन सभी चुने हुए 50 को लेकर संस्थान कार्यालय रानीपुर भट्ट में आवासीय सुविधा देकर शिक्षा, संस्कार, हुनर, व्यक्तित्व विकास, संगीत, लोक संगीत, गीत का अध्ययन नेता, अभिनेता, श्रम शील बनने का पंचवर्षीय प्रयास हुआ। आज वह बच्चे जहाँ उच्च शिक्षा से नहीं जुड़ पाए, किंतु जहाँ भी हैं, वह समूह का नेतृत्व कर रहे हैं। अपने पैरों पर खड़े हैं।

**वर्तमान स्थिति** इन पाँच वर्षों में आगे की शिक्षा से वे नहीं जुड़ पाए किन्तु इस काल खण्ड में जो दक्षता, क्षमता उनके अन्दर आयी जिसके अनुसार वे आज सन्तोष जनक भूमिका में हैं।

**बब्बू, मनगवां** संस्थान में आवासीय छात्र के रूप में रह कर हुनर की शिक्षा लिया था। वह आज बिजली, पानी आदि के सारे काम कर लेता है।

**बहोरी, नई बस्ती** संस्थान में आवासीय छात्र रूप में रहा था जो आज तबला, नगाड़ा, ढोलक बजाता और गाता भी है। लोक विधा के नृत्य कर लेता है। ट्रैक्टर चालक है। छोटे ठेके लेकर अपना गुजारा करता है।

**घनश्याम, जमुनिहाई टिकरिया** संस्थान का सहयोग पाकर बी0ए0, बी0टी0सी कर चुका है। शिक्षक पत्रता परीक्षा में उत्तीर्ण हो चुका है। सरकारी नौकरी अब तक नहीं पा सका है।

**अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान** समाजोत्थान के लिए संकल्पित है। समाज से वंचित गरीब, असहाय, अशिक्षित जन जातियों समूह को समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का कार्य रहे हैं।

## 6.2 सेमिनार/वर्कशॉप

1985 से आज तक संस्थान में तथा संस्थान के बाहर स्थानीय, जिला स्तरी, बुन्देलखण्ड स्तर पर प्रदेश, देश, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर संगोष्ठीओं की संख्या लिपिबद्ध नहीं है। उत्तर प्रदेश के लगभग 300 संस्थाओं का दो दिवसीय सम्मेलन भारत जननी रानीपुर भट्ट में हुआ। इस सम्मेलन में स्वनाम धन्य देश के प्रसिद्ध पत्रकार, विचारक लेखक **'राहुल देव'** एवं **'भारत डोगरा'** जैसे पत्रकार रहे।

दूसरा बड़ा सम्मेलन **पैक्स** कार्यक्रम की सभी संस्थाओं लगभग सब का तीन दिवसीय सम्मेलन संस्थान परिसर में, ही ऐतिहासिक रीढ़ से सम्पन्न हुआ क्योंकि इस सम्मेलन में विश्व प्रसिद्ध अर्थशास्त्री **जॉन** रेज की उपस्थिति भी सब के बीच रही।

## 6.3 बाल अभ्युदय केन्द्र

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान, चित्रकूट द्वारा संचालित तथा **उपमा** (उत्तर प्रदेश मण्डल आफ अमेरिका) द्वारा पोषित।

### ➤ बाल अभ्युदय शिक्षा केन्द्रों का संक्षिप्त विवरण-

उपमा की कृपा पूर्ण सहयोग से जून 2017 से प्रारम्भ शिक्षा संस्कार अनुष्ठान अनवरण गति से चित्रकूट जिले के दिन तम वनवासी क्षेत्र में चल रहा है।

जून 2019 तक 5 केंद्रों का संचालन हुआ। इन सब में 175 संख्या रही। इस संख्या में बालक 89, बालिकाए 86 थी। वार्षिक परीक्षा भी संपन्न हुई। मई, जून जैसी भयंकर गर्मी में भी सारे केंद्र चलते रहे। ग्राम संगठन की अन्य गतिविधियाँ भी इन केन्द्रों के माध्यम से चलीं। यथा अभिभावक सम्पर्क, मातृ सम्मेलन, नशा मुक्ति, साफ-सफाई आदि।

जुलाई 2019 में पाँच नए केन्द्रों का संचालन हुआ।

- भेंड़ा
- टिकरिया
- मनगवां
- झरी
- रानीपुर भट्ट

रानीपुर भट्ट केन्द्र मात्र 2 माह जुलाई, अगस्त ही चल सका। दुखद प्रसंग के कारण केन्द्र को बंद करना पड़ा। सितम्बर माह में मात्र 9 केन्द्र चले। अक्टूबर 2019 से 10वां केन्द्र गोपीपुर गाँव की आदिवासी बस्ती में संचालित किया गया। अक्टूबर 2019 में सभी 10 केन्द्र संचालित रहे। 5 नए-टिकरिया, मनगवां, झरी केन्द्रों में ही अपना भवन है। भेंड़ा तथा गोपीपुर के पास अपना भवन नहीं है। दूसरे परिवार की भूमि भवन में अपने दोनों केन्द्र चल रहे हैं। पूरे वनवासी इलाके में विद्यालय छोड़ने का प्रतिशत आदिवासी कोलों में चिंता जनक है। अपनी शैक्षणिक कमजोरी के कारण आज इस एक लाख संख्या वाले समाज के युवा-युवती स्नातक, परास्नातक अथवा तकनीकी शिक्षा में यह कहीं भी नहीं है। सरकारी सेवाओं में भी इनका कोई प्रतिशत नहीं है।

इसलिए अपने सभी 10 शिक्षक तथा 1 पर्यवेक्षक, 11 लोगों उन बच्चों को कोचिंग दे रहे हैं, जो दूसरे विद्यालयों में थोड़ा बड़ी कक्षाओं में अध्ययनरत हैं। सितम्बर 2019 में 9 केन्द्र थें, जहाँ 28 बच्चे 1 से 2

घंटे पढ़कर अपनी योग्यता पढ़ा रहे हैं। अक्टूबर में 52 छात्र-छात्राएं और हो गए हैं। कुल 180 बच्चे इस विश्वास से आगे बढ़ रहे हैं कि उनकी अब कोई शिक्षा सम्बन्धी कोई कमी नहीं रहेगी। यह एक पृथक से नवाचार है।

इस अवधि में मानवीय चेतना विकास शिक्षा पर दिनांक 20 से 25 फरवरी तक सघन प्रशिक्षण रानीपुर भट्ट में सम्पन्न हुआ। इस प्रशिक्षण के प्रबंधक श्री संजीव चोपड़ा नई दिल्ली से थे। संजीव चोपड़ा दिल्ली सरकार के शिक्षा विभाग में टीचर्स हैण्ड बुक फॉर हैप्पीनेस कॉल फॉर ह्यूमन वैल्यूज एंड ट्रांसफॉर्मेटिव फॉर लर्निंग के सदस्य भी हैं।

इसी प्रकार दूसरा प्रशिक्षण दिल्ली सरकार के विद्यालय में प्रेरक शिक्षक श्री मंजीत राणा तथा प्रदीप जी थे। अपने सभी विद्यालयों में हैप्पीनेस पुस्तिका के आधार पर अपने सभी शिक्षक व्यवहार करते हैं। हैप्पीनेस पुस्तक आपके अवलोकनार्थ पृथक से समर्पित है। प्रति माह मासिक बैठक होती है तथा उसकी कार्यवाही भी लिखी जाती है। बैठक में प्रतिमाह समीक्षा तथा अगले माह की कार्ययोजना भी बनती है। एक पर्यवेक्षक निरन्तर विद्यालयों में जाता रहता है तथा सभी जानकारियों का लेंन-देंन होता रहता है। सभी बड़े पर्व विद्यालयों में ही मनाते हैं। बच्चों के साथ-साथ अभिभावक महिला-पुरुष भी शामिल होते हैं। वन विहार शैक्षणिक भ्रमण- प्रतिमाह नवाचार का भी प्रयास शिक्षक करते हैं। यथा बच्चों को लेकर किसी सुरम्य स्थान पर जाना, वहाँ घूमना, चर्चा करना, प्रकृति से परिचय कराना आदि। झरी तथा मोटवन के बच्चों ने सितम्बर में वन विहार किया है।

## शैक्षणिक सामग्री

प्रतिमाह मांग के आधार पर शैक्षणिक सामग्री दी जाती है। यथा स्लेट, चार्ट पुस्तकें, रंग, कागज आदि। नए केन्द्रों को मेज, कुर्सी, टाट, पानी कंटेनर सभी को दिए गए हैं।

## आलोक -

सभी केन्द्रों में दी गई सामग्री विवरण इस प्रकार है -

- फाइवर कुर्सी
- मेज
- चटाई/टाट
- स्लेट
- शिक्षण चार्ट
- ब्लैक बोर्ड

- बक्शा
- वाटर कन्टेनर
- गिलास
- बाल्टी
- नये सेंटर हेतु नेम बोर्ड
- कंघी
- शीशा
- नेलकटर
- रजिस्टर
- उपस्थित रजिस्टर
- जम्पिंग रोप
- फुटबॉल

केन्द्रों में बस्ता, जूता, मोजा स्वेटर आदि का वितरण वातावरण में एक नए उत्साह प्रेरणा का सृजन कर रहा है। इस सहयोग के प्रति भी अभिभावकों के मन में प्रसन्नता है। उपमा के प्रति मौन-मूक आभार भी उनके मन में हैं। अभिव्यक्ति के लिए आदिवासियों के पास भाव का अभाव नहीं है, किन्तु भाषा नहीं है।

# सप्तम अध्याय

## निष्कर्ष एवं सुझाव

7.1 निष्कर्ष

7.2 शैक्षिक उपादेयता

7.3 सुझाव

7.4 भावी शोध हेतु सुझाव

# सप्तम अध्याय: निष्कर्ष एवं सुझाव

## 7.1 निष्कर्ष

अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान का शैक्षिक योगदान का विस्तृत अध्ययन करने के बाद शैक्षिक महत्व को, और उसके प्रभाव को समझते हुए शिक्षा को सर्वत्र बनाना मुख्य उद्देश्य है। संस्थान के निष्कर्ष निम्नलिखित हैं-

- गोपाल भाई की दृष्टि में शिक्षा जीवन व्यापी प्रक्रिया है। इसका उद्गम मानव के भीतर से होता है। शिक्षा विकास की आधारशिला है। अनुभव स्वतंत्र क्रिया में निहित है। मार्ग के अवरोधों को दूर करने तथा मानव के सम्मुख अपने जीवन लक्ष्य को सिद्ध करने की अनुकूलता जुटाना ही सच्ची शिक्षा है।

- गोपाल भाई का मत है कि शिक्षा का केंद्र बिन्दु बालक है। शिक्षा के द्वारा उसके वांछित विकास के अनुकूल परिस्थिति या वातावरण उत्पन्न किया जाना चाहिए। बालक की शारीरिक मानसिक व हार्दिक इन तीनों वृत्तियों का सृजनात्मक पोषण ही शिक्षा का कार्य है।
- गोपाल भाई शिक्षा को व्यक्तिगत व सामाजिक दोनों प्रकार के उद्देश्यों के लिए महत्वपूर्ण मानते हैं और उनके मध्य सुंदर समन्वय स्थापित करते हैं।

उनके अनुसार शिक्षा के उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

- स्वास्थ्य शिक्षा
- आध्यात्मिक शिक्षा
- चारित्रिक शिक्षा
- स्वतंत्र बुद्धि व स्वावलंब का विकास
- व्यवसायिक दक्षता का विकास
- आत्मा अभिव्यक्ति शांति वा बंधुत्व का विकास
- क्षमता व समानता सृजनात्मक क्षमता का विकास
- आत्मनिर्भरता का विकास
- निर्भयता का विकास
- वैज्ञानिक बुद्धि का विकास
- धार्मिकता का विकास
- नैतिक विकास
- उत्तर प्रदेश में जन जाति श्रेणी से वंचित समूहों प्रमुख रूप से कोलों को जनजाति का दर्जा दिलाना उन्हें एक मंच पर लाना उनकी दक्षता बढ़ाना।

वनवासी आदिवासियों कोलो यदि को संस्थान अपना अंग समझता है तो उनके लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का ईमानदारी से प्रयास करना होगा।

- विद्यालयों का मूल्यांकन करने वाली शिक्षा विभाग में व्यवस्था ठीक नहीं है। आश्रम पद्धति विद्यालयओं को और अधिक प्रमाणिक सक्षम बनाना होगा। उच्च शिक्षा के लिए पृथक से व्यवस्था करनी पड़ेगी ताकि जो इण्टर कर लिए हैं, वह सुगमता के साथ आगे बढ़ सके।
- बालिका शिक्षा के लिए वनवासी बालिकाओं को आवासीय सुविधा देकर उच्च शिक्षा से जुड़ना होगा।
- उच्च वर्गीय स्थानीय शिक्षक इस समुदाय के शिक्षा के लिए ज्यादा रुचि नहीं रखते। प्रोत्साहन प्रेरणा के अभाव में वनवासी बच्चे शिक्षा से दूर भाग रहे हैं। जब तक शिक्षकों का भाव विचार इस समुदाय के लिए संवेदना युक्त नहीं होगा, तब तक उनका आगे बढ़ पाना सम्भव नहीं होगा। इसलिए योग्य शिक्षकों की नियुक्ति उनके कार्य व्यवहार पर निगरानी की प्रथम आवश्यकता है।
- प्राथमिक शिक्षा में व्याप्त भ्रष्टाचार इन परिस्थितियों के लिए जिम्मेदार है।
- संस्थान का विचार है कि जब तक मानवीय चेतना से सम्पन्न मानव मूल्यों के लिए समर्पित ज्ञान का निर्माण नहीं होगा, तब तक किसी प्रकार का कोई सुखद समाधान नहीं मिलेगा। इसलिए शिक्षा में छात्रों को ऐसे संस्कार मिलना चाहिए, कि वह अपने कार्य व्यवहार में पदार्थ, प्राण, जीव-जन्तु तथा मानव के साथ परस्पर पूरकता का भाव लेकर जी सके।
- वर्तमान शिक्षा कौशल घटनाओं की खोज तैयार कर रही है। अब तक की शिक्षा ने भ्रष्टाचार, अनाचार, अत्याचार अन्य विसंगतियों को कम करने में सफल सिद्ध नहीं हुई है।

## 7.3 अध्ययन के सुझाव

- संस्थान द्वारा समाज के दबे कुचले लोगों को मुख्यधारा में लाने का कार्य किया जा रहा है, एवं वंचित वर्ग को शिक्षा से जोड़ा जा रहा है।
- सरकारी नीतियों का लाभ सही रूप से आदिवासियों तक नहीं पहुँचा पाता, इसलिए संस्था द्वारा यह कार्य किया जा रहा है।
- भारत सरकार द्वारा संचालित सर्व शिक्षा अभियान की सहभागिता निभा रहा है।
- संस्थान द्वारा संस्कारों, परम्पराओं की आस्था जगाने जैसे कार्य क्रियान्वयन हो रहे हैं।
- निर्धनता के विरुद्ध विभिन्न अभियानों का संचालन, क्रियान्वयन, प्रमुख रूप से प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन। शून्य लागत विषमुक्त उत्पादन को बढ़ावा दिया जा रहा है।

## 7.4 भावी अध्ययन हेतु सुझाव

- अन्य स्वयंसेवी संगठनों के साथ अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान के शैक्षिक योगदानों का तुलनात्मक अध्ययन
- परम्परागत शिक्षा एवं आधुनिक शिक्षा का तुलनात्मक अध्ययन
- वनवासी आदिवासी समुदायों की समस्याओं का अध्ययन
- आदिवासियों के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक एवं शैक्षिक जागरूकता का अध्ययन
- गैर सरकारी संगठनों, की संरचना कार्यप्रणाली एवं विकास में भूमिका

# सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


- सिंह, नीलम(1999)। **भारत में मिशनरी शिक्षा योगदान तथा वर्तमान समय में उपादेयता।** पीएच0डी-शिक्षाशास्त्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी।<15303>

- गुप्ता,सत्येंद्र (2005)। **बुन्देलखण्ड उत्तर प्रदेश क्षेत्र में सरस्वती विद्या मंदिर संस्थाओं के शैक्षिक योगदान का अध्ययन।** पीएच0डी- शिक्षाशास्त्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। <15595>

- शर्मा, डॉ० शशीकांत (2007)। **गिजुभाई बधेका का शैक्षिक चिंतन एवं आधुनिक भारतीय शिक्षा परिषद में इसकी प्रासंगिकता।**

- सिंह, रेनू (2008)। **भारत में छत्रपति शाहूजी महाराज का शैक्षणिक योगदान विशेष रुप से दलितों के शैक्षणिक उत्थान में।** पीएच0डी- शिक्षाशास्त्र, बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। <12262>

- त्रिपाठी, आशुतोष (2014)। **पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य के आध्यात्मिक अध्यात्मवाद का व्यवहारिक दृष्टिकोण से शिक्षा और समाज निर्माण में योगदान एवं समीक्षात्मक अध्ययन।** पीएच0डी, शिक्षाशास्त्र- बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय, झाँसी। < 125812>

- मदान, पूनम एवं पाण्डेय, रामशकल(2016-17)। **शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय आधार।** आगरा: अग्रवाल पब्लिकेशन।

- **अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान की संस्थागत नीतियाँ।** संशोधित नियमावली दिनांक (20/09/2020)। अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान:रानीपुर भट्ट, पोस्ट-सीतापुर, जिला चित्रकूट(उत्तर प्रदेश)

- संस्थान से सम्बन्धित वेवसाइट

  http://www.absss.in/

## परिशिष्ट (क) संस्थान मैप चित्रकूट




## परिशिष्ट (ख) जीवन वृत्त

### जीवन वृत्त



| | | |
|---|---|---|
| नाम | – | राजू सिंह |
| पिता का नाम | – | श्री मैकेलाल सिंह |
| माता का नाम | – | श्रीमती रामदुलारी |
| जन्म तिथि | – | छ: जून सन् उन्नीस सौ इक्यानबे (06 / 06 / 1991) |
| स्थाई पता | – | ग्राम–दरियावपुर, पोस्ट–बसिला, जिला–चित्रकूट (उ0प्र0) 210205 |
| मोबाइल न0 | – | 6394335742. |
| ईमेल | – | rajulalsingh0606@gmail.com |

**शैक्षिक योग्यता** – M.A.Geography 1st Division.

| कक्षा | उत्तीर्ण सन् | श्रेणी | बोर्ड / विश्वविद्यालय | विषय |
|---|---|---|---|---|
| हाईस्कूल | 2007 | द्वितीय | यू0पी0बोर्ड | हिन्दी, इंग्लिश, गणित, विज्ञान, सा0 विज्ञान, कला |
| इण्टरमीडिएट | 2009 | प्रथम | यू0पी0बोर्ड | हिन्दी, संस्कृत, नागरिक शास्त्र, भूगोल, अर्थशास्त्र |
| स्नातक | 2012 | प्रथम | बु0 विश्वविद्यालय | हिन्दी, राजनीति शास्त्र, प्रतिरक्षा अध्ययन भूगोल |
| परा स्नातक | 2014 | प्रथम | बु0 विश्वविद्यालय | भूगोल |
| शिक्षा स्नातक | 2017 | प्रथम | बु0 विश्वविद्यालय | शिक्षण विषय सामाजिक विज्ञान शिक्षण हिन्दी शिक्षण |

हस्ताक्षर

# अखिल भारतीय समाज सेवा संस्थान का शैक्षिक योगदान



"हर कोई महान बन सकता है
क्योंकि हर कोई सेवा कर सकता
है।"

**मार्टिन लूथर किंग जूनियर**






ISBN9789359121246